

A. or. 2810

A. or. 2810

Lalla Lal. Kab.

ENCYCLOPEDIA HINDOOSTANICA
OF WIT.

CONTAINING A CHOICE COLLECTION OF

DEMILOGIC DISTICS,

IN THE

PERSIAN AND NAHRE CHARACTERS

INTERMIXED WITH

Appropriate Proverbs, Anti-dilemmas, Jests, Brill-

iant Sea Songs, and Ralpying Repartees,

In the Rekhta & Brij Bhasha Dialects,

IN FINE PRINT,

A VOCABULARY

OF THE PRINCIPAL WORDS

IN HINDOOSTANIC AND ENGLISH.

BY

By SHREE LULLOO LAL KUB

B. A. M. A. M. A. in the College of

Fort William.

Calcutta

PRINTED AT THE HINDOOSTANIC PRESS,

1851.

Lalla Lal

of the

of the

of the

29 5

A. or S. 10

John H. K. K.

لطائف ہندی

OR,

THE NEW
CYCLOPÆDIA HINDOOSTANICA
OF WIT;

CONTAINING A CHOICE COLLECTION OF
Humorous Stories,

IN THE

PERSIAN AND NAGREE CHARACTERS;

INTERSPERSED WITH

*Appropriate Proverbs, Anti-bilious Jests, Bril-
liant Bon Mots, and Rallying Repartees,
in the Rekhtu & Brij B,hasha Dialects.*

TO WHICH IS ADDED,

A VOCABULARY
OF THE PRINCIPAL WORDS,
IN HINDOOSTANEE AND ENGLISH.

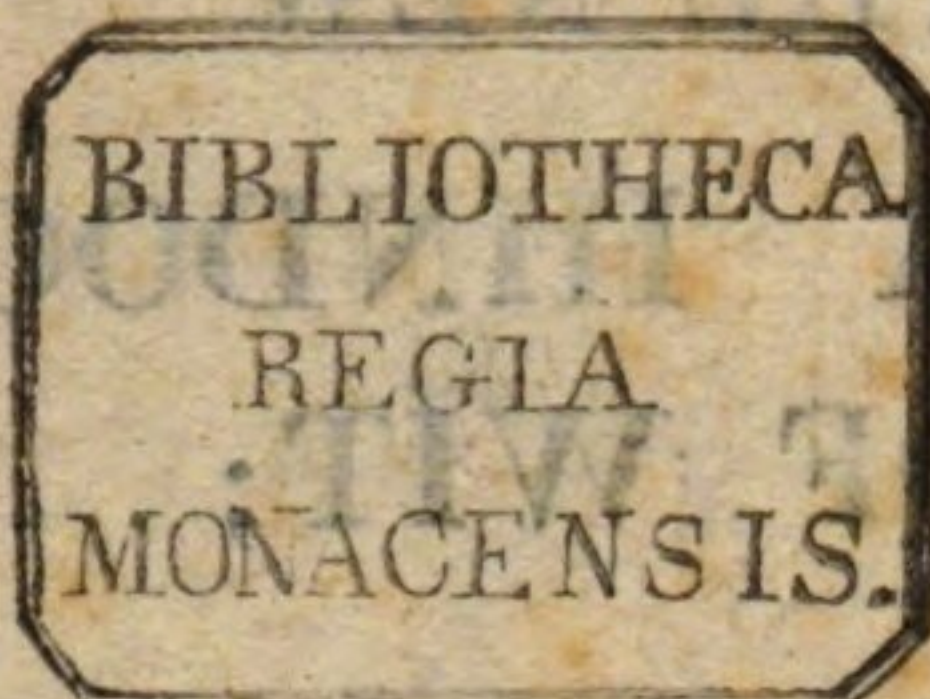
By SHREE LULLOO LAL KUR,
*B,hasha Moonshee in the College of
Fort William.*

Calcutta:

PRINTED AT THE INDIA GAZETTE PRESS.
1810.

Lallu Lal
New cyclop.
hindostan.
of Wit

39 5



CYCLOPEDIA OF THE NEW

CONTAINING A CHOICE COLLECTION OF

ILLUSTRATIONS

IN THE

THESEAN AND MAGNEE CHARACTERS

INTERPRETED WITH

Appropriate Figures, Abbreviations, &c.
from the Manuscripts, and Original Reports
in the British & Foreign Bibles

TO WHICH IS ADDED

A VOCABULARY

OF THE PRINCIPAL WORDS
IN HINDOSTANEE AND ENGLISH

BY SWAREE LULLOO LAL KUR

Bhasha Moones in the College of
Fort William.

Calcutta:

Printed at the India Office Press
1831

ADVERTISEMENT.

TWO Volumes of stories were published some years ago, by Mr. GILCHRIST, on a plan nearly similar to the present, and it was the Author's intention, from the acknowledged utility of such a work, to continue the collection in regular succession, "till the subject should be fairly exhausted."

To exhaust the colloquial pleasantries of the facetious* *Puwarniye* of Hindoostan, the various amusing stories, anecdotes, and petty fictions embodied in the legendary narratives of a people so prone to fable and imaginary adventures as the Asiatics, would be a task of perhaps greater labour than utility, and would occupy a greater number of volumes than the generality of Hindoostanee Students might feel inclined to admit into their Libraries.

It was thought however, that a judicious selection might be useful. The present work contains one hundred chosen stories in the Persian and Nagree characters, in an easy and familiar style of classical Hindoostanee; expressly designed for the use of beginners, as well as those who may be desirous of acquiring a practical and idiomatic knowledge of this difficult, but useful tongue. An Index containing the principal words, is added, arranged after the order of the stories and accompanied by an English Translation: a plan which to mere probationers in the language must be

**Story-Tellers.*

found of considerable importance, and may be useful to all, by saving much of that time which would otherwise be lost in turning over the leaves of a voluminous Dictionary.

Should the *CYCLOPÆDIA HINDOOSTANICA* be found to contain any wit of a nature too exquisite and subtle to be immediately relished by European taste, it should not perhaps be imputed to the want of genuine humour in the materials, but rather to the pampered and vitiated state of our own organs of sensibility, which finding no relish in the delicacy of unadulterated simplicity, can only be gratified by high seasoned jests and artful drollery.

An Epicure in Wit is not less fastidious than an Epicure in Diet.—There are *Gourmands* of Puns, as well as Pudding. The former despises all jokes not seasoned *à la Jo*. The latter every thing not *culinized à la Française*; and as there are some men who losing all true relish for simple Delicacies, prefer the effluvia of assafoetida to the Ottar of Roses, and would rather chew Tobacco, than suck Sugar-Candy; so, I should not be surprized to hear of others of a taste equally unaccountable, who may extol the wit of Rabelais and Sterne, and sneer at the humour in the *CYCLOPÆDIA HINDOOSTANICA*!

De gustibus non disputandum.—That is, buy the Book and judge for yourself. The price is only 14 Rupees; and who would refuse such a trifle, to become a Wit, and a Linguist?



श्री गणेशाय नमः

नका १

एक साहूकार पोतड़ों का गज्जा ब्रह्माने क पेय
पाय में आ अपनी दौलत सब जो बैठा और लगा
निपट दुख पाने और फाँके कड़ाके जैयने निदान
उसके जीमें यह जियाल गुलना कि जो मैं कि
सी महापुरुष या सिद्ध के पास जाऊँ तो यह दुख
मिटे - क्यूँकि सुना है साध के दर्शन से बाध जा
ती है ॥ इतना बियात्र यला यला एक जोगी के
पास गया - यह उस से कुछ न कहने पाया कि
उसने अपने जोग से इसका मतलब दर्शा फुकर
के कहा ॥

(२)

सुख दुख प्रतिदिन संग हैं भेटसके नहि कौयः॥
जैसे छाया देह की न्यायी नेक न होयः॥
यिह मन्त्रकूल जवाब पा वुह बियाना सुवन कन
अपने घर आया

नक्र २

एक अंधा बैरागी काशी के बीय मनकरनिका घाट
पर बैठा गहन में दही पेड़े प्याता था कि देख
कर किसी पंडित ने पूछा खूनदास जी यिह क्या
करते हो * बोला महाराज दही पेड़े प्याता हूं -
कहा गहन में * जवाब दिया बाबा मेरे गुनू की
दया से सदाही गहन है * यिह सुन पंडित हंस
कर मुप होनहा

नक्र ३

कोई राजपूत बहुत अफीम प्याता था इतिफाकन
उसे सफर दरपेश हुआ और किसी मननिब में
आकर उतरा वहां के लोगोंने आकर इससे कहा
कि ठाकुरसाहिब यहां आती बहुत होती है आप

(३)

आकसी से नहियेगा : यह बात सुनकर नात
तो उसने जागकर काटी पर यह बात जीमें रखी
कि येनी बहुत होती है : फजन होते ही घोड़े
की पीठ लगा - एक शहर के बीच मला जाता था
कि एकाएकी पीनक से आंककर पुकारा अने मम
येना अने ममयेना घोड़ा कहा - वह बोला महा
राज - घोड़े पै तो बैठे ही जाते हो और घोड़ा
कैसा : कहा बेटा इस बात का कुछ मुजायक : नहीं
लेकिन हुशयान नहना प्यूर है

नका ४

एक बनियां कहीं गया था दो तीन दिन बन्द
वहां से आया तो उसने अपने घर का दरवाजा
बंद पाया : पुकारा कि बाड़ा जालियो - भीतर से
उस की जानू ने जबाब दिया कि जालू हूं बाबा -
इस ने सुनकर कहा ऐ गांड क्या बकती है - वह
बोली मेरी चांय टुपे है - कहा चांय की तो सम
है मैया

नका ५

पठानों की किसी बस्ती में एक मुल्ला था - जो कुछ फ़ातिहः दख्ख का उन्ह के काम होता उस को बुला लेते और अपना काम करवा लेते * इस में शबिबनात जो भाई तो हर एक के घर से उसे बुलाहट झूई तब उस के किसी आशना ने पूछा कि कहो दोस्त - आज तुम अकेले क्या करोगे और किस तरह घर घर फ़ातिहः पढ़ोगे * बोला भाई मुझे फ़ातिहः पढ़ने से क्या काम मुनदः देलज्जा जाय या बिहिश्त मुझे अपने हलुवे माड़े से काम है

नका ६

किसी ने एक ज्ञानी से पूछा कि महाराज - आदमी जग में पैदा हो कर दुज्ज से कौंकर छूटे हो दया कर मुह से कहो - तब उसने इस को जवाब तो न दिया पर यह देहा पढ़ा

भुगतमान भुगते बने ज्ञानी मूज्ज देय
ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूज्ज भुगते नेय

(५)

नक्का ७

दो कलावंत दक्षिन से कमाई किये दिल्ली कोयले
आते थे - कि त्राह में दौड़ों ने आय लिया और
लगेबत्र छियां भाले उठाय उठाय मात्र मात्र डाल
डाल पुकारनेः उस वक्त ये दोनों भी हट गाड़ी
से उतर पट पतल के टट्टू पर जा बैठे और लगे
उन से पूछने कि बलैयालों मात्र मात्र डाग डाग
ही कत्र जान्यो है कै कभू यो पड़हू जेले हैः उन
में से एक बोला कि क्यों - इन्हों ने कहा कि कंहू
जुग हू मासो जातु हैः इसलती फे से वे बहुत जुश
हूरे और इन्हें न लूट हंस कत्र जले गये

नक्का ८

किसी ठाकुर दाने में कई एक अनाई यैन से बैठे
गाय रहे थे और बहुत से लोग जड़े सुन्ने थेः
इसमें एक ठीठ बैरागी आया और उन के हाथ
से तंबूना ले सब के बीच में बैठ लगा वे सुना हो
गानेः उसका जटाराग सुन सब उदास हूरे पर

(६)

कोई कुछ नबोलाः निदान एक यौवे पड़ा सुनता
था- उस ने कहा बाबाजू बस करो बस करो
बहुत गाये- बैरागीने प्यजला क जवाब दिया महा
नाज - मैं तो अपने ठाकुर को जिहाना हूं चौर
कोई गीहा तो क्या चौर नगीहा तो क्या यौवे बो
ला सारे मेकौं तो जिहायही नसकौ कहा ठाकुर
मेहू से कूछ है जो तू जिहाय लेगौ ॥ यह सुन
बुह शरमन्दः हो गुपयाप उठ कर अलागया

नक ९

कई एक अमीरनादे किसी जगह एक मेयगाड़
उसपर गुपया नय तीरंदाजी कर तेथे चौरशत
यिह थी कि जो इस गुपये को उड़ावे सो ले ॥
इतिफाकिन किसी आलाद ने जा वहीं उन से
सुवाल किया कि बाबा कुछ मौला नाम का सौदा
करो उन में से एक नेहंसकर कहा शाह साहिब
निशानः मानो चौर गुपया लो ॥ फकीरने हठ
उसके हाथसे तीर कमान ले यामअबूद करके एक

(७)

तीन चटकलपय्यू मात्रा किबुह रुपया उड़ गयाः
वे बोले बाहवा- इन ने दौड़ के रुपया तो उठा
लिया चैन कहा कौं बाबा फकीर को कुछ जबाब
न मिला - उन में से एक ने कहा सांई रुपया तो
लिया अब क्या कहते हो * बोला बाबा यह तो
मेज्मान के लिया है अभी फकीर का सुवाल
बाकी है

न० १०

एक बाइज़ किसी गांव में कितने एक आदमियों
को बचड़ा करता था - इस में कोई गंवान भी वहां
आवैठा चैन लगा उस का मुंह देखदेख बेकान
हो तो ने * इस को नेता देख सब ने जाना कि
यह कोई बड़ा मोमदिल है जो इतना नेता है -
एक ने इस से पूछा कि भाई सय्य कह तू जो
इतना प्राता है तेरे दिल में क्या आया है * बाइज़
को उंगली से बता बोला कि इन मियां को डाढ़ी
हिमती देख मुझे चपना मुचा हुआ प्यातावकना

(८)

याद आया कि जब न तब उसकी भी इसी तरह
डाढ़ी हिलती थी - इस लिये मैं जाता हूँ यह
सुन सब जिल जिला उठे और बाइज़ शत्रुमंदः
हो दमजानहा

नका ११

कोई बड़ा दौलतमंद था पर उस के फ़नद न
था उस ने लड़के की ज़ातिन बहुतेने तरहुद किये
और रुपये ज़रमे लेकिन न हुआ - तब उस ने
हानमान एक ग़रीब के लड़केको गोद लिया और
अपने माल चमवाल का मालिक किया * कितने
एक दिन बरद वह मरगया - यह उस मालको
पातेही लगा अंधाधुंध लुटाने और कुमाल चलने-
इस की यह माल देय किसी ने एक से पूछा कि
इस का क्या सबब जो यह दौलत पातेही बुकला
या * उस ने इस के जवाब में यह देहा पढ़ सु
नाया

कनक कनकत सौगुनी मादिकता अधिकाय

(९)

वुह ज्यारे बैनात है यह पाये बैनाय

नक़ १२

मथुरा के मौबे बड़े ठठे बाल होते हैं - एक दिन

कोई मौबे बालाग से मानू बैगन ज़रीद लाया ॥

देखकर उस की जानू ने पूछा कहा भगता कनू -

यिह बेला मेतें कहा मूक पनी - उस ने जवाब दि

या लोग तुम्हें जोयसी कहत हैं ॥ यह सुन मौबे

लाजवाब हुआ

नक़ १३

लाड कपूर नाम दो कलावन्त अकबर के यहां थे -

अकबर बादशाह उन से युहल करते - इस से

वे भी गुस्ताख होत रहे थे ॥ एक दिन बादशाह ने

उनमें से किसी को कहा गाओ - वुह बेला नहीं

जहांपनाह बैल - फिर हज़रत ने फ़रमाया अबे

कुछ बैल - जवाब दिया माल बीस रुपये - फिर

शाह ने कहा क्या हज़राम बादः है - उस ने कहा

हज़राम बादः हो तो कौड़ी नलू ॥ इतनी बात के

(१०)

सुने ही बादशाह ने जफा हो कर उन्हें कहा कि मेरे मुल्क में रहे तो बेतनह पेश आऊंगा और कलरे से निकलवा दिया : ये माने उन के दिन को तो दुकोसी मीकोसी शहर के बाहर गाँवों में निकल जाते और रात को आते - इसी भाँति नित शाम को आवते और दो घड़ी के तड़के यले जाते इतिफाकन एक गेब ये इधर से जाते थे और उधर से शिकार किये बादशाह छोड़े पर सुबान यले आते थे : ये दूर से देखते ही एक ऊँचे बड़ के दरवाज़े पर जायें और वहाँ ने भी छोड़ा मान विसी पेड़ के नीचे ला जड़ा किया और इन्हें पहचान कर कहा - क्यों वे मैं ने जो तुम से कहा था कि मेरे मुल्क में न रहना - जवाब दिया कि बलै या लैउं - हम सब मुलकन में फिर आये जहाँ देख्यो तहाँ आपही का मुल्क देख्यो - यार्तें हान मान अब आसमान की तरह लई है : इस लती फे से पुश हो बादशाह ने उन की तकसीर सु

(११)

आफ़ की चैन नौकरी बहाल

नका १४

किसी कुंजड़न के मालीस बरस की उमर में बड़ी
आनलू करते करते एक बेटी हुई - उन ने मि
पट लाड़ प्यार से उस का नाम फ़ज़ीहती रखा :
कज़ाक़ान वह दो तीन बरस की होकर मरगई
उस के ग़म से वह नित शाम सुबह नाम ले लेती
याक़ने - एक दिन सो हाय मेरी फ़ज़ीहती हाय
मेरी फ़ज़ीहती कर के नोचही थी - कि इस में
उस का ज़ाविन्द चाया चैन समझाने लगा कि
सुन नेकबज़ हमारी तुम्हारी हयात बाकी चैनपु
दा का फ़ज़ल माहिये तू एक फ़ज़ीहती को क्या ने
ती है बहुतेरी फ़ज़ीहती हो रहेगी

नका १५

एक कायथ कमरुबान घेड़े पर बैठा बालान में य
ला जाता था - किसी शाहसवान ने उसे मेंडकी से
भी पीछे हटा बैठा देय के कहा कि भैया जी नज़ा

(१२)

आगे हट बैठो * बोला कैा - कहा आसन पाली
है - फिर उस ने जवाब दिया - क्या तुम्हारे
कहे से हट बैठेंगे जैसे साईस ने बैठा दिया है
तैसे बैठे अलेजाते हैं

नका १६

एक बनियां जो बड़ लाता सो नित का नित गरीब
भूये प्यासों को बांट देता और आप निहंग लाड़
ला हो रहता * एक दिन उस के बड़े भाई ने
पांय आन पडौसियों को बिठाय उससे कहा कि
भाई जी हम महाजन हैं - हमें पूंजी तय बोहान
किया चाहिये - इस तरह बैठान ठिकाने दिया
करें तो हमानी महाजनी कौंकन रहे * जवाब दि
या भाई साहिब क्या तुम ने यह दोहा भी नहीं
सुना जो ऐसी बात कहते हो

सब से दिया अनूप है दिया कना सब कोय
घर में धनान पाइये जोकर दिया न होय

(१३)

नका १७

कोई गुस्सा:वन चंघा कहीं को गला जाता था कि
एक चंघे कुरे में गिरपड़ा चैन लगा पुकार ने कि
अलियो दौड़ियो लोगो मैं कुरे में गिरपड़ा * लोग
महमया दौड़के वहां गये चैन कुरे के मन
घटे पत्र पडे हो उस के निकालने का तनहुद
करने लगे - कुछ देन जो हूई तो वह भीतर से प
फा हो बोला कि जल्दी निकालते हो तो निकालो
नहीं तो मैं किधरही को गला जाता हूं मुझे
फिर न पाओगे

नका १८

किसी बड़े आदमी के पास एक पुश मसज्जा आ
बैठा था चैन इन के यहां कहीं से गुड़ आया -
उस ने ज़नाफत से कहा कि जुदावन्द मैं ने उमर
भर में तीन दफ़्तः गुड़ प्याया है * बोला बयान
कर - कहा एक तो छठी के दिन जनम घूटी में
प्याया था चैन एक कान छिदाये थे तब चैन एक

(१४)

आज आऊंगा : उन्ने कहा जो मैं न दूँ - बाला
देही दफ़्तर : आया सही

नक्का १९

पांय यात्र पोस्ती किसी मकान पर बैठे नटलमान
ते थे - कि उन में से एक का प्याल : जो मलकर
तैयार हुआ - बोला पोस्ती ने पिया पोस्त नौ दिन
यला अछाई कोस : यह सुन कोई दूसरा बाल
उठा कि वह पोस्ती न होगा कोई कासिद होगा -
पोस्ती ने पिया पोस्त तो कूँडे के इस पात्र या
उस पात्र और जो बीय में जगह पावे तो वही
मकाम करे

नक्का २०

दो आशना मिलकर सैन को निकले और यले य
ले दनया कनाने पर पहुंचे - तब एक ने दूसरे से
कहा कि भाई तुम यहां पड़े हो तो मैं जलदी से
एक गोतः लगा लूँ : इस ने कहा बहुत बिहतर यह
सुन वह बीस रुपये इसे सुपुर्द कर कपड़े किनारे

(१५)

पत्र तब जो पानी में पैठा तो इस ने गालाकी से
वे रुपये किसी के हाथ अपने घर भेज दिये :
उस ने निकल कपड़े पहन रुपये मांगे - यह बो
ला हिस्सा सुन लो - उस ने कहा अभी देते देन भी
महीं हूँ हिस्सा कैसा : ग़ज़ देनों से तक़्क़ान
होने लगी चौर सौ पचास आदमी घिर आए -
उन में से एक ने रुपयेवाले से कहा कि मियां
क्यों हगड़ता है हिस्सा किस लिये नहीं सुन लेता :
हात मान उस ने कहा अच्छा कह-बुह बोला
जिस वक्त आप ने ग़ातः माना मैं ने जाना डूब गये
पांच रुपये दे तुम्हारे घर जब भेजी चौर निक
ले तब भी चौर पांच रुपये ज़ुशी की ज़ेनात में दि
ये - तब पांच से मैं ने अपने घर भेजे हैं बिन
काकुछ अन्देशः होता मुह से तमसुक लिखवा ला :
यह धांधल पने की बात सुन बुह बियात्रा बो
ला भला साहिब भन पाए

(१६)

नक्र २१

दो कायथ अक्रमन्द लिपे पढ़े किसी मकान पर बैठे
बहसते थे - एक कहता था कि आदमी उत्तम व
जन में पैदा होने से पंडित बनता है और दूस
रा कहता था कि अच्छी संगत से : उन का बहस
ना देख किसी मन्दे आदमी ने कहा कि इस ब
हस ने से तो तुम्हारा कज़िय न मिटेगा - बिहतर
है कि इस मुआमले में किसी को मुनसिफ़ मानो
यिह बात उन दोनों को पसन्द आई और सूत्र
दास जी के पास जाकर हर एक ने अपना दज़
वा इज़हार किया : सुनेही सूत्रदास ने उन के
जवाब में यह देखा पढ़ा

स्वात बूढ़ सीपी मुकत कदली भयो कपूर
कारे के मुज बिघ भयो संगत सोभा सूत्र

नक्र २२

कोई पोखरी जंगल में बैठा प्याले में पोस्त घोल
हा था - इतिफाकन किसी हाड़ हूड़ से एक ज़र

(१७)

गौश जो निकल दौड़ा तो उसके धके से इसका प्या
ला लुढ़क पड़ा ॥ यह ज़फ़ा हो बोला कि तुह से
क्या कहें भला तेरे मुनबी ही से जाकर कहेंगे - इ
तना कह कूंडी सोंटा बग़ल में दबा शहर में जा
हर एक प्यापायेको देखता यला - निदान एक गधे
को जो उस के तंग से मुशबः पाया तो गधेवाले से
जाकर कहा कि तेरे इस जानवर के बेटे ने मेरा
पोस का प्याला भगा हुआ लुढ़ा दिया ॥ उसने क
हा कि जिस के बेटे ने लुढ़ाया है विसी से जाके क
हो - यह सुन वह गधे के पास जा उसकी पीठ
पर हाथ रख माहे कि कुछ कहे वहाँ उसने फि
रकर एक ऐसी दुलसी मारी कि यह बियारा
आह कर बैठ गया और हंस कर बोला कि क्यों न
हो जिस का मुनबी ऐसा हो विस का लड़का वैसा
हुआ ही माहे - इतना कह यला आया

नज़्म २३

एक बादशाह ने किसी से कहीं यह बात सुनी थी

(१८)

कि पूरव के लोग बड़े बड़ लिहाज़ आ बेतमीज़ हो
तेहैं ॥ इस बात के इमतिहान करने को बादशाह
ने यात्र तज़फ़ से यात्र तंडियां मंगवा तत्रबीयत
करवा अपनी ज़िदमत में तर्ज़ी - कई बरस के ब
अद ऐक दिन बादशाह महल सत्रा में सत्रिशाम
स बैठे नाय देयते थे और यात्र घड़ी त्रात पिछ
ली बाकी तहगर्द थी - उस वक्त शाह ने वुह बात
याद कर के पहले पच्छम वाली तंडी से पूछा कि
त्रात कितनी होगी ॥ वुह बोली जहां पनाह त्रा
त थोड़ी है - कहा तूने किस तह जाना - अर्ज़ की
कि नथ के मोती ठंडे लगते हैं ॥ फिर दयन वाली
से पूछा किशब कितनी होगी - जबाब दिया कि अ
नक़रीब है कि फ़ज्र हो - फ़रमाया तूने कौंक
त्र दत्रयाफ़ किया - बोली पान सीठा लगता है ॥
बअद उत्तर वाली से पूछा - जो त्रैन किस कदत्र
होगी - कहा निपट थोड़ी है - इतशाद फ़रमाया
तैं ने किस ठब से मअलूम किया - बोली हज़रत

(१७)

सलामत यराग की जोत मंद हूई * पीछे पुत्रव
नी से पूछा कि निस कितिनो नहीं हो गी - ऊतन दि
या निहायत थोड़ी है - बाले तूने कैसे जाना - अ
र्ज की कि जहाँपनाह मुझे पायाने की हाजत हूई
है * इस बात के सुनतेही सब बेगमात और सहे
लियां जिलजिला उठीं - तब शाह ने जफा हो
यिह कह उसे उठवा दिया कि उस शरस ने स
य कहा था उस मुल्क के लोग लाइक बादशाहों की
मजलिस के नहीं

मक़ २४

एक दिन अकबर बादशाह ने बीरबल से कोई
बात कहक उस का जवाब पूछा * बीरबल ने वुह
जवाब दिया कि जो बादशाह के दिल में ठहरा
था - सुन कर शाह ने कहा कि यही बात मेरे भी
जी में आई है * बीरबल बोला कि पीरमुनशिद
यिह वही बात है जो सौ सियाने एक मत - शाह
ने कहा कि यिह मसूल भी तो मशहूर है जो सिन

(२०)

सिंह अक्र गुनगुन बिहू। : फिन्न बीनवल ने अर्ज
की कि जहांपनाह मिलाज में आवे तो इस बात
को आलमा लीजे - फन्नमाया बहुत अच्छा : इत
नी बात के सुनेही बीनवल ने शहर में से सौ अ
कमन्द बुला भेजे और दो पहन गत के वक्त बाद
शाह के हुजूर उन्हें एक पाली होज। बता वक्त क
हा - हुजूर का हुक्म है कि इसी वक्त हर एक आ
दमी एक एक घड़ा दूध का भज कर इस होज में
लाडाले : हुक्म बाद शाही को सुननेही हर एक ने
अपने जी में यह बात समझे कि जहां निन्यानवे
घड़े दूध के होंगे तहां मेरा एक घड़ा पानी का क्या
मजलूम होगा पानीही लाडाला - बीन वल ने शा
ह को दिखाया शाह ने उन सब से कहा - तुम ने
क्या समझ के मेरे हुक्म को न माना सब कहो नहीं
तो वेतन हपेश आऊंगा : विनमें से हर किसी ने हा
थ बांध बांध कर कहा कि जहांपनाह ज्वाह मारि
ये ज्वाह छोड़िये गुलाम के जीमें यह बात आई

(२१)

कि जहाँ निर्यानवे घड़े दूध के होंगे वहाँ ऐक घ
डा पानी का क्या मन्त्रलूम होगा ॥ यह बात सब की
बुबानी सुनकर बादशाह ने बीनवल से कहा जो
कानों सुनत थे सो आँवों देखा - कि सै सियाने
ऐक मत

नका २५

ऐक शय्स बड़ा अफीमी था - उसके यहाँ कोई
पिदमतगान नया नैकर हुआ - उनने उससे पू
छा कि मियां तू कुछ नशः तो नहीं पीता - बोला
पीन मुत्रशिद गुलाम सिबाय अफीम और किसी
नशे से आशना नहीं ॥ यह बात सुन बहुत अश
हो अफीम की डिबिया निकाल उनने आप जा
उसे देखकर कहा - कि मियां आज हमारा जी या
हता है मोठे यांबल जलदी से पका दो तो जाय -
बहुत अब बत्र के पकाने लगा ॥ इसमें पीनक जो
लगी तो दो पहन गुरुगये - आकाने पुकार के कहा
कि अने भाई यांबल पके या नहीं - बोला कि जु

(२२)

दावंद पक युके हैं पत्र दम देना बाकी है - कहा
जल्दी लाओ : किस्मः कोतह ब हज़ान ज़राबी फ़
जन से पकाते पकाते शाम को तैयारकर लेगया - दे
ख कर आका ने कहा शाबाश क्या जल्दी पका ला
या है : इतनी बात के सुनते ही वह हाथ जोड़कर
बोला कि क़िबलः फ़िदवी से आपको नौकरी नही
सुकेगी - कहा क्यों - जवाब दिया ऐसी शिताबी में
एक नौक़ मेरी जान जाती रहेगी और यल्ला गया

नक़्क़ २६

शाहजहाँ बादशाह दाराशिकोह शाहज़ादे को
बहुत चाहते थे-एक नौक़ चंबारीदार हाथी पत्र सु
नान और दाराशिकोह ज़वाही में यलेजाते थे- इ
स में शाहज़ादे ने एक त़रफ़ देखा जो कोई साहू
कार बग़ी सोलह सतरह बनसकी जिसका यांद
सा मुण्डा काजल मिस्री लगाये पान प्याये नयसि
य से सिंगार किये जवानी का मद पिये दो नौ
हाथ किवाड़ के दोनो बाज़ूओं पत्र दिये बेहिजाब

(२३)

जुले बंदों जड़ी देयती है ॥ विसकी बेबाकी देय
शाहनादे ने गीह कन बाप से कहा - जहां पनाह
देयिये यह ज्ञानत किस बेहिजाबी से इधर देय
ती है - शाह ने शहनादे की बदतोनती देय फन
माया बाबा जान बाप भाई के नूबनूहिजाब क्या
याहिये ॥ यह सुन शहनादः शनमा कन युप
हो रहा

नका २७

किसी तीरथ के नदरीक एक मठ में कितने एक
फकीर नामावत नीमावत नानकपंथी दादू पंथी
सन्यासी बैठे आपस में मत का विवाद कन रहे थे
कोई किसी की बात न मानता था अपने अपने पंथ
की योड़ाई बड़ाई कनते थे ॥ निदान हगड़ते हगड़
ते तूँवे जपन फूटने की नौबत पहुँची - इस में
एक अबधूत बाला साधो कौं लड़ मरते हो इस
देहे के अर्थ को तो समझे ॥

घट घट में मूत वही लाल जो नहीं विवेक

(२४)

जैसे फूटी चागसी जंड जंड मुज्य ऐक

नक्क २८

ऐक उमरा बड़ा बणील था कि कभी हूठे हाथ
से कुत्ता भी उसने नमाना था चात्र प्याने पिला
ने का तो क्या कि - ऐक राज कोई कलावंत भूला
भटका उसके यहां जा पहुंचा चात्र उसे बड़ा आ
दमी जान तबूना मिला पूब गाया चात्र उनने भी
गोहकन दाद दी - बाने इतने में बकावल ने आ
अर्ज की कि पु-बन्द प्यासः तैयार है * बोला कि
मेरे सिर में दर्द है अभी रहे ऐक नोंदलेकन
प्याऊंगा - यह बहानः कन मुहळक से रहा चात्र
कलावंत भी उस के मकन करने के मकसद को दर
याफ़ कन पलंग के तले पांयती लोट रहा - पहन
ऐक के बज्रद उमरा ने किसी अपने याकन से
पूछा कि अबे बुह बला गई - इस में कलावंत ने
जवाब दिया कि बलैयालेउं यह बला तो कदमन
लगी है बिन प्याना प्याये कब जाति है * इस लती

(२५)

फे को समझ पुश हो उसने इसे अपने साथ पाना
पिला कुछ दे नुपसुत किया

नका २६

किसी गांव में एक लड़का छदाम की कौड़ी ले भड़
भूजे की दूकान पर यवेना लेने गया - उसने यवे
ना कौड़ीले तोल दिया - इसने यंभे को घपयो में
कर देनेों हाथ बढ़ा लेते तो लिया पर हाथ न
निकाल सका - तब ब्राने लगा - उसका ब्राना सुन
बहुत से लोग वहां जमत्र हूरे और हाथों में यंभा
देय है नान - किसी की अन्न कुछ काम न करती थीः
निदान एक ने उन में से कहा कि भाई लालबुहक
ड आवे तो यह लड़का बत्रे - नहीं तो इसका
बयना दुशवारः यह सुन कोई उसका मालिक
लालबुहकड को बुलाही लाया और आतेही वि
हों ने देय कर फरमायाः

कि वूहे लालबुहकडा और जो वूहे को
छान बलेंडा दूकनो इसे ऊपर कर के लो

(२६)

नक्का ३०

लाड कपूर एक दिन अकबर बादशाह के नूबतू
जुब गाये - शाह ने त्रीह कर हाथी दिया - ये
लेचाये ॥ वनस एक के बज्जद इन देनों भाइयों
के जी में चाया कि आज हाथी की जुनाक यल
कर देखें कि कितना प्यता है और किस तरह प्या
ता है ॥ ग़ज़ल नातिब के वक्त मूछा बिछा बिछा हा
थी के पास जा बैठे और उस का प्यना देख निहा
यत है नान और फिकमंद हो आपस में कहने
लगे - कि भाई साहिब बादशाह ने यह हमारे
पीछे कोई बड़ी बला लगा दी - न इसे बेय सकें न
किसी को हँस सकें जो यह मंद नाल यहाँ गहा नो
इस के प्यने के आगे हमारा गाना बजाना सब प्या
क में मिल जायगा ॥ इतना कह कुछ दिल में सम
ह छेलक तंबूना उस के गले में डाल छोड़ दिया -
उन ने शहर में जा धूम की और शहरियों ने जा
बादशाह के यहाँ करयाद ॥ शाह ने फ़रमाया

(२७)

देयो किस का हाथी है किसी ने आ अर्ज की कि
जहांपनाह लाड़ कपूत का - हुकम किया कि उन्हें
बुलवाओ - कहने के साथही वे आन हाजिर हूये
देखतेही पफाहो हज़रत ने कहा कि कैा वे तुम ने
हाथी कैा छोड़ दिया - उन्होंने हाथ बांध अर्ज
की किबलये आलम - गुलाम को जो हुनर आताथा
सो बरस तेल में सब सिजला ठालक तंबूना उस
के हाथ दिया : इस लिये कि शहरि बादशाही
है इस में जाकर कमावे और कुछ बिस में से आप
या हमें पिलावे : इस लतोफे के सुनते ही पुर
हो बादशाह ने उन का कुसूर मुआफ किया
और हाथी के इवज एक गांव दिया

नज़् ३१

कोई बनियां बटोही बाट भूलके एक वन में जा
निकला - विसे वहां और तो कोई न नज़र आया
पर एक जागी दिखार् दिया - इस ने उसे दंड
बतकर के पूछा नाथ जी आते हो कहां से और

(२८)

जाओगे कहाँ : जवाब दिया - बाबा हिंगलाज ज्वा
लामुष्मी हनिद्वान कुतुक्षेत्र कनके तो आता हूँ
और काशी हो गंगा गोदावरी का मेलाकर सेत
बंधनामेश्वर को जाऊंगा : बनिये ने कहा महा
राज एक बात पूछूँ जो पक्का न हो - बोला बाबा
एक नहीं दो - कहा महाराज हम गृहस्थी हैं जो
देसदेस फिरे तो कुछ दोष नहीं आप फकीर हो
भटक भटक क्यों भगम गंवाते हो - एक ठौर बैठ
कर किसलिये अपने भगवान का ध्यान नहीं कर
ते - कहा बाबा तूने यह कहावत नहीं सुनी

बहता पानी निरमला बंधा गंधीला होय
साधू जन नमता भला दाग न लागे कोय

नका ३२

किसी ताजिन का लड़का बड़ा प्यारःजंग हुआ जब
वह प्यारःजंगी कनके पकड़ा जाय तब उस का
बाप रुपये दे कर छुड़वा लाय - एक नेक़ घिस
के बाप से किसी उसके भाई ने समझा कर कहा

(२७)

कि जो तुम इसी तरह बेटे की मामीपीके नित डां
ड भरोगे तो एक दिन सब दौलत जो भूये मरोगे
* इस ने पूछा मैं क्या करूं - जवाब दिया अब ज्ञा
नः जंगी करके कैद पड़े तो न छुड़वाओ फिर आप
ही सीधा हो जायगा - कहा बहुत अच्छा * ग़ज़
बुह ज्ञानः जंगी कर कैद में पड़ा और इसने न
छुड़ाया - पांच मात्र बरस वहीं रहने दिया -
इस में किसी भले आदमी ने आकर इन से कहा
कि अब तुम्हारे बेटे ने ज्ञानः जंगी से हाथ उठाया
और तौबः की * इन्होंने उस की बात मान बिसे
छुड़ा मंगाया - एक दिन बुह बातों ही बातों में
किसी पत्र पढ़ा हुआ तब उस के बाप ने कहा
मियां यह वही मसूल है जस्सी जलगाई पत्र बल
न गया

नका ३३

सुनते हैं कि इबनाहीम अदहम का सेज स्वामन
फूलों से संवारी जाती थी - एक ग़ैर बांदी ने

सेज तैयारकरके अपने जी में बियात्रा कि इस
 बिछाने पर सोनेसे कैसा आनम जी को होता
 होगा - यह सोच इधर उधर देख वह जो
 उस पर लेटी तो आनम पाके बेहोश हो गई
 और फूलों के चन्दन पैठ वे मञ्जलूम हो गई -
 पहन एक पीछे बादशाह ने भी आ उसी पर
 आनम फनमाया - घड़ी दो एक बज्द उस ने
 जो करवट ली शाह घरवाकर उठ पड़े हुए
 और बोले कि देखो इस पलंग में क्या बला है *
 एक के कहते दस दौड़ आये और उन्होंने
 बांदी को निकाल बाहर किया - देख कर हज़रत
 ने फनमाया कि इस मुनदार के मेरे नूषनू सौ
 तालिया ने मानो - बात के कहते ही लोगों ने सौ
 कोड़े गिन कर बेदनेग लगाये - उस ने पर्यास हंस
 हंस कर और पर्यास नो नो कर जारे * यह
 तमाशा देख बादशाह ने उसे पास बुला के पूछा
 कि सुन तो मान जानें से आदमी नोता है तू जो

(३१)

हंसी चैन नोई इस का क्या सबब - अर्ज की ज
हांपनाह फूलों की सेज पर पहन भन सेने की
सुन पुदा के यहां नहो यहां ही हूई - इस बात
को तो सोयके मैं हंसी चैन आप को पुदा के
यहां इस सेज पर नित सेने की नजानूँ क्या सुन
हागी यह अन्देशः कन के नोई * कहते हैं कि
इबनाहीम अदहम इस बात के सुनते ही बाद
शाहत छोड़ फकीरी ले जंगल को मला गया

नका ३४

शाहजहां बादशाह के शाहनादः दानाशिकोह
को मिडियाचों से बहुत शौक था - एक नोख फन
माया - शहर में मनादी फेर दो कि जिस के यहां
जो जानवर शिकारी उड़ने लड़ने बोलने वाला है
लेकर कल फजन हुजूर में हाजिर होय - इस
पुश पबरी के सुनते ही जितने शहर में शौकीन
थे अपने अपने पत्रों को उड़ाय लड़ाय बुलाय
दौड़ाय तैयार कन बड़े तकलुफ से ले गये चैन

(३२)

कौई तमाशबीन तमाशा देखने के लालय से एक
कौवे को पिंजने में बन्दकन कर्इ एक उमदः गि
लाफ़ उस पत्र डाल उन के पीछे लिये मला गया -
वहां सब के जानवर जुले चैन दिखलाये गये -
हर किसी ने अपने जानवर की तन्त्रीफ़ की चैन
इन आम पाया - जब इस की नौबत आई तो
यिह अपने दिल में धबकाया * ग़ज़ ज़ लोगो ने
इस के हाथ से पिंजरा ले गिलाफ़ उतार कौवा
शहनादे को दिषाया - देखते ही हंस कर शह
नादे ने इसे पूछा कि मियां इन सब के जानवरों
का तो बस्फ़ देखा चैन सुना अब तुम अपने जान
वर का बयान करो कि यिह क्या बस्फ़ नयता है *
हाथ बांध पड़ा हो बोला पीनमूनशिद - किसी
का उड़ना लिया है किसी का लड़ना किसी का
बोलना किसी का दौड़ना - पत्र इस का गर्ना ही
लिया है * इस हाज़िन जवाबी से प्रुश हो दा
ता शिकोह ने इन आम सब के साथ उस को भी

(३३)

दिया

नक़्क़ ३५

किसी नेक़्क़ चकबन बादशाह और बीनवल एक
बाग़ के बुनज पत्र बैठे ज्यों का सबज़ा देख रहे
थे - इस में बादशाह ने एक मोत को चरहर के
जेत में जाते देख पूरबी नबान में चरहराहि ज़रा
फ़ात बीनवल को कहा : बीनवल देख तोत में मोत
जात है - समह के वौहीं विसी बोली में बीनवल
ने भी जवाब दिया - जहांपनाह तोत फाटत जात
है मोत पैठत जात है : सुन कर बादशाह रुप
ही हो रहे

नक़्क़ ३६

एक कबीश्वर अपने शगिर्द को साथ ले किसी
शहर में नेक़्क़गान के लिये गया और वहां के
उमदः लोगों से मुलाक़ातकर के कई बरस विस
जगह रहा - पत्र कुछ उसे फ़ायदः न हुआ क्यों
कि वहां के लोग अपनी जहालत से इस के गुन

(३४)

को न समझे - तब इस के शगिर्द ने यह देखा
उस के सोही पढ़ाः

जहां न जाकौ गुन लहै तहां न ताकौ ठांव
धोबी बैठ कहा कनै दीगंबर के गांव
उस के जवाब में उसाद ने भी यह देखा कहे
सुनाया

जहां न जाकौ गुन लहै तहां न दुज सुज बात
बन में तज मुकुतानकों पहनत गुंज किनात

अंक ३७ -

कोई मरदे आदमी किसी तालबुल इल्म की नबानी
एक आलिम के इल्म की तारीफ सुनकर मुश्ताक
हो उस के घर मुलाकात को गया - वह अपने द
नवाले पत्र बैठा किताब मुताल्लक करता था - यह
सलाम कर उन के सोही मुअद्ब बैठ बोला - ह
जगत सलामत - यह कौन सी किताब है - जवाब
दिया - तू कौन है जो मुह से पूछता है : कहा आ
पका ज़ादिम हूं - बोला जा तुहे इस के समझने

(३५)

को लियाक़त नहीं - इस ने कहा बस मञ्जलूम
हूँ कि आप इल्म ग़ैब की किताब देखते हैं कि
जिस से वे मुलाक़ात आप ने मेरी लियाक़त दन
याफ़ की ॥ इस बात को सुन वह शत्रुमिन्दः हो
बोला - अज़लाक़ की किताब है - तब इस ने हंस
कर यह कहा कि आप इसी से ऐसे साहिबि अ
ज़लाक़ हैं और अपनी ग़ाह ली।

मक़ ३८

एक बहना गडगिया जंगल में अपनी भेड़ें ग़ना
ता था - कज़ाक़ान उस की एक भली भेड़ जोड़ि गई -
तब उस ने एक लंगड़ी भेड़ की तरफ़ देख कर
कहा कि जो वह भेड़ मिले तो इसे मैं किसी को
पुदा की ग़ाह पत्र दूंगा ॥ इतना कहते ही भेड़
मिली - तब वह लंगड़ी भेड़ का कान पकड़ किसी
को देने ले ग़ला - इस में से ही से एक और बहना
आया - इस ने विस से कहा कि यह भेड़ नू है ॥
वह बोला पुदा की क़सम मैं ने इस की टांग नहीं

(३६)

तोड़ी - ग़ज़ज़ यही कहते कहते दोनों काज़ी के
यहां गये - काज़ी भी बहना था और अपने घर में
किसी से ज़फ़ा हो बैठा था - इन्हें दूर से आते देख
उन्ने अपने जी में जाना कि शायद ये किसी का
पैग़ाम लिये आते हैं * यह समझ इतना कह
अपने घर भीतर भाग गया - कि उस बदहाल की
बात मैं कभी न सुनूंगा

तक़ ३७

किसी उमरा के दो बेटे थे - एक सच्ची दूसरा ब
ज्जील - सच्ची तो अच्छे अच्छे ज़बानों को बड़े बड़े
दरमाहे करके नौकर रखता और बज्जील छोटे
छोटे लोगों को कम महीने पर आकर रखता *
एक ज़ेब उन के बाप ने बिन दोनों को किसी ग़नी
म से लड़ने को भेजा - जंग में सच्ची की जीत हुई
और बज्जील की हार * इस बात के सुनते ही उन
के बाप ने किसी अपने मुसाहिब से पूछा कि इस
का क्या सबब जो एक हारा और एक जीता -

(३७)

उसने जवाब दिया कि पीतमुत्रशिद - आपने यह
मसूल नहीं सुनी - जो मात्रेटहू संग्राम तो कैं जा
नयें तान्नी को दाम

नक्क ४०

एक कछुए चैन कौवे से बड़ी दोस्ती थी - काम प
डने से एक एक की मदद करता : एक गोल
किसी गिड़ी मात्र ने कौवे को पकड़ा तब कछुए ने
गिड़ी मात्र से कहा कि तुहे इस के लेजाने से बाला
न में क्या मिलेगा - बोला दो पैसे - कहा जो तू इ
से छोड़दे तो मैं तुहे एक मोती दूं - कहा अच्छा :
उस ने गोतः मात्र के मोती लादिया - पर इसने
कौवे को न छोड़ा - तब कछुए ने कहा कि मैं ने मो
ती तो तुहे लादिया - अब इसे कैं नहीं छोड़ता
: बोला एक मोती चैन लादे तो छोड़दूं नहीं तो
नहीं छोड़ूंगा - इस ने कहा अच्छा तू इसे छोड़दे
मैं लादेता हूं : वह बोला मैं तेरी बात का कैसे इ
अतबान करूं - कहा इसने मैं हूठ नहीं बोलता -

(३८)

इस बात के सुनतेही उस ने कौवे को छोड़ दिया
और इस ने दूसरा मोती ला दिया : फिर्त मि
डोमात्र दूसरे मोती को छोटा देखे बोला कि यह
मैं नलूंगा - इसी की बजावत का लादे - इस ने
कहा योंतो नहीं पर जो तू यह मोती मुहे दे
ता मैं इस के बजावत का वहां से देखे लाऊं :
माने लालय के इस ने मोती दिया - वह ले
गातः मात्र बैठ रहा - एक पहन के पीछे इस ने
घबरा के वैसे पुकारा - तब उस ने आकर जफा
हो कहा कि तू बड़ा बेवकूफ है जो मुहे पुकारता
है - क्या तें ने यह कहावत नहीं सुनी : जो कुछ
जुदा करने सो हो - लेना एक न देना दो : यह
सुन मिडीमात्र निरास हो अपने घर गया

नक़्क़ ४९

बनारस में एक यौवे ने किसी मकान पर कितने
एक विद्यार्थियों को हिल हिल कर पढ़ते देखे
किन्तु पंडित से सुवाल किया :

(३९)

हुकत हुकत बिद्यानधी कहा बूढ़ कहा बाग
में तोहि पूछां हे सये य कौ कौन बिद्यानः

जवाब दियाः

आगे समद अगम्य है अपने बैठ कान
नतन लैन कौ हुकत हैं हिहकत देय अपान

नक्र ४२

किसी दिन सवाई जयसिंह एक मकान में बैठे
ब्राह्मन पिलाते थे और दरवानों को यह हुक्म
था कि सिवाय ब्राह्मन के चंदन और कोई न आ
नेपावे : इस में एक भाट दरवाने पत्र गया और
उसने याहा कि भीतर जाऊं पत्र डिवलीदारों
ने न जाने दिया - इस ने सब पूछा उन्होंने ने
जो राजा का हुक्म था सो कह सुनाया - तब इस
ने इतना राजा को लिख भेजा :

दर्दमंद दरवाने ठाढ़े भीतर हैं बेदुआः

जस की बतियां हम जानत हैं वे बांधत हैं हुआः

इस बात के पढ़तेही हंसकर राजा ने सो नुये दि

(४०)

सवा भेजे - बुहले चसीस दे जुशी से चपने घन
गया

नका ४३

एक बनियां हमेशः भंडसाल भरा करता - किसी
दिन विस के बड़े भाई ने चाके उस से कहा कि
भैया तुहे इस में क्या नफ़ा होता होगा - कुछ
और बेगान कौन नहीं करता जो लियादः फा
इदः हो ॥ बोला भाई साहिब - इस में भी आम
के आम गुठली के दाम होते हैं और कितना न
फ़ा होगा - उस के भाई ने कहा मैं कुछ नहीं
समहा तुहा के कहो - जवाब दिया मइ नफ़ा दा
म उठाना हूं और बयता है सो बरस भर चम्की
नरह जाता हूं ॥ यह सुन वह मुपकाही यला
गया

नका ४४

ईद के दिन दो छाठीबय्ये एक हथियार बन्द
और दूसरा निहत्था - मिल कर किसी उमरा के य

(४९)

हां ठोकर तंबूना साथ लिवाये मुजने को गय और
जब वहां से गाय बजाय निहाय इन आम ले फिर
आये तब आपस में बज्जना बांटा करने के बक्त
हगड़ने लगे : कइसेक गहगोन तमाशा देखने
को आन पड़े हूये और उन में से एक ठोकर ने
निहाये से कहा कि मियां तू इस से डरता नहीं
इस के हाथ में तलवार है : बोला कि हज्जत से
लामत यह अपने जी में कुछ और न समझे मेरे
घर बटुसे में दो रुपये धरे हैं - घर से रुपये ले आकर
में जा डेढ़ रुपये की तरवार पत्ती द आठ आने
वाड़िये को दे मसूरी बाड़ मिनवा ला अभी सिर
काट डालता हूं : इस बात को सुन सब तमाशबीन
हंस पड़े और उन दोनों को मिला मले गये

नक्का ४५

राजा सवाई जैसिंह ने मथुरा में अबदुलबी खां
की मसजिद के मीनार की बलन्दी देखकर कहा
कि इस पर से कोई कूदे तो हज़ार रुपये दूं :

(४२)

यिह सुन ऐक यौबे ने पूछा कि महाराज - जो
या पै तें कूदैगौ वाहि हलान रुपैया देउगे - कहा
हां ॥ इतनी बात के सुनतेही वुह यौबे अपने घर
जा ऐक बुढ़िया सौ बरस की जां बलब हो रही
थी उसे ले आया - उसे देखकर राजा ने कहा
इसे क्यों लाए हो - बोला यहीं गुमटी पत्रों कू
दैगी हलान रुपैया देउ ॥ राजा ने कहा बुढ़िया
की शर्त नहीं - जवाब दिया - महाराज आप कौं
बड़ी बानी तें कहा काम - तुम्हें ऐक हत्या लैनी
है सो लेउ और मेकौं हलान रुपैया देउ ॥ इस
जवाफत ओ हाजिर जवाबी से अश हो राजा
ने उसे रुपये दिलवा दिये - वुह ले अपने घर
गया

नक्र. ४६

ऐक बनियां अपने घर में रात को नींद में गाफिल
पड़ा सोता था कि ऐक मूहा उस के पेट पर
होकर इधर से उधर मला गया - वुह नींद से

(४३)

झाँकपड़ा चौन लगा योज्य मात्र मात्र नेने चौन
यिह कहने कि हाय जान गई हाय जान गई -
उस के नेने की आवाज़ सुनके सब घर के लोग
घिन आये चौन लगे पूछने कह तुम्हें क्या दुज्य है
जा इतना नेता है - बोला इस घर में यह
नहीं सकता - कहा क्यों - जवाब दिया ऐक यूहा
मेरी छाती पर हो कर इस तरफ से उस तरफ य
ला गया :: लोगों ने कहा यला गया यला गया
इस के वास्ते इतना नेना क्या था - बोला किसी
ने सय कहा है कि - जातन लगे सोई तन जाने दू
जा क्या जाने ने भाई :: मैं उस के जाने पर नहीं
नेता - नेता इस वास्ते हूँ यिह चाह बुनी निक
ली - आज यूहा गया है कल को सांप जायगा तो
मैं काहेको जीता रहूंगा

नक्र ४७

ऐक अतनी नौ जवान प्रबसुत युस्त यालाक
वसंत ऋतु में अपनी बहनेली के यहां गई चौन

कुछ इधर उधर की मनलगन बातें कर रही थी
 कि प्यासी हूई चैन पानी मांगा - इस की उस
 मुंह बोली बहन ने कोने कुल्हड़े में भरकर ला
 दिया - जो इस ने मुंह लगाकर पिया तो कुल्हड़ा
 होठों से लग रहा :: यह जिल जिला कर हंसी
 चैन इस दोहे को पढ़ने लगी

ने माटी के कुल्हड़ा तोहि डारों पटकाय
 होठ नये हैं पीउ कौ तू कैया यूँसे जाय
 यह दोहा सुन उस की बहनेली ने कुल्हड़े की
 नज़र से जवाब दिया

लात सही मूँकी सही उसटे सहे कुदाम
 इन होठन के कारने सिर पत्र धरे अंगार

नक़्क़ ४८

एक सौदागर का गुमास्तः कहीं से नोकड़ लिवारे
 यला आया - राह में किसी सत्राय के बीय उत
 गा कि वहां डाका आया - तब इसने वहां के रह
 ने वालों से कहा कि भाइयो जो तुम लड़ भिड़

के इन रुपयों को डकैतों के हाथ से बयाचो तो
 आधे पाचो : ग़ज़ज़ उन लोगों ने ज़ों तो कर रुपये
 बयाये और आधे पाये - बाकी रहे सोले बह अप
 ने ज़ाबिन्द के पास पहुंचा - उस वक्त उस के मुनीब
 ने ग़ाह का बहवाल सुन पुश हो उसे एक दुशा
 सा इन आम देकर कहा कि शाबाश तुम ने पूबदा
 नाई की : उस वक्त वही मुनासिब था - यह म
 सूल हम भी हमेशः दुनुर्गों की बवानी सुने आये
 हैं कि जो धन जाता जानिये तो आधा दीजै बांट

नक्क ४७

किसी उमरा के यहां कोई भला आदमी कई एक
 महीने से आमद को ग़ज़ज़ करता था - एक नेल्
 उस ने इसके हाल पर मिहन्न बान हो कर पांय
 सौ रुपये अपने दीवान से दिलवाये - उस ने नट
 ज़टी और अपनी बदलाती से टालमटाल कर के
 कई एक दिन लगाये तब दुज पा इस बियाने ने
 सति मजलिस कहा कि दीवानजी साहिब - भला

(४६)

मानिये या बुना हक़ बात कहने में कुछ ऐब नहीं-
आप की वही मसूल है कि दाता दे भंडारी का
पेट फूले : इस मसूल के सुनतेही शत्रुमंदः हो
उस ने इसे उसी वक्त रुपये गिनदिये

नक्का ५०

किसी मकान पर कई ऐक तिजागतपेशः बैठे आ
पस में अपनी अपनी कमाई का अहवाल बयान
कर रहे थे कि ऐक आशिकतन भूला भटका वहाँ
जा निकला और उन की बातें सुन आह कर यह
शिअर पढ़ा

जो आये इस जहाँ में सो कुछ कुछ कमा गले
ऐक बेसलीकः हम हैं कि दिल भी गंवा गले

नक्का ५१

ऐक गौंगीरा किसी हकीम के यहाँ हिकमत की
किताब पढ़ने नित आता और यह बात कहता कि
पीरमुनशिद - जो गुलाम को आप के तसद्दुक से
इस फ़न में कुछ मुनासबत हो जायगी तो यह

फिन मौल का गुलाम आप के कदमि मुबारक छोड़
 कर कहीं न जायगा और हमेशः ज़िदमत में
 रहेगा ॥ ग़ज़ ज़ इसी दमवाली से कड़ सेक बरस
 के अत्रसे में तमाम किताब पढ़ सुनके वहां से
 ऐसा गया कि जैसे गधे के सिन से सींग गये - फिन
 नज़र भी न आया ॥ एक नेज़ हकीम जी ने
 उस के किसी दोस्त से कहा कि तुम्हारे आशना ने
 हम से क्या कौल किया था और अब दिप्याई भी
 नहीं देता - वह बोला हकीम साहिब क्या आप
 ने यह मसूल नहीं सुनी जो ऐसी बात बवान
 पत्र लाते हो - काम सना दुप्य बीसना छाछ न देत
 अहीन

नज़्ज़ ५२

कोई शय्स किसी पत्र आशिक़ था पत्र माने हिजाब
 के अपना इशक़ उस के आगे इज़हान न कर
 ता और जिस पै आशिक़ था वह भी जान बूह कर
 शरम से कुछ न कहता ॥ एक नेज़ वे दोनों किसी

(४८)

मकान पत्र रात को बैठे थे कि एक पत्रवानः शमश्रु
पत्र आ जला - उस को जलता देख आशिक ने
किनाये से यह देहा पछ

आहि दर्द कैसी बनी अन माहत को संग
दीपक के भावें नहीं जल जल मने पतंग
इस के जवाब में मश्रूक ने भी यह देहा कह
सुनाया

आव पतंग निसंक जल जलत नमोडौ अंग
पहले तो दीपक जले पाछे जले पतंग

नका ५३

अकबर बादशाह का यह मन्त्रमूल था कि हमेशः
फ़कीर का भेष ले रात को शहर की गली गली
कूये कूये में फिरते चैन जिस ग़रीब कंगाल दुखी
को देखते उस का दुख दूर करते * एक दिन जै
निकले तौ देखते क्या हैं कि कोई सौदागर बय्यो
दनवानः के ऊपर गौज में पड़ी नो नो बिरुन
नही है - ये बाले माई टुकड़ा भेजियो - वुह नोटी

(४७)

देने आई - इन्होंने उस से पूछा तू क्यों रोती है -
जवाब दिया मेरा प्यारिन्द बागह बगस से जहाँ
ले सौदागरी को निकला है उस की कुछ प्यार न
हीं पाई इस दुख से रोती हूँ : इतना सुन रो
टी ले दुआ दे आगे बड़े तो देखा कि कोई नंडी
रो रो यकीपीस नहीं है - उसी तरह उस से
भी पूछा - उन ने कहा मेरा प्यार योरी को गया
है उसे तीन दिन हूँ न जानूँ जीता है या मारा
गया इस दुख से रोती हूँ : यह सुन वहाँ से भी
गल निकले फिर देखा कि एक औरत नौजवान
पिड़की में बैठी डारें मान मान रोती है - उस
से पूछा तू क्यों रोती है - उन्ने कहा मेरा शाहन
कम सिन है : इस बात के सुनेही बादशाह उ
दास हो घर आये और दूसरे दिन दीवानी पास
में बैठ बीनवल की तरफ मुआतिब हो बोले - वे ती
नों बिह्नाय : बीनवल ने कुछ जवाब न दिया -
फिर शाह ने कहा बीनवल वे तीनों बिह्नाय - बोला

(५०)

ही जहाँ पनाह रलामत ॥ इतनी बात के सुने
ही शाहने लीली पीली चाँपिकर कहा याता इस
का बयान कर नहीं तो अभी मात्र डालता हूँ - तू
ने क्या समझ के मेरी बात का जबाब दिया - बोला
॥ ऐक समन्दर बनज करे चैन नित उठ योगी
जांय ॥ बालकही से नेहलगावे वे तीनों बिल्लांय ॥
इस बात के सुनतेही पुर हो बादशाह ने बीर
बल को निहाल कर दिया

नका ५४

किसी दिन अकबर बादशाह ने लाड़कपूर का
गाना सुन गीह के ऐक घोड़ा दिलवाया - इस
बल के दानोगः ने नटपटी कर के भला घोड़ा नदे
ऐक बहुत बूढ़ा तुनकी दिया ऐसा कि जिस के पारे
मानन्द घड़े के थे - ये ले नापुश हो अपने घर
आये ॥ कितने दिनों के बअद ऐक तेल बादशाह
ने इन से कहा कि कल तुम भी मेरे साथ फ़ज्र
शिकार को यलियो - ये बहुत प्रब कह कर तुजस्त

(५९)

हो अपने मकान पर आये और दूसरे दिन यात्र
घड़ी रात रहे सवान हो दोनों बादशाह की
डिवली पर जा हाजिर हुए : एक भाई उसी
तुलसी के गले में बालूका बना घड़ा बांध सवान हो
गया था - जो हज़रत बरामद हुए तो ही इन्होंने
ने बड़के सलाम किया - शाह ने देखते ही हंस दिया
और फ़रमाया कि अबे फ़ज्र ही फ़ज्र यह
क्या स्वांग बना लाये हो - बोले बलैया लेउं उलल
पड़ने के डर से दोऊ और बोह बनावन कर
लियौ है और हज़ूर के दात्रोगः ने तो गिराने
को फ़िक्र मचकूल ही कियौ हो : इस लतीफ़े के
सुनते ही शाह ने दात्रोगः को तंबीह की और
इन्हें उस के हवज़ दो घोड़े दिये

नक़्क़ ५५

सूत्रज मल्ल के वक्त में किसी मुसलमान ने अबे रा
हि तमरपुत्र एक जाट से कहा - अबे जाट बे
जाट तेरे सिन पर जाट - उस ने कहा अबे मियां

(५२)

वे मियां तेने सिन पत्र कोल्हू - यह बोला तुक न
मिली - उस ने जवाब दिया कि तुक न मिली तो
कहा भैया अने बोहन तो मरैगौ

नक्क ५६

दो ब्रमीदान अपने गांव से कहीं को गले जाते
थे राह में एक पयास साठ बीघे अच्छी ब्रमीन का
कतुअ देय कर उन में से एक ने कहा कि भाई
यह जगह हमारे तुम्हारे हाथ लगे तो क्या करे
बोला मैं तो अपने हिस्स की ब्रमीन में फुलवानी
लगाऊं - कहो तुम अपनी जगह में क्या करोगे -
कहा मैं अपनी गायें भैंसें यत्राऊंगा - इसने कहा
भला मानों या बुत्रा मैं तो अपने बागीये के पास
न यत्राने दूंगा - वह बोला तुम्हारा कुछ इजाना
नहीं है मैं अपनी ब्रमीन में जो याहंगा सो करूँ
गा ॥ गनज इसी तरह हुआ तुही करके लगे हा
था पाई करने ॥ इस में कई एक राहगीर जो
इन को हगड़ते देय अमअ होगये थे - उन्होंने

(५३)

बीय बियाव कन के इन से पूछा कि तुम कौन आपस
में लड़ते हो इस का सबब कहो - उन्होंने ने सब
माजना कह सुनाया - सुनते ही उन में से एक
शरस बोला कि भाई तुम्हारी वही मसल है - कि
हूत न कपास कोली से लठा लठी

नक ५७

किसी मकान में पंडित साहूकान और सिपाही ये
तीनों बैठे बहस रहे थे ॥ एक कहता था कि मनुष्य
गुन से बड़ा कहलाता है और दूसरा कहता था कि
नहीं धन से और तीसरा कहता था कि न - मदद
गारों से आदमी बड़ा कहलाता है ॥ इस में कोई
कबीरजी वहां जा निकला - विन्हीं ने इसे सालिस
मानके कहा कि महाराज इस मुकद्दम में जो
तुम्हारे नज़दीक सम्य हो सो अपने धर्म से कहो
तब इस ने उन के जवाब में यह सोनठा कह
सुनाया

गुन ते गनुवै होत - नहि संपत न सहाय ते ॥

पूनों यंद उदेत दुनिया की सत्र बत्र नहीं :
 यह सुन वे तीनों युपके हो गये

नक्र ५८

एक नोकर अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा
 कि तू मुझे यात्र शज़स ला दे - सूत्रवीर - काय
 न - साहिबिशर्म और वेशर्म - बीरबल दूसरे
 दिन भोरही एक गंडी को साथ अपने हज़ूत में
 ले गया : शाह ने पूछा लाया - बोला पुदाबन्द हा
 ज़िर है - यह कह बीरबल ने उस गंडी को बाद
 शाह के सौहीं ले जा पड़ा किया - हज़रत ने
 फ़रमाया अब मैंने यात्र शज़स बुलवाये थे तू एक
 को लाया और तीन कहाँ हैं - अर्ज की जहाँ पनाह -
 इस में यात्रों की सिफ़ात हैं - इतना द किया
 बयान कर - बोला कि जिस वक्त यह अपनी सु
 सत्राल में रहती है माने शत्रु के अच्छी तरह
 गला ज़ोलकर बोलती भी नहीं और जिस बिरयां
 कहीं शादी में गालियां गाती है तो बाप भाई

(५५)

शैहन समुन और सब बिनादनी के लोग बैठे
सुना करते हैं पर यह किसी की शत्रुता नहीं
करती और जब अपने शैहन के पास बैठती है
तो रात को अकेली घर के कोठे में भी नहीं जाती
और कहती है मुझे जाने डर लगता है - फिर
जिस वक्त किसी से इस की आज्ञा लगती है तो
आधी रात की चंधेरी में अकेल, वे हथियार
यार के पास निधड़क खली जाती है और और
यकान भूत पलीट से नहीं डरती * यह बात
सुन शाहने पुश हो बीनबल को इनआम दिया
और फ़रमाया तू सय कहता है

नक़्क़ ५७

कोई जागी किसी जंगल में सत्रिनाह एक पेड़ के
नीचे भभूत लगाए धूनी जलाए रेली सिंगी मुद्रा
पहने बाधंवर बिछाए नंगधड़ंगा आसन माने
अपने भगवान की याद में मगन बैठा भजन कर
ता था कि यात्र मुसाफ़िर विसराह से आए और

(५६)

उसी दरवाज़े के नीचे जा बैठे : उन में से पहले
एक ने उस जोगी से कहा कि आज क्या है जो तुम
जुआ खेलने नहीं गए - कुछ हान आए हो जो
इस वन में यह संवाग बना कर आन बैठे हो -
बोला हां बाबा सय कहता है - फिर दूसरे ने कहा
तू तो कल शराब पीके शहर की गलियों में गिर
ता पड़ता फिरता था - आज किस लिये यहां मकर
कर आन बैठा है - जवाब दिया हां बाबा सय
कहता है : तीसरे ने कहा - तुम ने इस राह में
बहुत काफिले ग़ात किये हैं कहा अब किस की
ताक पर बैठे हो - बोला हां बाबा सय कहता है -
बचद यौधे ने कहा - नाथ जी आप भगवान के
पास वंदों से हो कुछ मेरे हाल पर ग़म करो -
उसे भी यही जवाब दिया - हां बाबा सय कहता
है : ग़रज यह कह सुनकर वे यारों चले गए
तब एक और मुसाफ़िर जो अलग वहीं बैठा सुन
ता था - उस के पास आया और आदेस कर बोला

(५७)

कि नाथ जी - आपने यात्र आदमियों के यात्र
सुवालों का ऐकही जवाब दिया - इस का क्या
सबब * उसने इस से भी कहा कि हां बाबा सय
कहता है * यह बोला कि महाराज मैं बिन जैसा
महीं हूँ कि मुझे भी बहका दोगे - बिदून समझाये
आप का पीछा न छोड़ूंगा * इस बात के सुनते ही
उस जोगीने कहा कि बाबा जो कोई जैसा होता
है वुह दूसरे को भी वैसा समझता है - उनके कहे
से मेरा क्या बिगड़ा - फकीर तो जैसे का तैसा बैठा है

नक्र ६०

ऐक तैल राजा बीर विक्रमाजीत के यहां यात्र
शयस ऐक साथ योत्री के मुआमले में पकड़े गये
राजा ने उन में से ऐक को पास बुला इतना कह
छोड़ दिया कि तुम्हारे लाइक यह काम तथा और
दूसरे को पांच यात्र गांलियां दे निकाल दिया -
तीसरे को दस बीस धौल जूतियां लगवा धके दिल
वा निकलवा दिया और चौथे की नाक और कान

(५८)

कटवा काला मुंह कनवा गधे पत्र यलवा शहर
बदन कनवाया : यह अदालत देख हर एक
दरबारी एक एक का मुंह देखने लगा : उस
वक्त राजा ने उन से पूछा कि तुम्हारे दिल में क्या
है सो कहो - उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा कि
धर्मावतान आप ने न्याय तो समझ ही कै किया हो
गा पर इस का भेद कुछ हम पर नपुला-राजा ने
हंस के कहा कि तुम इन यारों के पीछे हरकत
लगा दो कि ये जाके क्या करते हैं इस की ज़बन
लावें - उन्होंने सोई किया : तीसरे दिन जब
हरकत ज़बन ले हुजूर में आ हाज़िर हुए तब
राजा ने देखकर फ़रमाया कि उन के समायान
लाए - जवाब दिया हां प्रथीनाथ लाए-इतना
किया कहो - वे दंडवत कर हाथ जोड़ बोले कि
धर्मावतान जिसे आपने यह कह छोड़ दिया था
कि तुम्हारे लाइक यह काम नहीं था - वह तो जा
ने ही लहर जा मर गया और जिसे गालियां दे

(५७)

छुड़ाया था बुह शहर छोड़ कर चला गया और
जो मात्र प्या के छूटा है सो विस दिन से घर के बा
हर नहीं निकला और महा राज जिस की नाक
और कान काटे गये तिस का अहवाल सुनिये कि
राह में गधे पर सवार चला जाता था और तमाश
गीत भी दो मात्र सौ यात्रों तरफ से लज्जनत
मलामत करते जाते थे और सोंहीं से उस की जो
नू आई - उन्ने उसे पास बुलाकर सब के देखते
कहा कि नू घर जा कर न्हा ने का पानी जल्द गरम
कर लय थोड़ा शहर फिरना बाकी है अभी फिर
कर इन मूर्खियों के हाथ से छूट चला जाता हूंः
इतनी बात के सुनते ही राजा ने उन लोगों से
कहा जिन्होंने कहा था कि धर्मावतार हम ने
इस न्याय का भेद न जाना - कहो अब तो समझे-
उन्होंने अर्जुन की कि पृथी नाथ - आप का न्याय आप
ही से बने दूसरे की क्या सामर्थ जो इस में दम
माने - यह वही है जो किसी ने कहा हैः

(६०)

जामी बागी पात्रयो नारी और न्याव ॥

इन पांयों के गुण है पर उपजे अंग सुभाव ॥

नका ६१

एक तालिबुल इल्म बड़ा बजील था - उस ने किसी
दिन एक आशना की दूबत की - जाना तो जो
उस के यहां तित पकता था सोई पक्का पत्र दो
अंडे खाने के वक्त बड़े तकल्लुफ से उस ने दस्तान
खान पै ला तबे और कहा कि सुनो साहिब इन
अंडों से एक जोड़ा मुर्ग का होता और जोड़े से
हज़ारों बय्ये पैदा होते - यह आप की ज़ात
है जो मैं ने अपना इतना नुकसान किया ॥ उस
का आशना भी ऐकही शरस था बोला कि यह तो
आप ने किया पर भला थी बिन मैं किस तरह
जाऊंगा ॥ कहा मैं अभी ले आता हूँ बना खन
बनो ॥ इतना कह दो ऐसे और प्याला ले वह
मादी की दूकान पर गया और उन्ने प्याला और
दो पैसे उस के आगे रख के कहा कि अच्छे से अच्छा

(६१)

घीमुहेदे-वुह बोला ऐसा घीदूं कि जैसा सफेद यत्र
बः इस बात के सुनेही यह प्याला और पैसे ले
यत्रबवाले की दुकान पर गया और इस ने प्याला
और पैसे दे उसे कहा कि भले से भला यत्रब मुहे
दे-वुह बोला कि ऐसा सफेदूं कि जैसा बरफः
यह सुन वह वहां से प्याला और पैसे ले बरफ वाले
के पास गया और बोला कि बिहतन से बिहतन
बरफ मेरे तईं दे-उस ने कहा कि ऐसा दूं कि
जैसा आबि लुलालः यह वहां से भी प्याला और
पैसे ही ले अपने घर आया और एक प्याला मीठे
पानी का भर कर आशना के आगे ले गया-वुह
देख कर बोला कि तुम तो घी लेने गये थे यह क्या
ले आये-जवाब दिया कि तीन निमोड़ में यह
ठहरा है-उस से यही बिहतन है-क्यों कि शा
इत्र लोग भी मुशबह से मुशबह बिहि को अच्छला
जानते हैं

(६२)

नका ६२

एक बनियां अपने बेटे को ब्याहने बगल लिये शहर से पत्र शहर को जाता था - राह में एक जंगल मिला उस में कहीं दारें बारें उस का भाई हाड़े फिटने गया - इन्फाकन उसे वहां शेर जा गया - इस में देगी जो हूई तो बनियां अपने मन में यह समझा कि किसी देन लेनवाले ने शायद मेरे भाई को बैठा गया है - लगा नोन् नामः जाते की बही देखने - जब देखते देखते उस में किसी का देना पाना नठहना तब घुनकाके जंगल में छूँने मला : कितनी एक दूर जाय देजे तो एक शेर लेटा हुआ है और इस के भाई का हाड़ याम आगे पड़ा है : यह देखते ही बोला सुन तो ऊत के ऊत न तेना म्हाते जाते में नाम न नोन् नामः में - तू ने मेरे भाई को किस हिसाब से मारा जाया - बुह हूंकन के घुनका तब बनियां यह कह नोता पीटता फिट आया कि हां इस

(६३)

हिसाब से ज़ाया तो ठीक है

नक़्क़ ६३

यात्र शय्यसु चपने गांव से निकले ब्राह्मण राजपूत
बनियां और नार्ड और किसी किसान के जेत पत्र
जा लगे गन्ने उज्जाड़ उज्जाड़ फांदिया बांधने और
यूस ने : उस जेतवाले ने देखा और चपने जी में
बियात्रा कि ये यात्र और मैं चकेला जो कुछ कह
ताहूं तो ये मुझे बिन ठाँके न रहेंगे - इस से कुछ
हिकमत किया चाहिये : यह बात दिल में ठान
वुह उन के पास जा ताम ताम कर बोला कि सुनो
साहिब ब्राह्मण हमारा गुनू - राजपूत भाई बनियां
महाजन - तीन आदमी के गाँडे जाने का तो कुछ मुज़ा
यक : नहीं - भला इस नार्ड ने क्या समझके मेरे
जेत में हाथ डाला इस का तुम्हीं न्याय करो : यह
बात सुनकर वे थप हो गये तब इस ने नार्ड से
गन्ने छीनलिये और उसे ज़ुतिया कर निकाल दि
या - फिर किसान कहने लगा कि सुनो भाई

ब्राह्मण गुनू तुम भाई हमारा तुम्हारा माल ऐक
 है - इस बनिये ने क्या बूहके मेरा प्येन उजाड़ा -
 भला इस का तुम्हों इनसाफ़ करो जो तुम हम
 इस के यहाँ से रुपये लेंगे तो क्या यह अपना
 खूद छोड़ देगा ॥ इस बात को भी सुन वे कुछ न
 बोले तब तो इस ने उसे भी धालिया के गाँडे छीन
 निकाल दिया ॥ ग़ज़ इसी तरह से उस ने हन
 ऐक को निकाला और अपना माल बयाया ॥ इस
 बात को सुन तज़ज़ुब कर ऐक शज़्स ने अपने
 दोस्त से कहा यह क्या ग़ज़ब है कि यात्र आद
 मी पर ऐक शज़्स ग़ालिब रहे - उस ने पूछा यह
 क्या बात है मुझे समझाके कहो उसने उन का
 माजना कह सुनाया तब उस का आशना बोला
 क्या तुम ने यह मसूल नहीं सुनी जो इतना तज़
 ज़ुब करते हो कि जुग फूटा और नर्द मानी गई

नक़्क़ ६४

किसी राजा के यहाँ बिकट ज़्यादा नाम कलावंत

(६५)

व सबब गाने बजाने के बहुत पेश हुआ - आठ
पहर उसकी मुसाहबत में रहे : एक दिन उस
राजा पर कोई ग़नीम यहाँ आया तो उसने भी
लड़ने की तैयारी की और अपने नफीकों को
हथियार घोड़े बाँटे - उस वक्त बिकटियाँ से राजा
ने कहा कि तुम भी सिलह ज़ाने से हथियार और
इस्बल से घोड़ा अपनी पसन्द मुवाफ़िक़ ले लो
कल तुम्हें भी हमारे साथ लड़ने को चलना होगा :
इस बात के सुनतेही उसकी जान तो खूब गई
पर माने शत्रु के बहुत ज़ूब कह घोड़ा और
हथियार पसन्द कर किसी बहाने से वह अपने
घर आया और जोरू से कहने लगा कि इस
शहर से अभी भाग यलो नहीं तो राजा के साथ
कल मरने को जाना होगा : उसकी जोरू ज़क़
मन्द थी बोली जो लड़ाई में जाता है सो बेअजल
नहीं मरता - यह कह उसने यक़ी में यने दल
कर दियाए और कहा कि देख जिस तरह इस

(६६)

मैं दाने साबित नहंगरे ऐसे लड़ाई में भी लोग
बय नहो हैं - बोला जो पिस गया सो मैं हूँ *
इस कम हिम्मती को देख उस की औरत हंहला
कर बोली कि सुन जो तू ऐसे ज़ाबन्द से नमक
हतामीकर उस का साथ छोड़ेगा तो मैं भी तेरा साथ
न दूंगी * यह सुन शत्रुमा ला जवाब हो राजा
के पास भेज ही जा हाजिर हुआ और हथियार
लगा घोड़े पर सवार हो उन के साथ हो लिया -
जिस वक्त मैदान में दोनों दल तुलकर लड़ने को
तैयार हुए और लगा मानू बजने और गोली
गोला बान दोनों और से चलने और इस का
घोड़ा भड़कने तिस वक्त बिकटप्यां ने तो माने उन
के राजा से अर्ज की कि महाराज हैं गिरतु हैं -
पर राजा समझा कि यह कहता है मैं हज़ीफ़
की फौज पै गिरूं - बोले ऐसा काम भी न कीजो
तुम मेरे हाथों के साथ अपना घोड़ा न छोड़ो - दो
तीन दफ़ा राजा से उसने कहा और राजा ने

(६७)

यही जवाब दिया - निदान घोड़ा उसे हरीफ के
गोल में ले ही गया ॥ तब बिकट ज्यों ने कमल से
दुपट्टा ज्योल फिनाया - इस से उस राजा के लोग
लड़ने से बाढ़ रहे और इस के पास आये -
कहा तू क्या पैगाम लाया है - बोला मुझे घोड़े से
उतारो तो कुछ अर्ज करूं ॥ उन्होंने ने इसे घोड़े
से उतारा तब यह बोला कि तुम किस लिये लड़
ते हो जिस तरह की मुआमलत चाहोगे सो हम
राजा को कबूल करेगा ॥ उस ने कहा कि इस
लाज रुपये दे और अपनी बेटी हमारे बेटे को
व्याह दे यही हम चाहते हैं - वह बोला यह
बात हमारे राजा को कबूल है मैं इस का जवाब
कल दे जाऊंगा तुम जातिन जमन रखो ॥ इस
बात के सुनते ही अश्व छोड़ उस राजा ने इसे एक
भागी जिलजित और बहुत से रुपये दे नुपसत
किया और लड़ाई मौकूफ की ॥ दूसरे दिन भोरही
यह राजा जब अठ खड़ा हुआ तब उस राजा

(६८)

न कहला भेजा कि कलतो तुम्हारा वकील तुम्हारी
तनफ़ से दस लाख रुपये और बेटी देनी कबूल
कर गया है अब क्यों लड़ने को तैयार हूँ हो -
सुनो ही राजा ने फ़रमाया कि देखो कौन
आदमी हमारी तनफ़ से वहाँ जाकर यह बात
कह आया है - बिसे मेरे पास लाओ : ग़रज़ तह
कीक कर के लोग बिकटप्यों को हाथों हाथ राजा
के सोंची लेगए तब किसी मुसाहिब ने उससे पूछा
कि तू किस के हुक्म से दस लाख रुपये और
लड़की देने का इक़तार कर आया - बोला इसे
हुक्म क्या माहिये जो इस घोड़े पर यढ़ेगा सो
इक़तारही कर आवेगा : इस बात के सुनोही
राजा ने ज़फ़ा हो उसे निकाल दिया और बड़ा
अफ़सोस किया : इस में कोई मुसाहिब बोल
उठा कि महाराज आप ने जो इतना अफ़सोस
किया सो क्या यह मसूल नहीं सुनी
कि जिस का काम तिसी को छाजै

(६९)

चौन करने तो ठेंगा बाजै

नक़्क़ ६५

एक शय्स की भैंस मन गई वुह लगा नेने ॥ इस
में उस के एक पड़ोसी ने चाकर पूछा कि भाई
तुम क्यों नेते हो - बोला मेरी भैंस मन गई जो
सारे कुनवे को पत्रवनिश करती थी - यह बोला
भाई सबन करो हमें तुम्हें काले धन से लहना नहीं
उसने पूछा तुम्हारा क्या नुक़सान हुआ - जवाब
दिया मेने भी पकाने की हांडी फूट गई ॥ इस
बात के सुनते ही वुह ग़रीब हंसकर बोला कि हां
भाई सय कहते हो

नक़्क़ ६६

एक नेन तुलसी दास गुशई बनारस में किसी
मकान पर बैठे थे कि एक नूयड फ़कीर ने चाके
सुवाल किया - अलज - इस के जवाब में तुलसी
दास ने यह दोहा कह सुनाया

हमैं लज्य हमान लज्य हम हमान के बांय

(७०)

तुलसी अलखै कहा लखै नाम नाम भज नोय
इस दोहे को सुन वह माने शत्रु के लाजवाब हो
मुपयाप यला गया

नकु ६७

किसी शहर के आमिल का बाप मरगया - वह
उस के गम में बहुत दिलगीन बैठाथा - शहर के
सब आदमी क्या दुनियादार क्या फकीर हिंदू
मुसलमान मिलकर उस के यहां मातमपुत्रसी को
गरे और बैठ कर अले आरे पत्र यात्र शब्द
उस की बेक़्तारी देख उन में से बैठे रहे - बेनवा
बैठागी - सन्यासी और जोगी और हर एक अप
ने अपने तौर की मसूल कह यला आया ॥ बेनवा
ने यह मसूल कही दोस्त

दीद दुनिया का दम बदम को जे

किस्की शादी ओ किस का गम की जे

बैठागी ने यह

साधो या संसार में सभी बटाऊ लोग

(७१)

का कौ कने मनावनौ का कौ कीजै सोग

सन्धासी ने यह

चाए है सो जांयगे राजा तंक फकीर
एक सिंहासन यह मले दूजे बाधे जात बंजीर
जोगी ने यह - जोगी था सो उठगया आसन
तही भभूत

नक़्क़ हद

शाहजहाँ बादशाह के यहां कई एक पोस्तियों ने
मिलकर किसी के कहे सुने से अजी दी कि पात्र
मुनशिद आप के अमल में हम भूये मरते हैं
और सब यैन करते हैं - हुजूर से पाने रहने की
जगह हो जाय तो हमारी जान बचे ॥ अजी के
पढ़तेही शाह ने वलीन से कहा कि पोस्तियों के
पाने रहने का बन्दोबस्त अभी कर दो ताकि ये
बियाने किसी बात का दुख न पावें ॥ हुक्म होतेही
पोस्तीपानः बनवा वलीन ने तमाम शहर के पोस्ति
यों को वहां रहने को जगह दे उन का दरमाहः

कन दिया * यह जब सुन साने शहर के सुस्त
 कमयोन काहिल बे मिहनत के रुपये लेने के लालय
 से वहां आय आय पोस्तियों में नाम लिखाय लि
 याय रहने लगे ॥ ग़ज़ एक साल के बरस में कई
 हज़ार पोस्ती शुमार किये गये - तब पोस्ती पाने के
 दानोगः ने वज़ीर से जा कहा कि मुदाबन्द जो इसी
 तरह से दरमाहा मिले जायगा तो मज़लूम होता
 है कि कई बरस में सारा शहर पोस्ती होजायगा
 एक ही बरस में कई हज़ार जमअ हूँ ॥ वज़ी
 र ने जा बादशाह को जब पहुँचाई - शाह ने
 फ़रमाया कि इसे तजवीज़ कन के देखो जो असल
 पोस्ती है विसे रहने दो और जो तकलीदी है वि
 से निकाल दो ॥ यह हुक्म होतेही वज़ीर ने घर
 आय सब की दरबत की और बहुतसा पोस्त पिलाया
 जब जब नशे में हूँ तब उन्हें पाने को मिठाई दी
 और यह कहा कि जो कोई पाने के बक़् बदन में
 हाथ न लगावेगा सो हज़ार रुपये पड़ेगा और

(७३)

अपना बदन जुजलावे सो नहीं ॥ ग़ज़ मिठाई
प्याते प्याते उन के बदन में जुजलाहट हुई
तब तक लीदियों ने तो माने लाभ के न जुजलाया
पर असल पोस्ती यह कह जुजलाने लगे कि इस
एक एक घिसे पर हज़ान हज़ान रुपये सड़के
हैं ॥ बज़ीर ने उसी दिन न जुजलानेवालों को
जवाब दिया और जुजलानेवालों का दनमाहा दून
किया

नक़्क़ ६९

एक कड़ाड़पती बड़ा बज़ील था - उस के घर में
कुछ शादी आई तो उस ने अपने बाबत्यों और
बकावलों को बुलाकर कहा कि एक सेर की सोलह
त्रोटो पकाओ और देके आगे एक त्रयो - इस
में प्यावे सो प्यावे बये सो बांध लेजावे हनगाह
किसी को मनत्र न करो ॥ वे बोले बहुत प्रब ॥ यह
बात सुनकर कोई उन का आशना बोला कि भाई
साहिब यह शादी या लूटा लूट - जवाब दिया

(७४)

बंद से दरगाह जब करते हैं तब लूट लूट ही करते हैं - तुमने यह मसूल नहीं सुनी - क्या ले गये शेरशाह क्या ले गये सलीम शाह दुनिया में सच्ची चौरा शूम का नाम ही रह जाता है

नका ७०

मुफ्त बिगाने माल के पानेवाले दिल्ली के बांके मश हूत हैं : एक दिन कोई बांका किसी हलवाई की दकान के सौहीं जा पड़ा हुआ चौरा लगा उस की मिठाई की तरफ चाँप फाड़ फाड़ देयने : वह बोला देयते क्या हो साहिब - इस ने एक मिठाई की तरफ इशारा करके पूछा यह क्या है : उस ने कहा प्याजा - इतनी बात के सुने ही यह हट थाल उठा उस की सब मिठाई प्यागया चौरा लगा कुछ नकद मांगने चौरा कहने कि मैंने तेरा हुक्म बजा दिया - इस का मिहनताना मुझे दे : निदान धमका धमक के उस ने एक रुपया ले ही के छोड़ा तब कई एक आदमियों ने आके हलवाई

(७५)

से पूछा कि मियां यह क्या मुन्नामलः था कह तो
सही - बोला साहिब कहूं क्या अपना सिन यह
वही मसूल है जो कानों सुनते थे सो चाँजों देखी
कि उलटा योत्र कुतवाले डांडे

नक्का ७९

एक गुसाईं अपने येले को साथ ले किसी शहर
से तीरथ करने को निकला और यला यला एक
गांव में पहुंचा - तब उस ने येले के हाथ बाज़ार
से कुछ प्याने पीने का संजाम मंगवाया : यला
जो बाज़ार में जाके देखे तो सब जिन्स एक ही भाव
है - वह मात्र पुशी के घी यीनी और मैदा लेंचा
या और मलीदा बना जल्दी से गुनूके आगे ला
गया : गुनू ने पूछा बाबा आज क्या है डो तूने
यूनमा बनाया - बोला महाराज यहां सब यीन
एक ही भाव है - इस लिये मैंने मलीदाही किया -
यह सुन गुसाईं ने येले से पूछा इस गांव का
नाम क्या है - बोला हनिभूम पुत्र - कहा यहां से

अभी यलोनहीं तो क्या जानिये किस बला में पड़े -
 येले ने जवाब दिया मैं तो इस शहर से
 मजाऊंगा आप का जी माहे तो तीरथ यात्रा
 कर आइये ॥ निदान गुसाईं चलेला गया और
 येला वहां रहा ॥ बरस एक में वह व्यापीकर
 ऐसा मोटा हुआ कि पहचाना न जाता था ॥ एक
 ताल केई योन योत्री करते पकड़ा गया - राजा
 के यहां से उसे सूली देने का हुक्म हुआ ॥ कुतवाल
 उस योन को सूली के पास लेजा कर क्या देयता
 है कि योन दुबला और सूली मोटी है - यह
 जब राजा से जा कही - राजा ने फरमाया कि
 किसी मोटे को पकड़ कर सूली दो और योन को
 छोड़ दो ॥ राजा का हुक्म होतेही कुतवाल उस गु
 साईं के येले को सब से मोटा देय पकड़ कर सूली
 के पास लेगया और माहे कि उसे सूली पर म
 रवे कि इस में जुदा का माहा बृह गुसाईं भी
 वहां आ पहुंचा और अपने येले को सूली देते

देण बोला ओ बाबा कुतवाल तू इसे खूली नदे -
 इस के बदल मुहे दे ॥ कुतवाल ने पूछा कैयों - गु
 सांई ने कहा इस खूली पत्र जो यढ़ेगा सो स्वर्ग
 का राजा होगा - इसी दिनके लिये मैं बागह बगस
 की उमर से जोगकमाता था सो दिन भगवान ने
 आज दियाया और मेरा मनोरथ पूरा किया ॥
 कुतवाल बोला तुहे कैयों खूली दूंगा मैं हीं इस
 खूली पत्र यढ़ूंगा - कुतवाल के खूली यढ़ने की
 ज़बन पाकर खूबः ने कहा तू न यढ़ मैं यढ़ूंगा -
 खूबः की ज़बन पाकर दीवान ने कहा मैं यढ़ूंगा ॥
 आखिर इसी तरह बहसा बहसी करते वहां का
 राजा ही खूली पत्र यढ़ मरा तब उस गुसांई ने
 येले से कहा कैयों मैं तुहे न कहता था कि यहां न
 रह अब भी रहेगा - बोला महाराज मेरी वही
 मसूल है कि भूले बनिये भेड़ जाई फेर जाय तो
 नाम दुहाई ॥ यह कह वह उसी वक्त गुत्र के
 साथ वहां से निकल पड़ा हुआ

(७८)

नक्का ७२

एक सिपाही लिया पछा दुनियादानी के कारो बा
न से जफा होकर फकीर हो गया और लगा
मुल्क बमुल्क फिरने * किसी शहर के दरवाजे की
ऊपरली गैजट में कुछ लिया था सो लगा बांयने
इस में उस ने एक कोने में लिया देखा कि हिम्मत
मनदां मददि जुदा - इस इबात को पड़ते ही
जफा हो वेला कि जिस शहर के दरवाजे पर
यिह हूठ लिया है उस के अन्दर न जानिये क्या
कुछ होगा * यिह कह शहर में न जा उलटा
फिरा और कितनी एक दूर जा आपही आप
सोया कि मैं ने बिना आजमाये किसी के लिये को
हूठ कहा यिह बड़ी बेइनसाफी की * इतना
समझ फिर फिरा और यिह इनादः कर बोनि
या बिछा उसी दरवाजे में जा बैठा कि इस शहर
के बादशाह की बेटी को मैं ब्याहूंगा - इस में उसे
वहां तीन दिन बिन दाना पानी के गुज़ने - दरमि

(७९)

पान इस के उस न न किर से बात कही न कुछ
जाया बल्कि शहर के लोगों ने पिलाने पिलाने का
बहुत क्रोध किया पर इस ने उन्हें कुछ जवाबही
न दिया * यह जब वहां के बादशाह को पं-
ची - शाह ने बलीन को बुलाकर फरमाया कि
इसी वक्तू जाके फकीर को जो मांगे सो देकर
पिला पिला नुपुस्त कर आ * शाह के फरमाने
ही बलीन ने फकीर से जाके कहा कि शाह साहिब
हज़ूर का हुक्म मुहे यों है कि जो फकीर का
सुवाल हो सो पूरा कर आ - जो आप को मत खूब
है सो फरमाइये बन्द : ला हाज़िर करने * फकीर
ने कहा मैं बादशाह की बेटी से शादी करूंगा तू
मुहे लादे सिवाय इस के मुहे और कुछ नहीं या-
हिये * इस बात के सुनेही बलीन लाजवाब हो
फिरकर बादशाह के पास पहुंचा - शाह ने कहा
क्यों फकीर को नुपुस्त कर आया - अर्ज की जहां
पनाह जो फकीर ने बात कही है तक सीन मुआफ

गुलाम नबानपत्र नहीं ला सकता - हज़रत ने
 फ़रमाया कि लिज्य कर दे - इस ने उन के फ़र
 माने से उसका सुवाल लिज्य कर गुलज़ाना - शाह
 ने सोय समहके कहा कि कुछ मुज़ायक़: नहीं उस
 से कहो सवा सेन अन बीधे मोती लेआ तेनी शादी
 शाहज़ादी से होगी - बादशाहों के यहां यह
 नस्ल है कि सवासेन अनबीधे मोतियों से शौहन
 दुलहन की गोद भरे : वलीन ने फिर जा फ़कीन
 से बादशाह की कही बात कही - वह बहुत ज़ूब
 कह बोनिया बधना बांध मोती लेने समंदन की
 तनफ़ गया और वलीन शाह के पास आया -
 उस वक्त शाह ने फ़रमाया कि जो वह फ़कीन
 साहिबि कमाल होगा तो मोती लावेगा नहीं आप
 ही मला जावेगा और जो साहिबि कनामात है
 तो उसे बेटी देने में हमें कुछ नंग नहीं कैं कि
 विस का मर्तब: हम से अज़ला है - वह जिसे याहे
 बात की बात में बादशाहत बय़श दे : चलकिस्सु:

(८९)

तुह फकीर समन्दर के किनारे पहुंच कर कमर बांध
बधना हाथ में ले लगा पानी उलीयने - जब
दिन रात उलीयते उलीयते उसे गौबीस पहन
गुलने तब समन्दर ने आदमी की स्त्रुत बन आन
के पूछा कि फकीर तू कैसा दरया का पानी निकाल
निकाल फेंकता है - बोला पानी उलीय के सवासेन
मोती लूंगा - जवाब दिया तुहे सवा सेन मोती
मिलें तब तो पानी न उलीयेगा - कहा नहीं - बोला
आप्य मूंद मैं तुहे मोती देता हूं इस ने आप्य बंद
की उस ने बहुतही बड़े बड़े सवा सेन कोने मोती
ला इसके हाथ दिरे - यह ले टुआ दे फिर उसी
दरवाजे में आ बैठा - बादशाह को खबर हुई -
शाह ने वकील को भेज उसे हुजूर में बुलवाया
और तज्जीम तवाज्ज कन मसनद पर बिठाया
ग़रज़ जब शाहनादी को ला उसके सौहीं पड़ा
किया तब फकीर ने मोती की पोटली होली से
निकाल इतना कह उस के हाथ दी कि भैना ले

(८२)

इस बात के सुनतेही बादशाह ने दांतों में उंगली
दे कहा - शाह साहिब तुम ने क्या कहा - बाला
बाबा सय कहा - फिर बादशाह ने पूछा कि तुम्हा
ना सुवाल क्या था - जवाब दिया बाबा सुवाल जवाब
कुछ नथा फकीर को ऐक बात का इस्तिहान करना
मनलून था सो किया - तेने शहर के दरवाजे पर
लिप्या है कि हिम्मत मनदां मददि जुदा सो
फकीर के गुमान में हूठ आया था सो नहीं किसी
ने सय लिप्या है : इतना कह फकीर वहां से
नवानः हुआ

नका ७३

ऐक कायथ ने गाने बजाने की सुहवत में किसी
गवैये से यह शिन्न सुना - इशक क्या शै है किसी
कामिल से पूछा चाहिये - तभी से वह साहिब
कमाल की तलाश में था कि ऐक गुसाईं इसे मिला
इन्ने दंडवत कर उस से पूछा कि महाराज इशक
क्या शै है मुहे दया कर बताइये : इस की बात

(८३)

सुन उस ने कहा बाबा मैं ने तो अपने गुरु देव क
मुख से यों सुना है

इ शक उसी की हलक है जो सूरज को धूप
जहां इ शक तहां आप है का दिन ना दिन रूप

नका ७४

एक दिन आलमगीन बादशाह को किसी ने अज्जी
दी कि जहां पनाह आप की बादशाहत में दहलाल
दिन धौले बीय बाज़ार के नरैयत को लूटते हैं -
माल किसी का ले कोई वे दरमियान दो आने
रुपया लेते हैं : अज्जी के पढ़ते ही बादशाह ने
सारे शहर के दहलालों को पकड़वा मंगवाया और
पूछा कि तुम किस बात की कौड़ी आते हो - अज्जी की
कि जहां पनाह बाज़ार में कोई गीन आवे पहले
हम उस का मोल तोल कर देते हैं तब ज़रीदान
लेते हैं - इसी बात की कमाई आते हैं : शाह ने
फ़रमाया हमारा मोल तोल कर दो तो तो ज़ैर
नहीं तो सब को शहर से निकाल दूंगा : इतनी

बात के सुनतेही उनमें जो यौधनी या सो बांट
कांटा ले आगे बरु बैठा और लगा इधर उधर
निकती में बांट डाल तोल ने - इस में कुछ देर जो
हूई तो बादशाह ने कहा कहता क्यों नहीं घड़ी
घड़ी तोलता क्या है - उस ने हाथ बांध पड़े हो
जवाब दिया कि पीन मुनशिद आप तोल में तो
जित ने सब आदमी हैं वितनेही हो पर मोल में
नहीं कहसकता क्यों कि एक गती मुहे नहीं मिलती
जो गती हाथ लगती तो वह भी कहदेता : इस
लतीफे के सुनतेही बादशाह ने उन सब को पान
दे यह कह छोड़ दिया कि दहली प्याना तुम्हा
रा हक है शैक से प्यात्रो और अजी देनेवाले को
निकाल दिया

नका ७५

एक मथुरा का यौवे कहीं बैल पर सवार पूनियां
जाता यला जाता था - किसी कान्हकुञ्ज पंडित ने
देखकर तन्न की राह से पूछा कि यौवे जो तुम

(८५)

जो यौक में नबैठ बैल पत्र बैठे पूनियां ज्यादा जाते
हो सो इस का प्रमान क्या है - जवाब दिया कि
प्रसिद्ध कौं प्रमान कहु नाहीं चाहियतु - बोला सो
क्या - उस ने कहा कि यौका याही के मार्ग सों नि
वस्यो है ॥ इस बात के सुनते ही वृह पंडित हंस
कन नहगया

नका ७६

एक सिपाही बड़ा उवागो था जब जीतता तब माने
पुशी के ऐसा गाफिल हो जाता कि कोई उस के
पहनने के कपड़े भी उतार लेता तो भी उसे मन्त्रलूम
नहोता - इसी उम्मेद से दस पांय शुहदे हनवक्त
उसके साथ लगे रहते और जद काबू पाते तद
उस का माल उड़ाने ॥ एक नोक वृह किसी गैर
महफिल में जुआ खेलने को गया और लगा जीत
जीत रुपये चपने आगे से पीछे जिसकाने और
उसके साथ के लुकांदने लगे उड़ाने - इसमें किसी
ने देखकर एक से कहा कि देखो किसी की कौड़ी

(८६)

कोई उड़ावे - दूसरे ने जवाब दिया क्या तुम ने
यिह मसूल नहीं सुनी जो तज्जुब करते हो कि

॥ चंधी पीसे कुत्ता जाय ॥

॥ पापी का माल अकान्ठ जाय ॥

शाह जहां बादशाह ने दीवान पास से ले किले
के सदन दरवाजे तक एक तस्मा बंधवा दिया था
और उस में घंटालियां गुंथवा कर उस का
बीय बालान में डलवा दिया था - इस वारसे कि जो
कोई फनयादी आवे सो उस तस्मे को जिये - घंटा
लियां बाजे और फनयादी को फनयाद हुजूर
में वे वसीले पहुंचे ॥ एक नेक किसी सक्के का बैल
मरे भरी पज्वाल उस तस्मे के पास आनकर पड़ा
हूआ - सक्का किसी के यहां मशक डाल ने गया था
बैल ने तस्मे से सिर जुजलाया उस के सींग का
हटका जो लगा एक बातगी सब घंटालियां बाज
उठीं - सुने ही शाह ने फनमाया देखो कौन है
लोगों ने हट पवनदी कि पीनमुनश्चिद और तो

(८७)

कोई नहीं ऐक बिहिशती का बैल है - हुक्म किया
कि उसे उसके मालिक समेत ले आओ - लोग फिल
फौज लेगए - शाह ने फरमाया कि इस की
प्याल का पानी तोलो कि कितना है - तोल कर
अई की कि जहां पनाह साढे पांय मन है - सुने
ही बादशाह ने हुक्म किया कि आज से साढे तीन
मन पानी से बियादः शहर में कोई प्याल न
बनावे :: उसी वक्त मनादी फिरगई - तभी से
साढे तीन मन पानी से बियादः प्याल नहीं
बनती

मक ७८

दो दिल्ली के बांके बिताने माल के उड़ाने जाने
वाले किसी मकान से यह मनसूबः करके उठे
कि आज बाज़ार में यहकर बिन कौड़ी पैसे मुफ्त
को मिठाई ज़ाया चाहिये और आगे पीछे हो
बाज़ार में पहुंचे :: ऐक तो जाते ही रुपये की मि
ठाई तुलवा लगा हलवाई की दूकान पर बैठ जाने

(८८)

चौन दूसरे ने उसी हलवाई से चाठ चाने की
मिठाई चौन अधेली के टके ले अपनी गहली -
हलवाई ने दौड़कर उस का दामन पकड़ा चौन
कहा मेरा रुपया दो - वह बोला मैं देयुकाहूँ -
इस में दोनों से नद बदल होने लगी चौन बहुत
से लोग जमत्र होगये तब उस बाँके ने कहा कि मैं
ने एक भले चादमी के देयते इसे रुपया दिया है
न माने यलनक पुछवायूं - लोगों ने कहा अच्छा
तो कहता है तू दूकान पर क्यों नहीं ले जाता :
लोगों के कहे सुने से हलवाई ने दूकान पर जा
उस मिठाई पानेवाले से पूछा कि मियां साहिब
आप सय कहिये इसने मुझे रुपया कब दिया है -
वह बोला अबे इन्होंने तो रुपया मेरा देयते दिया
है पर कहीं मेरा रुपया न भूल जैयो : यह कह
के दोनों उसे अहमक बना मिठाई जा गले गये
चौन दुह बियाता तो हींचकर बैठ रहा

निज ठरि अप नाकडु कि दानदु आपर नाकडु दान

(८९)

नक्र ७९

किसी दिन तुलसीदास गुसाईं कितने एक आद-
मियों के बीच कहीं बैठे ज्ञान यन्त्रा करते थे -
इसमें उस राह से किसी की बग़ात आनिकली -
उसके बाजे की आवाज़ सुन सबके मन दुयिते
हुए तब तुलसी दास हंसे - उन को हंस्ता देख
बिन में से किसी ने पूछा - महाराज आप क्या देख
कर हंसे - जवाब दिया दुनिया की भूल देखके -
बोला सो क्या - उत्तर दिया

फूले फूले फिगत हैं आज हमारा बाह
तुलसी गाय बजाय के देत काठ में पाय

नक्र ८०

एक बड़ा सौदागर किसी साहिब कर्माल फूकीने के
यहां जाकर मुनीद हूआ और पीर की छिदमत
में आठों पहन हाजिर रहने लगा ॥ पुदा
का याहा छ महीने के अत्रसे में उस का ऐसा काम
बिगड़ा कि पाने पीने को भी कुछ पास न रहा ॥

(७०)

एक गोल पीत ने इसे उदास देख कहा कि बाबा
क्या तुने यह मसल भी नहीं सुनी जो इतना
फिक करता है -

चलहटाद करता की बातें क्या न करता क्या न करने
हाथी मात्र गर्द में डाले चढ़ना के सिन इत्र धने
ग्रीते भने भने हुलकावे मिहने वने तो फेन भने

नक्क ८१

एक गोल चकबन बाद शाह के गूबन किसी मुगल
ने अल ग्राहि जनाफत राजा टाडल मल से पूछा
कि राजा साहिब तुम्हारे यहां मल लफज के क्या
मचने हैं - वैंहीं समह कर राजा ने जवाब दिया
कि मिगला साहिब जो लफज वेग के मचने हैं -
सेई मल के हैं ॥ इतनी बातके सुनते ही वह
मुगल बहुत शरमिन्दः हुआ ॥ अलासः इस का
यिह है कि संस्कृत में ये दोनों नाम गूही के हैं

नक्क ८२

विसी मकान पर कोई मुल्ला बैठा लड़के पढ़ा ताथा

(७९)

कि एक लड़के के बाप ने आकर उसे उलहना
दिया - मियां साहिब मेरे बेटे को आप न कुछ
न तनबियत किया देखो अबतक छोकनों के साथ
वह खेलता फिरता है और मेरा कहा नहीं मान
ता : इतनी बात के सुने ही मियांजी ज़फ़ा होकर
बोला कि हां साहिब नेकी बरवाद गुनह लालिम
मैं ने एक बरस मिह्नत मशक़त कर लिया पढ़ा
गधे से आदमी बनाया और तुम ने यह बात कही
अब मुझे तुम से कुछ लेने पाने की उमेद बाकी न
रही : यह यास का कलिमः सुनकर लड़के का
बाप तो मियांजी को बहुतसी तसल्ली देके चला
गया पर एक धोबी और धोबिन बड़े दौलत मंद
जिन्होंने मियांजी की नबानी यह बात तस्ते में
जड़े हो के सुनी थी कि मैं ने तुम्हारे लड़के को
बरस दिन में लिया पढ़ा गधे से आदमी किया -
वे दोनों जोनू ज़सम आ मौजूद हूँ और हाथ
जोड़ कर बोले कि मियांजी साहिब जितने रुपये

आहिये लोजे और मेरे भी गधे को आदमी बना
 दीजे ॥ मुल्ला ने उन दोनों की बात सुन के दिल
 में बियाता कि ये हिये के अधे मत के हीने गांठ के
 पूरे मेरी किसमत से आन मिले हैं - इन से तुम ये
 क्या नहीं लेता - यह समझ इन्ने उन से कहा
 हल्ला तुम ये दो और गधे को बांध जाओ - एक
 बरस बरस आकर लेजाइ यो ॥ इस बात के
 सुनते ही वे हट तोड़ा दे गधा बांध गये और एक
 बरस बरस फिर आन मो जूट हूये - उन को
 देखते ही मियांजी ने कहा कि दो दिन पहले
 आते तो उसे पाते अब तो वह जाके जौनपुर का
 काजी हुआ ॥ उन्होंने पूछा कि अब हम उसे
 क्योंकि पावें मियांजी ने कहा कि तुम उस के
 बांधने की रस्सी और दाना पाने का नंदोला ले
 जाके सौहीं पड़े हो दिखलाओ जब वह पहचान
 के तुम्हें पास बुलावे तब तुम निगाले लेजाके सब
 कहकर कहियो - अपना कहवाल सुनकर वह

(९३)

तुम्हें बहुतेरा डरावेगा पर तुम न डरियो और
कहियो कि जो तुम हमारी बात न मानो तो यल
कर मियांजी से पूछलो * ग़रज़ वे दोनों जान
पुत्र गये और उसी तरह करने लगे तब काजी
ने इन दोनों को पास बुलाकर पूछा कि तुम यह
क्या करते हो - बोले नित्राले यलो तो इस का
अहवाल कहें * काजी उन्हें नित्राले ले गया फिर
इन्होंने सब अहवाल कह सुनाया - काजी ने
दरयाफ़ किया कि किसी शज़सने इन्हें बहकाया है
इस से इन की बात बिन कबूल किये किसी तरह
मेरा पीछा नहोड़ेंगे - यों समझ काजी ने कहा
जो तुम ने कहा हो सब सत्य पर अब तुम हम से
क्या चाहते हो - ये बोले हम वे और लाद हैं हमारे
माल अमवाल के वातिसु होके मरने से मिट्टी दीजो
यही हम चाहते हैं * आज्ञा माने शत्रुमके का
जी ने उन की बात कबूल की इस लिये कि कोई
और नसुने

(१४)

नक्का ८३

एक क्षत्री दुनिया से बेगान होके किसी नानक पंथी
फकीर का जाके येला हू आ ॥ कितने एक दिन
पीछे एक गोल उसने गुनू से कहा कि महाराज
मेरा जी याहता है जो आप की आज्ञा पाऊं तो
पृथ्वी प्रदक्षिणा कर आऊं - गुनू ने कहा बहुत
अच्छा ॥ इतनी बातके सुनते ही वह दंडवत कर
बिदा हुआ और लगा मुल्क व मुल्क फिरने -
जिस मुल्क में गया वहां उस ने हर मुल्क का
आदमी देखा तो हैरान हुआ - निदान कितने
महीने में फिरकर गुनू के पास आया और तब
जब कर पूछा कि महाराज यह क्या आश्चर्य
है जो एक मुल्क में आदमी पैदा होय और दूस
रे में जा कर बसे - गुनू बोला कि बाबा नू जो
इतना अयंभा करता है सो क्या तूने यह दोहा
नहीं सुना

कित काशी कित काश्मीर कित पुनासान गुजरात

(६५)

पत्रसत्राम या जीव की पना लवध ले जान

नकु ८४

किसी मकानके बीच पांय सात सिपाही बैठे आपस
में डोंग मान तेथे - कोई कहता था मैं ने यात्र घाव
प्याये और कोई कहता था पांय ॥ गत्रज हत्र ऐक
ने अपने अपने लड़ने और नृपम प्याने का अह
वाल बयान किया ॥ एक बूढ़ा ठठाल उनके पास
बैठा था बोला कि मियां जवानी में हम भी सैकड़ों
लड़ाइयां लड़े और हम ने भी हलारों नृपम
प्याये ऐसे किकहीं बदन पत्र तिल धत्रने की जगह
बाकी नहीं रही - हमारे आगे अब कोई क्या
लड़ेगा और क्या नृपम प्यायगा ॥ इतनी बात के
सुने ही उन में से एक जवान जफ़ा हो कर
बोला - बड़े मियां कपड़े तो उतारो देखें तुम ने
कहां कहां घाव प्याये हैं ॥ तुह हंसके बोला मियां
गबनू न तुह नृमाना नहा न वे दिन नहे न तुह
जवानी नही न तुह तैयारी नही न तुह जिसकी

(१६)

नहा अब क्या देखोगे - इतना कह यंपत हुआ

नक्र ८५

विही मुनर्श के पास एक बाहने का सैयद नौकर
हुआ - एक नोद उस का जिदमतगान हाजिन
नया - उस ने इस से कहा कि आज मेरा आदमी
हाजिन नहीं है तुम मेरे साथ दरबार यलो -
कहा बहुत प्रब - इस ने उसे यात्र पैसे देके कहा
कि सारे दिन दरबार में रहना होगा तुम इनके
पान लेके यात्र गिलौनी लगवा लाओ जब मैं
इशानः करूँ तब दो पीली दीजो - मैं आगे जा
ना हूँ तुम लेकर जल्द आओ ॥ यह कह वह
तो दरबार में जा बैठा और इस ने अपने दिल
में बियाता कि यात्र पैसे के पान से तो मियां का
पेट न भरेगा इससे बिहतन है कि यात्र पैसे की
यात्र नोटी लेयलूँ जो मियां पेट भर जायगा ॥
यह मन में ठान यात्र पैसे की यात्र नोटी ले
नूमाँल में बांध बगल में दबा मियांके रोहों जा

(१७)

जड़ा हुआ : मुनशी ने इसे देखते ही जो इशा
रा कर हाथ बढ़ाया तो उसने नूमा ल से दो मोटी
बोल उसके हाथ दीं - वह देखते ही हक्काबक्का
हो लगा इस की तरफ देखने - उसके तौर बिगड़
देख यह बोला भैंडी तरह दीदे फाड़ फाड़ देखै
सैं के मैं नहीं आई - दो और धनी सैं : यह सुन
वह शर्मिंदः हो अपने दिल में कहने लगा कि
किसी ने सय कहा है कि अनाड़ी का सौदा बानह
बाद

मक ८६

एक नमींदार के दो बेटे - पर उन दोनों में
हमेशः अनबनाव रहता एक एक को न देख सकता
जब उन का बाप मर गया तब वे दोनों आपस में
लड़ने लगे - निदान बड़े भाई ने छोटे को नमीं
दारी से बेटपल कर मात्रके निकाल दिया तब
वह किसी और बड़े नमींदार को अपने बड़े भाई
पर मढ़ा लाया - उसने चाते ही जड़ी सवारी

(६८)

उसे मात्र लिया और सारी नर्मोदात्री को अपने
कबजे में किया - जो मछा लाया था विसे कुछ प्याने
को कर दिया : यह मात्रा देय किसी ने तुल
सी दास गुसाई के आगे जाके कहा कि महाराज
दुनयाके आनाम के लिये और मंद नोख की नंद
गी के वास्ते उसने भाई को मरवाया और दीन
और दुनया को गंवाया - इस में उस के हाथ क्या
आया जब भाई भाई से यह सुलूक करने तब
दूसरे से कोई क्या तबकुल नखे : तुलसीदास जी
बोले कि इस बात का अयन मत करो ऐसे और
भी ठौर कहा है -

बधिक बध्या मृग बानतें रुधनौ दियौ बताय
अति हित अन हित हेतु है तुलसी दुनदिन पाय

नक़्क ८७

एक नोख विसी हबशी ने ग्राह में दरपन पड़ा
पाया हाथ में ले जाँ इसने उस में देया तो इसे
अपने ग्रहने का अकस नज़र आया तब लाहौल

(९९)

विलाकुवत इल्लाबिल्लाह पढ़ आनसी पत्र थूक यह
कह फेंक दिया कि जब ऐसा बुना मुंह है तभी
कोई नस्ते में डाल गया है

नक्र दद

अकबर बादशाह के नूबतू एक त्रोल मियां तान
सेन ने सूत्रदास का यह बिसनपद गाया -

जमुदा बान बान यह भाजै - है कोई ब्रज में हित
हमात्रौ यलत गुपालहि नाजै ॥ शाह ने इसके
मचने पूछे - मियां ने कहा जमुदा घड़ी घड़ी यह
कहे है - है कोई ब्रज में दोस्त हमात्रा जो यलते
हूरे गुपाल को नखे ॥ मियां तो गाय समहाय य
लेगरे - इस में आरे बीनबल - हजगत ने उन
से भी उस का अर्थ पूछा - बीनबल बोले पीन ओ
मुनशिद बान कहते हैं दनवाने को सो जमुदा
दनवानः दनवानः यह कहती है कि है कोई
ब्रज में दोस्त हमात्रा जो गोपाल को नजाने दे ॥
इतने में राजा टोड़लमल आरे हजगत ने उन

से भी मन्त्रने पूछे - कहा हज़रत सलामत जसुदा
 कृष्ण की मा - बाग कहते हैं पानी को और दरवाज़े
 को सो पानी का दरवाज़ा हुआ घाट - इस से
 मन्त्रने ये पूछे कि जसुदा घाट घाट यह कहती
 है कि है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो गोपाल
 को चलने से बाढ़ नष्ट : इस दरमियान आये
 मुल्ता फौजी - बादशाहने उनसे भी विस के मन्त्रने
 पूछे - जवाब दिया जहाँपनाह सलामत बाग व
 मन्त्रनीये आब ओ दर - यहाँ आब से मुनाद है
 आंसू और दर से मुनाद है आंख - इस से
 मन्त्रने ये निकले कि जसुदा नेकन यह कहती है
 कि है कोई ब्रज में दोस्त हमारा जो गोपाल को
 नजाने दे : इस अन्तर में आये नवाब ज़ाम ज़ा
 नान - शाह ने उन से भी उस के मन्त्रने पूछे
 तब नवाब ने अर्ज की कि क़िबलये आलम इस
 बिसनपद के मन्त्रने किसी और ने भी कहे हैं :
 इस बात के सुनो ही जिस जिस ने जो जो मन्त्रने

(१०९)

कहे थे हज़रत ने कह सुनाये तब नवाब ने कहा
जहां पनाह ये तो उस बिसनपद के मचने नहीं
पर हां हन एक ने अपने दिल का ज़ियाल
बयान किया ॥ शाह ने फ़तमाया से क्या - बोला
"ह बिगना कलावंत जैसे एक नौम तौम लफ़्ज़ों
घड़ी घड़ी कहता है विस के दिल में यही ज़ियाल
बंधा कि जसुदा भी घड़ी घड़ी कहती है और
बीनबल नज़ात का बाह्यन दर दर का फिरनेवाला
उस के भी दिल में यही ज़ियाल बंधा कि जसुदा
दर दर कहती है और टोड़लमल मुतरुद्दी उस
के ज़ियाल ने यही बन्दिश बांधी कि जसुदा घाट
घाट कहती है और फ़ैजी शाह उनसे सिवाय
जाने के और मज़मून नरुद्दा - इस से उस के
ज़ियाल में आया कि जसुदा नेत्रो कहती है ॥
यिह बात सुनकर शाह ने फ़तमाया कि भला अब
तुम कहो उस के क्या मचने हैं - अर्ज की कि
जहां पनाह बात कहते हैं बाल को सो जसुदा का

(१०२)

बाल बाल यह कहता है कि है कोई ब्रज में दोस्त
हमारा जो गोपाल का चलना मौकूफ़ करने ॥ म
अनः के सुने ही शाह ने पुश हो सब की दाद दी
आन वसअति नबान ब्रज की निहायत तअनीफ़ की

नक़्क़ ८७

किसी राजा की सभा में एक कवि जाके युप याप
बैठ रहा - इस में कोई राजसभा में से बोला कि
आज क्या है जो कविजी तुम मौनगहे बैठे हो -
इसने उस की बात का उत्तर तो न दिया पर यह
दोहा पढ़ा

अतिका भला न बरसना अतिकी भली न धुम्य
अतिका भला न बोलना अतिकी भली न युप्य
इस के सुने ही उस ने भी इस दोहे को पढ़
सुनाया

कौन यह है बरसना कौन यह है धुम्य
कौन यह है बोलना कौन यह है युम्य
फिर कवि ने यह दोहा कह सुनाया

(१०३)

माली याहै बरसना धोबी याहै धुप

साहजो याहै बोलना मोन जो याहै युप

नक्र ९०

कोई कायथ हमेशः अपने बेटे को समझाता और
यिह कहता कि बाबा जान दुनिया बुरी जगह
है - कन तो डन न कन तोभी डन - उस का बेटा
सुन कन यिह जवाब देता लालाजी बुरी बुरेके
वास्ते है - कन तो डन नकन तो न डन ॥ गनज
जब नतब उन दोनों में यही गुफगू होती ॥ एक
रोज उस ने अपना वह घोड़ा सवार को मंगवाया
कि जिस पर कभी सवार न हुआ था और पिला
पिला के पूब तैयार किया था - घोड़े के आते ही
बाप ने बेटे से कहा - बाबा जान इस पर तुम सवार
हो हम देखें - बेटे ने भी यही कहा - - निदान
बहुत सी कहा सुनी के बज्रद उस का बाप ही
सवार हुआ और बेटा पीछे पीछे देखता मसला -
इस में कई एक शयर्सो ने देख कन कहा - देखो

(१०४)

यिह क्या कमबख्त है कि कबन में पांव लटका युका
चैन तो भी इस की हवस नहीं गई - जवान बेटा
पीछे जूती मटकाता आता है चैन आप घाड़े
पर मढ़ा जाता है ॥ यिह सुन वह उतर पड़ा
चैन बेटे को मढ़ा आप पीछे पीछे देखता मला
फिर कई आदमी देख के बोले कि देखो यिह क्या
नालाइक चैन नाजलफ है जो आप सवार हो
बाप को जलेब में दौड़ाता है ॥ यिह सुन आगेबढ़
वे दोनों मढ़ लिये तब कोई बाल उठा कि ये क्या
मसजने हैं जो एक घाड़े पर दो लदलिये हैं ॥
यों सुन वे दोनों उतर पड़े चैन साईस ने घाड़ा
डुनिया लिया ये पीछे पीछे देखते मले तब इन्हें
देख एक ने एक से कहा कि भाई देखो हजाम
का माल मुफ्त जाता है चैन किसी के काम नहीं
आता ॥ इस बात के सुनते ही कायथ ने बेटे से
कहा क्या बाबा जान दुनिया की ज़बान से बयाने की
कई चैन तदबीन हो तो कत्रो मुह से तो अब

(१०५)

कुछ नहीं बन जाती - ला जवाब हो वेटा बोला -
लालाजी तुम समय फ़रमाते थे दुनिया बुनी जगह
है - कन तो डन न कन तो भी डन इस का कुछ
इलाज नहीं

नका ९९

एक शख्स अपने शहर से तबाह होकर पत्र शहर
में गया जाते ही वहां उस ने थोड़े से रुपयों से
आखत की दुकान की और बहुत सा कपड़ा वाम
करके उस ने अपनी दुकान यमकाई और तिजा
त बड़ाई ऐसी कि उस की टकरा का उस नगर
में कोई दुकानदार नगहा जो किसी बात में उस
का साम्हना करे - कड़ाकार पांय यात्र मुआमलों
के बिलटने में उस का दिवाला निकला और कैद
पड़ा - निदान वहां ही मरा दिन से छूट निकल
नसका तब किसी ने इस के बनने और बिगड़ कर
मरने का सब अहवाल जा कर एक महाजन की
महफिल में कहा - सुन कर महफिल के लोग

(१०६)

उस के हाल पर बहुत अफ़सोस करने लगे -
साहिब महफ़िल वाला तुम जो इतना अफ़सोस
करते हो सो क्या तुमने कभी यह मसल भी नहीं
सुनी कि

संपत थोड़ी चदन घना बैरी में का वास
नदी किनारे नूयड़ा जब तब होय विनास
इस के सुनते ही ऐक उन में से बोल उठा हां
साहजी सय कहते हो यह वही कहावत हुई कि
चोखी पूंजी असमें जाय

मक़ ९२

ऐक सौदागर बड़ा अपने बाप दादे की सब दौलत
उड़ा पड़ा मुफ़लिस हो लगा दुयप्राने - तब उस
के दिल में आया कि बुर्गेना ने सौदागरी करके
पैसे जमा करे थे - बिहतर है कि मैं भी सौदा
गरी करूं जुदामुहे भी देगा ॥ यह समझ हवेली
वेय यात्र हज़ार रुपये ले सौदागरी को निकला
तो ऐक उसके बाप का गुलाम था सो भी साथ हो

(१०७)

लिया चौर यला यला किसी शहर में पहुंचा :
वहां कलान में देखते सब तरफ सब जिन्स बिकती
है चौर एक चौर एक शय्स कसनद बिछारे
हुका लगाए बैठा रह रह यह कहता है कि मैं
बात बेयता हूं - जिसे दरकान हो मुह से मोल ले
इस ने उस के पास जा हलान रुपरे दे कहा कि
इन की बात हमें दो * उस ने तोड़ा ले कहा -
कि जो छोटे से बड़ा हो वैसे छोटा कभी न जानिये
इस ने कहा चौर - वाला चौर रुपरे दो चौर
लो * फिर इस ने एक तोड़ा दिया - उस ने
कहा - किसी का ऐव देखिये तो उस की पत्रदः
पोशी कीजे * फिर इस ने पूछा चौर वह वाला
चौर रुपरे दो चौर लो * फिर इस ने हलान
दिये तब उस ने कहा - भूय लगी हूई होय चौर
कोई यामे की तवा जुन्न करने तो हलान काम
छोड़ याना याइये * फिर इस ने पूछा चौर
फिर विस में रुपरे ले कहा - बेकदन यावन्द की

(१०८)

नौकरी कभी नकरिये * ग़ज़ज़ दिह मान हज़ज़
तुपसे दे मान बात ले तबाह हो वहां ग़हा और
क़ज़ाक़ान तुह गुलाम उस शहर का बादशाह
हूआ * ऐक नेज़ बाट शाह तज़िज़वां पत्र सुवान
मला जाता था और तुह सौदागर बया साहने
शिकस्तःहाल नंगे पाशों तीन दिन के फ़ाके से
नज़ज़ आया * देखते ही शाह ने फ़रमाया कि
इस शज़स को मेरे नपहंयते पचंयते ज़रूर मकान
पत्र लाओ * लोगों ने हाँ हाथ लेजा हाज़िज़
किया * इस ने आदाब बजाया - तब शाह ने
फ़रमाया - तू मुझे जानता है सय कह * बोला
जहां पनाह आप नीम गुटा है और मुल्क के
मालिक * फिर शाहने दोदफ़ज़ पूछा और इस
ने यही जवाब दिया - तद एश हो उस ने इसे
चपना वलीन किया और सब सलतनत का मुय
तान * ऐक नेज़ महल रुना में बादशाह के पीछे
पीछे मला जाता था कि इस ने देया - जो ऐक

(१००)

पास ज़वास्त शहर के कोतवाल को लिये शराब
पिये नींद में गाफिल पड़ी है : इस ने देखते
ही कमर से दोशाला : दोल उन दोनों पत्र डाल
दिया : शाह फिर कन महल में दाखिल हुए
और यह गुप्त हो अपने घर आया : इस
में उन की आंख जुली तो विन्हीं ने शाह का आना
और वलीन का दोशाला उठाना मञ्जूम किया
कोतवाल तो वहां से निकल वलीन की डिवली पत्र
जा हाजिर हुआ और उस बदमाश ने कपड़े
फाड़ - बाल प्योटा - नमीन में लोट - बादशाह
को बुलाके कहा कि वलीन की यह जान जो तु
झारे रहते मुह पत्र हाथ डाले और बेहतर मत
करे - अफसोस दोशाला मेरे हाथ रह गया और
वह भाग कर निकल गया : जुदा की कसम
पकड़ पाती तो बेटियां काट काट जाती : यह
कह हाथ काट पछाड़्या नमीन पत्र गिरी - उस
की हालत देख और बात सुन शाह ने जफा हो

(११०)

बलीन को बुला भेजा ॥ जितने वृह आवे तितने
रेक नुक़्क़ः फौजदार को लिखा कि जोश्वरस
नुक़्क़ः लेकर आता है विस का सिन फिल फौज
काट के भेज दोगे और इसमें कुछ देनी हुई तो
तुम्हारा सिन नहीं ॥ बलीन के आते ही शाहने
नुक़्क़ः दे के फ़रमाया कि तुम्हारा यह दर्ज
नहीं जो नुक़्क़ः ले फौजदार के यहां जाओ पर
मुझे दूसरे का इतिबान नहीं - इस लिये तुम्हें
भेजता हूं - इस नुक़्क़े का जवाब जल्द लाओ ॥
वृह जो नुक़्क़ः लेके यला तो रास्ते में किसी उम
राने जाने की तवाज़ु की - यह बेला काम
जतून का है और जाना तैयार - मैं क्या करूं ॥
क़ज़ाक़ान को तवाल भी इन के साथ था - अब नाहि
पुशामद बेला कि पीर और मुनशिद आप जाना
नेशिजां फ़रमाइये - तब तक बन्दा नुक़्क़ः का जवाब
ला देता है ॥ बलीन ने नुक़्क़ः उसके हाथ दिया
और आप जाना जाया - जो जाना जाकर उठा

(१११)

तो पान में कसा उस का सिन चान मौजूद हुआ
यिह ले हुजून में गया ॥ शाह ने इतना कह
महल सना में भेज दिया - कि जिस ने तुहे बेहुन
मत किया यिह उस का सिन है ले ॥ तुह देख
उन कन मुप हो गही ॥ फिर बादशाह ने सब
भेद कहकन बलीन से पूछा कि मैं ने तो तेरा सिन
काटने को लिया था - यिह क्या सबब जो कोतवाल
का सिन कटा ॥ बलीन ने जो का तो सब अहवाल
कह सुनाया और नृपसत मांगी ॥ शाह ने फन
माया यिह कभी नहोगा कि अब तुम्हें नृपसत
मिले - वोला जहां पनाह आप को याद है - जो
मैं ने यात्र बात पनीदी थीं ॥ फनमाया मुहे अच्छी
तरह याद है ॥ कहा तीन तो आलमर्दि और
याही यिह है कि बेकदन याबिन्द की नौकरी
कभी नकनिये - इस से अब आप कुछ नफनमाइये
बंदः हनगाह नरहेगा ॥ इतना कह बलीन
नृपसत हुआ और बादशाह शरमिन्दः हो दम

(११२)

प्या गहा

नका ६३

नामगिनाम साहिब को घोड़ों का बहुत शौक था -
एक नोब्त एक अरबी मोल लिया - इस में मुनशी
सुदनुद्दीन ने अन्तर्गति जै गवाही कहा कि इस
घोड़े पर पंजाबी साईस रहे तो इस की चिदमत
बयूबी हो * यह बात सुन साहिब ने इस बल
से साईसों के जमअदान को बुलाकर फरमाया
कि हमें एक पंजाबी साईस लादे और भूल गए *
बीस पच्चीस दिन बज्रद एक नोब्त साहिब को
बुह बात याद आई - वैसे बुलवाके पूछा कि
साईस मिला या नहीं - बुह बोला जुदाबन्द
गुलाम छूँता है अभी नहीं पाया * यह बात
सुन के मुनशी ने कहा - क्या बदलाव है एक
महीने से टालमटाल करता है और साईस नहीं
लादेता - बोला पीर ओ मुनशिद बदलाव के कहे
का मैं बुना नहीं मानता - आप जाविन्द हैं जो

(११३)

मिन्नाज में आवे सो कहिये - पत्र ज़ाविदों के नूबतू
हक़ बात कहने में कुछ ऐब नहीं - तक़सीन मुआफ़
ये मौलवी मुनशी नहोंय जो ऐक के बुलाने से
सौ आन हाज़िर होंय - ये तो साईस हैं मही
नों की तालाश में ऐक आद मिलजाय तो मिल
जाय नहीं तो मिलना महाल : यह सुन साहिब
हंसे आन उम्मेदवार जो मौलवी मुनशी उस
वक्त़ हाज़िर थे शरमिन्दः हुए आन मुनशी सद
गुदीन पशेमान हो दमया रहा

नका ७४

ऐक नेज़ दिल्ली के दो कंगाल बांके शाम के वक्त़
बालाग़ में गये तो उन्होंने देखा कि ऐक हलवाई
मिठाई का पुनया मुंहा मुंह भरा आगे धने
बैठा है - ये उस के साम्हने जा जड़े हुए आन
ऐक ने ऐक से कहा कि इसे नज़र नहीं आता -
दूसरे ने दो उंगलियां उस की आंख के साम्हने
कीं वह बोला यह क्या करते हो - इस ने कहा

(११४)

हम ने जाना था कि तुम्हें दीसता नहीं और जो
दीसता है तो आगे धत्री मिठाई किस लिये नहीं
प्यारा - बोला इस के जाने से घन जाता है ॥
इतनी बात के सुनते ही वे उस की सब मिठाई
या यह कह गये किनेना घन रहे भला
हमाराही घन जायगा और वह बियात्रा अपने
कहने से आप शर्मिन्दः हो त्रोकन बैठ रहा

नक़्क़ ९५

एक दिन राजा सुवाई जैसिंह पंडितों की सभा
किये बैठे थे और शास्त्र ग्रन्थ हो रही थी - इस
में कुछ क्षिप्त जो आया तो राजा ने सब की तरफ
मुखातिब हो पूछा कि पृथ्वी का मध्य भाग कहां है
तो हमें बताओ ॥ इस बात के सुनते ही सब दम
प्यारहे और किसी से कुछ जवाब न बनिआया
तब एक यावे बोल उठा कि धर्मावतार जो आप
मेरे साथ गलौ तो हैं बताऊं ॥ यह सुन राजा
उठ पड़ा हुआ और बोला कि गलो दियादो -

(११५)

वुह भी सभा समेत राजा को लिये किसी मैदान
बियाबान में जा कुछ इधर उधर नाप एक जगह
बनछोगाड़ बोला कि जहां यह सेल गड्यौ है
सोई धरती को बीय है - राजा ने कहा हम कै
से मानें - जवाब दिया - यकौ कहा याहिये न
मानों तो माप लेउ - इस बात को सुन राजा
और उसके साथके लोग लाजवाब हो घर आए

नक़्श ९६

एक जेल् कोई अफीमी दो घड़ी दिन रहे अफीम
का घेला यछा बान्गन की सैन को निकला तो
देखता क्या है कि सेंहीं से भुस और कड़वीं से
भरे छकड़ों का ताते का तांता यला जाता है -
उसे देख इतना कह वुह किसी भले आदमी के
बंदि किवाड़ से भिड़ कर जड़ा हो रहा कि बया
इयो बयाइयो जबरदान धक्का न लगे ॥ इस
में पीनक जो आई तो उसे वहीं जड़े जड़े पहन
भर गुलन गया ॥ निदान जब घरवाले ने दरवानः

(११६)

जोला तब वुह पछाड़ जाके गिरा और बोला कि
इतना कहा बयाइयो बयाइयो पर गिराये बिन
नरहा ॥ किसी ने सय कहा है कि सनवान गाड़ी
वान मानन्दि है वान है

नक्र ९७

कोई भलामानुस साहिब शऊन नमाने की गर्दिश
से अपने घर में बैठा फाँकेकशी कर रहा था कि
यिह जब सुन उसके किसी दोस्त ने आकर कहा
यिह क्या गजब है कि हाथ पाय के काहिली मुंह
में मूँछें जाँय- वुह बोला मैं क्या करूँ - इन ने कहा
दाना लोगों का कौल है कि इनसान पर जब
तबाही पड़े तब सफ़र करे - इसी बात को अमल
में लाओ ॥ ग़रज़ उस ने आशना की बात मान
सफ़रि दूरदूर किया और यंद बरस में कई
हज़ार रुपये ले अपने घर आया ॥ इसे आहू
दः हाल देखे एक ने एक से कहा कि इस शहर
में तो यिह भूया मरता था बाहर जा कहाँसे

(११७)

इतनी दौलत ले आया जो मालबन होगया - तुह
बोला क्या तुम ने यह कहावत नहीं सुनी जो
इतना तच्छुब करते हो - पूछा क्या - कहा
पान पदानथ सुघड़ नर बनते ले हि बिकायः
जो जो यहे दिसावनां मोल महंगे जायः

नक्र ७८

दिल्ली में किसी चफ़ीमी के छः लड़के थे - एक
दिन वह तीन लड़कों को साथ ले हज़रत कुतब के
मेले में गया - वहाँ भीड़ भड़का देय यह डरकर
एक लड़के को काँधे पर यढ़ाय - दूरे को गोदी
में ले - तीसरे का हाथ पकड़ चल ग हो जो एक
तनफ़ पड़ा हुआ तो पीनक में आयाः पहन एक
बज़द मेले में कुछ हुस्नड़ जो हुआ तो वह पीनक
से यौक काँधे के लड़के को नदेय बहुत घबरायाः
निदान यो कहता कहता कोतवाल के पास आया
कि हाथ मेरा लडका ज़ाया गया - कोतवाल ने
पूछा - तुम्हारे कै लडके हैं - बोला छः उन में से

(११८)

एक ज्योया है : कोतवाल ने सुनके ठंढे त्रिये को
उसके साथ कर दिया - वह तमाम दिन उसे सारे
शहर में लिये फिरा : चायिन तो हींय शाम के
वक्त जो घर में धरा तो दरवान की यौयट लडके
के सिर में लगी वह नोया तब यह बोला ऐ कम बप्प
ना शुदनी - तमाम शहर में ज़राब कर मुहे तुला
के जो तू अब नोया पहले ही कैं न बोला जो मैं
इतना ज़राब नहोता : इस बात को सुन किसी
उस के आशना ने कहा कि भाई जो मसूल हम
सुनते थे सो तुम ने सय कर दि ज्यार्ड कि बगल में
लडका और शहर में ठंढेना

नक्र १११

शहर कलकत्ते के बीय कोर्ड मौलवी साठ सत्तर
बत्तस के सिर में ज़िज़ाब कर रात के वक्त कुटनियां
लगाय एक हिंदूस्तानी बीबी को निकाह कर ला
या - वह रात भर तो जवान के धोये लुश नही
पर भर होते ही इसके यहने की हर्नियां और

(११७)

बालों की सपेटी हाथ पावों की सज़ी बर्तों की कनज़ी
देख सुन लगी बुटनियों को गालियां देदे सिन
पीठ पीठ वेइ झियात्र पुकात्रपुकात्र जोने चात्र इ
नादः निकलने का भी किया पत्र हया और शर्म
ने ननिकलने दिया - यात्र नायात्र दुनिया से वे
नान मनमान ग्रहने लगी :: एक नाल मौलवी
साहिब कलप लगाने की तैयारी कर रहे थे कि
इसने दूर से देख चसील को पुकात्र के कछा
रे मामा रे मामा इस बूढ़े ज़बीस से पूछ कि एक
दफ़्तरः काला मुंह करके तो मुझे दाम में लाया -
अब किसे बरबाद करने को नू सियाह बनता है -
इतनी बात सुन शर्मिन्दः हो मौलवी ने उस
दिन से फिर ज़िज़ाब न किया

नज़्म १००

शाह जहां बादशाह क शहनादे दानाशिवोह को
इल्मि नजूम से बड़ा शैक था - नजूमी और जौतयी
हमेशः नौकर रहते एक एक से अदाबत नयता

(१२०)

पत्र शहनादे के ज़ौफ़ से कोई किसी का कुछ कर
नसकता ॥ एक जेठ का वृषा नज़ूमियों ने शहनादे
को सिखाया कि जुदाबंद इन जोतिषियों से पूछिये
कि भैयाल कब आवेगा - शहनादे ने सब को
बुला कर पूछा और कहा कि या तो तुम भैयाल
का आना बताओ - नहीं मेरे शहर से निकल जा
ओ ॥ यह बात सुन जोतिषियों ने अर्ज की कि
धर्मावतार आठ दिन में इस का उत्तर देंगे तो
भला - नहीं आप का नगर छोड़ देंगे ॥ इतना
कह बाहर आ एक मकान पर बैठ ये फिक्र करते
थे कि विसी मौबे ने इन्हें फिक्रमन्द देण पूछा -
बाबाजू आज कहा है जो तुम भावित हो रहे हो
विन्हीं ने सब माजिना कह सुनाया तब मौबे बोला
तुम मेको लैयलै याकौ उत्तर हैं दै उंगौ ॥ इतनी
बात इसके मुंह से निकलते ही वे चारों हाथ मौबे
को हुजूर में लगये और कहा कि भैयाल का
अहवाल दे कहेंगे ॥ शहनादे ने फ़रमाया अच्छा

(१२१)

कहै ॥ योवे बोला धर्म मूर्त जा समैं भगवान ने
दृष्ट नयने की इच्छा की ता समैं द्वै मनुष बनाये
और ऊपर सो नोये नर्क में डार दये - तिन में
एक मुंह के बल गिरौ और दूसरौ यूतड़ के -
मुंह के बल गिरनवारौ मुसलमान भयौ और दूस
रौ हिंदू - एक को दृष्ट नोये कौ नही और
दूसर को ऊपर कौ ॥ याही ते जातघी आकाश
की सब बात जानतु हैं - ग्रहन कौ हैं नो ये बताय
देंगे और भैयाल की बात बितते पूछै वे बतावेंगे
योवे की यह जुगत सुन शहनादे ने हंसकर
कहा इस की दलील क्या है - बोला याही लिये
भोर उठ मुसलमान मुंह धोवतु हैं और हिंदू
जंगल जातु है - या कौ यही प्रमान है ॥ इस
हाजिर जवाबी और बेबाकी से प्रुश हो शहनादे
ने योवे को इनआम दिया और जातघियों को
बहाल किया

तमाम शुद्ध

(१२२)

ग़लत नामः

ग़लत सहीह सफ़हः सतः

जाता हे जाता है ७ १७

शामस शामसे १८ ५

कहक कहके १९ १२

शामवो शामको २२ ३

बालूओ बालूओ २२ १७

बदतीनता बदनीयती २३ ४

रोकनाळ रोक्नेाळ २४ ५

कासेज कीसेज २९ १६

हागी होगी ३१ ६

वस्य वस्फ ३२ ११

तू तूल ३५ १६

इसनेमैं इसमेंमैं ३७ १७

गय गये ४१ १

बलन्दी बुलन्दी ४१ १६

रलामत सलामत ५० १

(१२३)

गलत	सहीह	सफह:	सतन
वा	का	५०	१०
मुवः मः	मुवः हः	५३	१३
प्याडा	प्यडा	५४	१०
अकेल	अकेली	५५	७
जागी	जोगी	-	१३
बाधंबन	बाधंबन	-	-
मुदा	मुंदा	-	१४
हंहला	हंहला	६६	३
नाजान	नाजाने	६८	१
दिय	दिया	७३	१७
उसनन	उसने	७९	१
वायथ	कायथ	८२	१२
गुनूदे वक मुयसे	गुनूदे वके मुयसे	८३	१
वालेवा	वालेको	८४	१२
याकमें	याकेमें	८५	१
मेन	मेने	८८	१४

(१२४)

गलत	सही	सुफहः	सतत
आपन	आपने	१	२
कोई	कोई	११	१५
काई	कोई	१०४	१७
नकअ	नकअ	१५०	१५
आन	आन	१११	३
क	के	-	१५
४१	-	१३३	४
३३	३३	१३३	५
२३	२३	१३३	१
१३	१३	१३३	६
०३	०३	१३३	१
५३	५३	१३३	१
६३	६३	१३३	१
७३	७३	१३३	१
८३	८३	१३३	१
९३	९३	१३३	१
१०३	१०३	१३३	१
११३	११३	१३३	१
१२३	१२३	१३३	१
१३३	१३३	१३३	१

(١٥٨)

صفحه

نظر

غلط

صحیح

۱۲۵

۱۳

آیا

۱۳۳

۴

وینگو

وینگو

۱۳۴

۷

آرت

آرت

۱۳۸

۹

شعو

شعو

۱۵۲

۸

اسیل

اصیل



بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

طریح

طریح

طریح

بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

بدره

مفتی شطر غلط صحیح

۵۱ ۱۶۱ ہند سال ہند سال

۵۵ ۶۱۱ گچہ گچہ

۶۶ ۲۱ قطع قطع

۷۸ ۱۲ چار چار

۱۰۱ ۳۱ توت توت

۱۰۲ ۹

۱۰۵ ۲ شہ شہ

۱۱۸ ۹ ہی ہی

۱۱۹ ۱۱ انہو نے انہو نے

۱۲۸ ۱۳ میرا میرا

۱۲۹ ۳ مرنے مرنے

۱۳۳ ۱۱ دیکھ دیکھ

(۱۵۶)

غلط نامہ

صحیح

غلط

نظر

صحیح

دکھ

دکھ

۸

۲۲

تھے

تھے

۱۳

۱۱

پے

پے

۱۳

۱۳

یہ

یہ

۳

۱۳

غم

غم

۳

۱۴

ایک

ایک

۸

۲۱

نے

نے

۱۲

۲۵

کو

کو

۱

۲۶

اس کے

۱۱

۲۶

وارا

وارا

۳

۲۸

بادشاہ

بادشاہ

۱۳

۳۸

شہر کے بل گرن وارو مسلمان بیو اور دوسرو
 ہندو - ایک کی درشت نیچے کوں رہی اور
 دوسرے کی اوپر کوں * یا ہی تیس جو تیشی آکاش
 کی سب بات جانت ہیں - گر ہن اکو ہونوں
 یے بتائے دینگے اور بہوں چال کی بات
 روشتیں ہو چھوڑ دے بتا دینگے * چوہے کی اہم
 جگت سن شہزادے نے ہن کر کہا اس کی
 دلیل کیا ہے - بولا یا ہی لئے بہور اٹھ مسلمان
 منہ دھو وٹ ہیں اور ہندو جنگل جات ہیں -
 پا کو یہی پرمان ہے * اس حاضر جو ابلی
 اور پیا کی سے خوش ہو شہزادے نے چوہے
 کو انعام دیا اور جو تیشیوں کو بحال کیا
 * تمام شد *

چوڑا دینگے * اتنا کہ باہر آ ایک مکان پر بیٹھ
 یہ فکر کرتے تھے کہ کسی چوڑے نے انہیں فکر مند
 دیکھ یو چھا - بابا جو آج کہا ہی جو تھم بھاوت
 ہزارے ہو - وہوں نے سب ماجرا کہ سنایا
 تب چوڑے بڑا لاقم ہو کڑوں لی چلو یا کڑاوتر
 ہوں دیوئیں گویا اتنی بات اس کے منہ سے
 نکلتے ہی وہے ہاتھوں ہاتھ چوڑے کو حضور میں
 لیگئے اور کہا کہ ہوں چال کا حوالہ دے کہینگے *
 شہزادے نے فرمایا اچھا کہے - چوڑے بڑا دھرم
 صورت جا سمجھیں بھگوان نے سرشت رچوے
 مکی اچھا کی تا کہ میں دو تک منک بنائے اور
 اوپر سوں نیچے نرک میں دار دے - تن میں
 ایک منہ کے بل گریو اور دوسروں چوتہ کہے -

تقل ۱۱

شاہ جہاں بادشاہ کے شہزادے دارا
 شکوہ کو علم نجوم سے برا شوق تھا - نجومی
 اذہر جو تیشی ہمیشہ نو بکر رہتے - ایک ایک سے
 حد اوتار کہتا پر شہزادے کے خوف سے
 کوئی کسی کا کچھ کرنے نہ سکتا : ایک روز
 قابو پانچویں نے شہزادے کو سکھایا
 کہ خداوندان جو تیشیوں سے پوچھئے کہ
 بھوں چال کب آویگا - شہزادے نے سب کو
 بتلا کر پوچھا اذہر کہ یا تو تم بھوں چال کا آنا
 بتاؤ - نہیں میرے شہر سے نکل جاؤ : یہ بات
 جس نے جو تیشیوں نے عرض کی کہ دھرما ڈتار آتھ دن
 میں اس کا اُتر دینگے تو بھلا - نہیں آپ کا نگر

چہرے کی جھڑیاں اور بالوں کی سپیدی
 مانتہ پانوں کی سختی باتوں کی کرختی دیکھ سن
 ہر کسی کشتیوں کو گالیاں دے دے سر پیٹ پیٹ
 ہمیں اختیار پکار پکار رونا اور ارا وہ بگٹنے کا
 بھی کیا پر حیا اور شرم نے نہ بگٹنے دیا۔ چار
 ناچار دنیا سے پڑا رہن مار رہے تھے : ایک
 روز مولوی صاحب کلپ لگانے کی تیاری کر
 رہے تھے کہ اس نے دور سے دیکھ اسیل
 کو پکار کے کہا۔ اے ماما اے ماما اس بوترے
 خیس سے پوچھ کہ ایک دفع کا لاٹنہ کر کے
 تو مجھے دام میں لایا۔ اب کسے برباد کرنے کو
 رو سیاہ کرتا ہے : اتنی بات حسن شرمندہ
 ہوا مولوی نے اس دن سے پھر خضاب نہ کیا

لگی وہ رو یا تب یہہ . نو لا ای کہ بہنخت نامشدنی
 تمام شہر میں خراب کر سمجھ ر لاکے جو تو اب
 رو یا پہلے ہی کہوں نہ . نو لا جو میں اتنا خراب
 نہ ہوتا . اس بات کو سن کسی اُس کے آشنا
 نے کہا . بھائی جو مثل ہم تہتے تھے سو قسم نے
 سچ کر دکھائی کہ . بغل میں لرکا شہر میں
 دھندہ ڈالا

نقل ۹۹

شہر کلکتے کے بیچ کوئی مولوی ساتھ ستر
 برس کے سن میں خضاب کر رات کے
 وقت کٹنیاں لگائے اپک ہندوستان ہی . ہی . ہی
 کو نکاح کر لایا . وہ رات بھر تو جو ان کے
 دھڑکھے خوش رہی پر بھڑا ہوتے ہی اس کے

ایک لڑکے کو کاندھے پر چڑھائے دوسرے کو
 گود میں لے تیسرے کا ہاتھ پکڑا لگ ہو جوں
 ایک طرف کھڑا ہوا توں پینک میں آیا پھر
 ایک بعد میں کچھ ہلر جو ہوا تو وہ پینک
 سے چوٹک کاندھے کے لڑکے کو نہ دیکھ بہت
 گھبرا یا پند ان یوں کہتا کہتا کو تو ال کے
 پاس آیا کہ ہائے میرا لڑکا کھویا گیا۔ کو تو ال
 نے پوچھا تمہارے کی لڑکے ہیں۔ بولا چھ۔ اُن
 میں سے ایک کھویا ہی پند کو تو ال نے سنکے
 دھندوڑے کو اُس کے ساتھ کر دیا۔ وہ
 تمام دن اُسے سارے شہر میں لئے پھرا۔
 آخر روز جینکھ شام کے وقت جوں گھر میں
 دھساتوں دروازہ کی چڑکھت لڑکے کے سر میں

اُس نے آشنا کی بات مان سفر دور
 وراڑ کیا اور چند برس میں کئی ہزار روپیہ
 لے اپنے گھر آیا اسے آسودہ حال دیکھ ایک
 نے ایک سے کہا کہ اس شہر میں تو یہ بہو کھا
 مرتا تھا باہر جا کہاں سے اتنی دولت لے آیا
 جو مالوڑ ہو گیا۔ وہ بولا کہا معنی یہ کہ دولت
 نہیں مہنی جو اتنا تعجب کرتے ہو پوچھا کہا۔ کہا
 پان پدارتھ مسکھڑا ان تو لے ہی رکائیں
 جوں جوں چرتھیں دساوراں مول مہنگے جائیں
 نقل ۹۸

دلی میں کسی افسی کے چہ لڑکے تھے۔ ایک دن
 وہ تین لڑکوں کو ساتھ لے حضرت قطب کے
 صیلے میں گیا۔ وہاں بہیر بہر گا دیکھ یہ دور کر

دروازہ کھولا تب وہ پچھار کھا کے گر ااور
 بولا کہ اتنا کھا پچائیو پچائیو پر گر اے میں مرنا
 کسی نے سچ کہا ہی کہ سارواں گاری
 وان مانند حیوان ہن

نقل ۹۷

کوئی بھلا مانس صاحب مشعو زمانے کی
 گردش سے اپنے گھر میں بیٹھا فاقے کشی کہ
 رہا تھا کہ یہ خبر حسن اس کے کسی دوست
 نے آکر کہا - یہ کہا غضب ہی کہ ماتھ پائے کے
 گاہلی مہنہ میں مونچھیں جائیں - وہ بولا میں
 کیا کروں - ان نے کہا - وانا لوگوں کا قول
 ہی کہ انسان پر جب تباہی پرے تب سفر
 کرے - اسی بات کو عمل میں لاؤ غرض

دیا یا گوں کرا چاہئے نہا تو تو ماپ لئو -
اس بات کو سن راجا اور اس کے
ساتھ کے لوگ لا جواب ہو گھر آئے

نقل ۹۶

ایک روز کوئی افیمی دو گھر میا دن رہا
افیم کا گھو لا چرھا بازار کی شیر کو نکلا
تو دیکھتا کہا ہی کہ سو نہیں کے بس اور
کرو ہی سے بھرے چکروں کا تانتے کا تانچلا
آتا ہی - اُسے دیکھ اتنا کہ وہ کسی بھلے
آدمی کے بند کیوار سے بھر کر کھرا ہوا رہا
کہ بچا ئیو بچا ئیو خبردار دھکا نہ لگے - اس میں
پینک جو آئی تو اُسے وہیں کھڑے کھڑے
پہر بھر گزر گیا : ندان جب گھر والے نے

کسی سبھا کئے بیٹھ تھے اور شاہ تر چر چا ہوا
 رہی تھی۔ اس میں کچھ ذکر جو آیا تو راجا
 نے سب کی طرف مخاطب ہو پوچھا کہ پر تھی کا
 مدد یہ بھاگ کہاں ہی سو ہمیں بتاؤ۔ اس
 بات کے سنتے ہی سب دم کھارہ اور کسی
 سے کچھ جواب نہ بن آیا تب ایک چوڑے
 بزل اُٹھا کہ دھر ما و تار جو آپ میرے ساتھ
 چلو تو ہوں بتاؤں۔ یہ سن راجا اُٹھ کھڑا
 ہوا اور بولا کہ چلو روکھا دو۔ وہ بھی سبھا
 سمیت راجا کو لئے کسی میدان یا بان میں
 جا کچھ ادھر اُدھر ناپ ایک جگہ پر چھی گاڑ
 بولا کہ جہاں یہ سیل گد یو ہی سوئی دھرتی
 کو بیچ ہی۔ راجا نے کہا ہم کیسے مانیں۔ جواب

دھرے بیٹھا ہی تے اُس کے سامنے جا کھڑے
 ہوئے اور ایک نے ایک سے کہا کہ اسے
 نظر نہیں آتا۔ دوسرے نے دو انگلیاں اُس کی
 آنکھ کے سامنے کیں۔ وہ بولا یہ کہا کرتے ہو۔
 اس نے کہا۔ ہم نے جانا تھا کہ تجھے دیکھتا نہیں
 اذرجو دیکھتا ہی تو آگے دھری بیٹھا ہی
 کس لئے نہیں کھاتا۔ بولا اس کے کھانے سے
 گھر جاتا ہی : اتنی بات کے سنتے ہی
 وہ دسکی سب بیٹھا ہی کھا یہ کہہ چلے گئے کہ
 تیرا گھر رہے بھلا ہاں ہی گھر جاؤگا اور وہ بچارا
 اپنے کہنے سے آپ شرمندہ ہو کر بیٹھ رہا

ثقل ۹۵

ایک بڑا جا سوانی چٹنگہ پندرتوں

آوے بڑھ کرے - پر خاوندوں کے روبرو حق
 بات کہنے میں کچھ عیب نہیں - تقصیر معاف
 میرے مولوی منشی نہوئیں جو ایک کے بلانے سے
 سو آن حاضر ہوئیں - میرے تو سائیس بیس مہینوں
 کی تلاش میں ایک آدمہ ملجائے تو ملجائے
 نہیں تو ملنا محال : یہ سن صاحب ہنسے اور
 امیدوار جو مولوی منشی اس وقت حاضر
 تھے شرمندہ ہوئے اور منشی صدرالدین
 پشیمان ہنر دم کھارے

نقل ۹۴

ایک روز دہلی کے دو کنگال بانگے شام کے
 وقت بازار میں گئے تو انھوں نے دیکھا کہ ایک
 حلوائی مٹھائی کا خوانچہ منہا منہر ہو رہا آگے

منشی صدر الدین نے ازراہ خیر خواہی کہا کہ
 اس گھوڑے پر پنجابی سائیس رہا تو اس کی
 خدمت بہ خوبی ہوئی۔ یہ بات سن صاحب نے
 اصطبل سے سائیسوں کے جمعہ ار کو بلا کر فرمایا
 کہ ہمیں ایک پنجابی سائیس لا دے اور
 بول گئے۔ پیس پچیس دن بعد ایک روز
 صاحب کو وہ بات یاد آئی۔ وہ بے بلوا کے
 پوچھا کہ سائیس چلا یا نہیں۔ وہ بولا خداوند
 غلام رہو نہ رہتا ہی۔ ابھی نہیں پایا۔ یہ بات
 سن کے منشی نے کہا۔ کیا بد ذات ہی ایک مہینے
 کے قاتل متعال کرتا ہی۔ اور سائیس نہیں
 لا دیتا۔ بولا پیر و مہر شد بد ذات کہ کرے گا میں
 ہر آنہ نہیں مانتا۔ آپ خاوند پیش جو عزاج میں

گاتوں سب احوال کہ سنایا اور رخصت
 مانگی : شاہ نے فرمایا یہ کبھی ہوگا کہ اب
 تمہیں رخصت ملے۔ بولا جہاں پناہ آپ کو
 یاد ہی جو میں نے چار بات خریدی تھیں :
 فرمایا سمجھ اچھی طرح یاد ہی : کہاتین تو
 آزمائیں اور چوتھی یہ ہی کہ بیقرار خاوند کی
 نوکری کبھی نہ کرے۔ اس سے اب آپ
 کچھ نقرے۔ بندہ ہر گاہ نہ رہیگا : اتنا کہ
 وزیر رخصت ہوا اور بادشاہ شرمندہ ہو
 دم کھارہا

نقل ۹۳

تمام گرام صاحب کو گھوڑوں کا بہت شوق تھا
 ایک روز ایک عربی مول لیا۔ اس میں

کام ضرور کیا ہی اور کھانا تیار - میں کہا کروں
 قضا کار کو تو ال بھی ان کے ساتھ تھا - ازراہ
 خوش آمد بولا کہ پیرو مرشد آپ کھانا نوش
 جان فرمائیے - تب تک بندہ رقعے کا جواب
 لادیتا ہی وزیر نے رقعہ اُس کے ہاتھ دیا اور
 آپ کھانا کھایا - جوں کھانا کھا کر اُٹھا توں خان
 میں کسا اُس کا سر آن سو جو د ہوا : یہ لے
 حضور میں گیا : شاہ نے اتنا کہ محل سرا میں
 بھیج دیا - کہ جس نے مجھ بے حرمت کیا یہ اُس
 کا سر ہی لے : وہ دیکھ کر چپ ہو رہی :
 پھر بادشاہ نے سب بوند کہ کرو زیر سے پوچھا
 کہ میں نے تو تیرا سر کاٹنے کو لکھا تھا - یہ کہا
 سب جو کو تو ال کا سر کٹا : وزیر نے جوں

اڈر وہ بھاگ کر نکل گیا : خدا کی قسم پھر
 پاتنی تو بوتیاں کات کات کھاتی : پھر کمر ماتہ
 کات پچھاڑ کھا زمین پر گری - اُس کی حالت دیکھ
 اُور بات سن شاہ نے خفا ہو و زیر کو بلا بھیجا : جتنے وہ
 آوے تھے ایک رقعہ فوجدار کو لکھا کہ جو شخص
 رقعہ لیکر آتا ہی وس کا سر فی الفور کات کے بھیج
 دو گے اُور اس میں کچھ دہری ہوئی تو تمہارا
 سر نہیں : وزیر کے آتے ہی شاہ نے رقعہ دے کے
 فرمایا کہ تمہارا یہ درجہ نہیں جو رقعہ لے فوجدار
 کے یہاں جاؤ پر مجھ دو سرے کا اعتبار نہیں -
 اس لئے تمہیں بھیجتا ہوں اس رقعہ کا جواب
 جلد لاؤ : وہ جوں رقعہ لیکے چلا توں راستے
 میں کسی اُمرانے کھانے کی تواضع کی - یہ بولا

ایک خاص خواص شہر کے کوٹوال کو لئے
 شراب پئے نیند میں غافل پر ہی :
 اس نے دیکھتے ہی کمر سے دُشالہ کھول اُن
 دونوں پر ڈال دیا : شاہ پہر کر محل میں
 داخل ہوئے اور یہ رخصت ہوا اپنے گھر آیا :
 اس میں اُن کی آنکھ کھلی تو وہوں
 نے شاہ کا آنا اور وزیر کا دُشالا اُتر جانے
 معلوم کیا : کوٹوال تو وہاں سے نکل وزیر
 کی دہواری پر جا حاضر ہوا اور اُس بد ذات
 نے کپڑے پھاڑے - بال کھوٹے - زمین میں لوٹے -
 بادشاہ کو جلا کے کھا کہ وزیر کی یہ جان جو
 تمہارے رہتے سمجھ پر ماتہ ڈالے اور بے حرمت
 کرے افس دُشالا پیڑے ماتہ رہ گیا

ہوا ایک روز بادشاہ تخت رواں پر سوار
 چلا جاتا تھا اور وہ سوداگر بچہ سامنے
 شکستہ حال تنگے پانویں دن کے فاقے سے نظر
 آیا : دیکھتے ہی شاہ نے فرمایا کہ اس شخص
 کو میرے نہ پہنچتے نہ پہنچتے جلد مکان پر لاؤ : لوگوں
 نے ماتھوں ماتھ لے جا حاضر کیا : اس نے آداب
 بجا یا۔ تب شاہ نے فرمایا۔ تو سمجھ جانتا ہی
 سچ کہ : بولا جہاں پناہ آپ نسیم خدا ہن
 اور مملک کے مالک : پھر شاہ نے دودھ
 پوچھا اور اس نے یہی جواب دیا۔ بد خوش
 ہوا اس نے اسے اپنا وزیر کیا اور سب سلطنت کا
 مختار : ایک روز محل برامیں بادشاہ
 کے پیچھے پیچھے چلا جاتا تھا کہ اس نے دیکھا جو

اُس نے توڑالے کہا - کہ جو چھوڑے سے برآ ہو
 سے چھوڑتا کبھی بچائے : اِس نے کہا اور - بولا
 اور رپی دوا اور لو : اِس نے پھر ایک
 توڑا دیا - اُس نے کہا - کسی کا عیب دیکھئے
 تو اُس کی پردہ پوشی کیجئے : پھر اِس نے
 پوچھا اور - وہ بولا اور رپی دوا اور لو :
 پھر اِس نے ہزار دیئے تب اُس نے کہا
 ہو کہ لگی ہوئی ہوئے اور کوئی کھانے کی تواضع
 کرے تو ہزار کام چھوڑ کر کھانا کھائے : پھر اسنے
 پوچھا اور - پھر وِس نے رپی لے کھائے قدر
 خاوند کی نوکری کبھی ندرے : غرض یہ چار
 ہزار رپی دے چار بات لے تباہ ہو ویاں رہا
 اور قضا کار وہ غلام اِس شہر کا بادشاہ

داؤلت اُتر اُپر اُ مفلس ہو لگا دگہ پانہ - تب
 اُسکے دل میں آیا کہ ہزار گوں نے سوداگری کر کے
 پیسے جمع کئے تھے - بہتر ہی کہ میں ہی سوداگری
 کروں خدا سمجھے بھی دینگا : پر سمجھ ہو نیلی
 بیچ چار ہزار روپیہ لے سوداگری کو نکلا -
 تو ایک اُس کے باپ کا مَخلام تھا سو بھی
 ساتھ ہو لیا اور چلا چلا کسی شہر میں پہنچا :
 وہاں بازار میں دیکھے تو سب طرف سب
 مجلس بکٹی ہی اور ایک اور ایک شخص
 مسند بچھائے محفہ لگائے : بیٹھا رہ رہ رہ کرنا
 ہی کہ میں بات بیچتا ہوں - جسے درکار ہو سمجھے
 سے مول لے : اس نے اُس کے پاس
 چار ہزار روپیہ دے کہا کہ انکی بات نہیں دؤ :

نے اُس کے بنے اور بگڑ کر مرانے کا سبب احوال
 جا کر ایک ماہ جن کی محفل میں کھانا کھانے کر محفل
 کے لوگ اُس کے حال پر بہت افسوس کرنے
 لگے۔ صاحبِ محفل بولا لا تم جو ایتنا افسوس
 کرتے ہو سو کپا تم نے کبھی یہ مثل بھی نہیں
 مینے کہ لا تمہ لہذا لا یبکون لکم افسوس
 سنیت تھوڑی دن گھنٹا بیری میں کا باس
 ہندی کنارے روکھرا جب تب ہوئے ایتنا
 اس کے سنتے ہی ایک اُن میں سے بول اُٹھا
 ہاں سیاہ جی سچ کہتے ہو یہ وہی کھانا ہوئی
 کہ اوچھی پونجی حصہ میں کھائے
 ثقل ۹۲
 ایک سوداگر بچہ اپنے باپ دادے کی سبب

آئی۔ لا جواب ہو۔ بیٹھا ہوا لا لاجی تہم سچ فرمائی
 تھے دنیا بڑی جگہ ہے۔ کر تو آ رہے نہ کر تو بھی
 قرار اس کا کچھ علاج نہیں
 نقل ۹۱
 ایک شخص اپنے شہر سے تباہ ہو کر پڑشہر میں
 گیا جاتے ہی وہاں اُس نے تھوڑے سے رپیوں
 سے آرت کی دوکان کی اور بہت سا قرض
 وام کر کے اُس نے اپنی دوکان چمکائی اور تجارت
 برپا کی ایسی کہ اُسکی ٹکر کا اُس نگر میں
 کوئی دوکان دار نہ رہا جو کسی بات میں اُسکا
 سامنا کرے قضا کار پانچ چار معاملوں کے بلتے
 میں اُسکا دوا لائے اور قید پر انداز وہاں
 نہیں مرا دین سے چھت نکل نہ سکا شب کسی

دیکھتا چلا :۔ پھر کئی آدمی دیکھ کے بولے کہ
 دیکھو یہ کہا نالایق و ناخلف ہی جو آپ
 سوار ہو باپ کو جلو میں دوڑاتا ہی :۔ یہ سن
 آگے برہ وے دوڑوں چہرہ لئے تب کوئی بول
 اُٹھا کہ یہ کہا سخرے ہیں جو ایک گھوڑے
 پر دوڑ لئے ہیں :۔ یوں سن وے دوڑوں اُپر
 پرے اور سائیس نے گھوڑا اُڑایا :۔
 :۔ :۔ :۔ دیکھتے چلے تب انہیں دیکھ ایک
 نے ایک سے کہا کہ بھائی دیکھو حرام کا مال
 ہفت جاتا ہی اور کسی کے کام نہیں آتا :۔
 اس بات کے مستے ہی کا پتہ نے پتے سے کہا
 کہوں بابا جان دنیا کی زبان سے بچنے کی کوئی
 اور تدبیر ہو تو کرو مجھ سے تو اب کچھ نہیں بن

اُس کے منہ ہی اُس نے تھی اُس دُور کو
پر نہ سنا یا

کون چہ ہی بر سنا کون چہ ہی دُور
کون چہ ہی بولنا کون چہ ہی چپ
پھر کب نے پر دُور کھ سنا یا

مالی چاہے بر سنا دُور ہی چاہے دُور
ساہ جو چاہے بولنا چور جو چاہے چپ
نقل ۹

گوئی گا یہ ہمیشہ اپنے کو سمجھا تا اور
یہ کہتا کہ بابا جان دُنیا بُری جگہ ہے - کرتو
ور نہ کرتو بھی دُور - اُس کا بیٹا سن کر یہ
جو اب دیتا لا لاجی بُری بُری کے واسطے ہے
کرتو دُور نہ کرتو نہ دُور غرض جب لہ تب اُن

ہال گنو سو جودا کا بال بال یہ کہتا ہے کہ
 ہے کوئی برج میں دوست ہمارا جو گویاں کا چلنا
 ہو قوف کرے : معنے کے سنتے ہی شاہ نے خوش
 ہو سب کی داد دی اور وسعت زبان برج
 کی نہایت تعریف کی

نقل ۸۹

کسی را احاکنی سبھا میں ایک کب جا کے چپ
 چاپ پٹھہ را - اس میں کوئی را ج سبھا
 میں سے بولا کہ آج کہا ہے جو کب جی تم سون
 گہ پٹھہ ہو - اس نے اس کی بات کا اُتر
 توند یا پر یہ دوتا پر تھا
 ات کا بھلا نہ بر سنا ات کی بھلی نہ وہ چپ
 ات کا بھلا نہ بولنا ات کی بھلی نہ چپ

گلاوشت جیسے ایک نوام تو لم لفظ کو گھڑی گھڑی
 کہتا ہی اس کے دل میں یہی خیال بندھا کہ
 جو دا بھی گھڑی گھڑی کہتی ہی اور پیربل
 ذات کا باہمن دور کا پھرنے والا
 اس کے بھی دل میں یہی خیال بندھا
 کہ جو دا در در کہتی ہی اور توارل مل
 مستعدی - اس کے خیال نے یہی بندش پاندھی
 کہ جو دا گھات گھات کہتی ہی اور فیتیسی
 شاعر اسے سوائے رونے کے اور مضمون
 نہ سوچھا - اس کے خیال میں آیا کہ
 جو دا رور و کہتی ہی : یہ بات سن کر
 شاہ نے فرمایا کہ بھلا اب تم کہو اس کے کہا
 معنی میں - عرض کی کہ جہاں پناہ پار کہتا ہیں

جہاں پناہ سلاست بار بمعنی آب اور دریاں
 آب سے مراد ہی آنسو اور در سے مراد ہی
 آنکھ۔ اس سے معنی یہ نکلے کہ عیو دار ذکر
 یہ کہتی ہی کہ ہی کوئی برج میں دوست ہمارا
 جو کو پال کو بجائے دے : اس عرصے میں آئے
 نوّاب جانتھا مان۔ شاہ نے اُن سے بھی اُس
 کے معنی پوچھے تب نوّاب نے عرض کی کہ قبلہ
 عالم اس بسن پد کے معنی کسی اور نے بھی کہے
 ہیں : اس بات کے مستثی ہی جس جس نے جو
 جو معنی کہے تھے حضرت نے کہہ مٹائے تب
 نوّاب نے کہا جہاں پناہ یہ تو اس بسن پد کے
 معنی نہیں پر ہاں ہر ایک نے اپنے دل کا خیال
 بیان کیا : شاہ نے فرمایا سو گیا۔ بولا وہ بھارا

اِس میں آئے۔ بیر بل۔ حضرت نے اُن سے بھی
 اِس کا ارتھ پوچھا۔ بیر بل بولے پیر و مُرشد بار
 کہتے ہیں دروازے کو سُو چسودا دروازہ دروازہ یہ کہتی
 ہی کہ ہی کوئی برج میں دوست ہمارا جو گو پال
 کو نجانے دے پڑا تھے میں را جا تو آر ل مل آئے
 حضرت نے اُن سے بھی معنی پوچھے۔ کہا حضرت
 سلامت چسودا کرشن کی ما۔ بار کہتے ہیں پانی
 کو اُڑو روازے کو سُو پانی کا دروازہ ہوا
 گھات۔ اِس سے معنی یہ ہوتے کہ چسودا
 گھات گھات یہ کہتی ہی کہ ہی کوئی برج
 میں دوست ہمارا جو گو پال کو چلنے سے باز رکھ
 اِس درمیان آئے مُلا قیضی۔ بادشاہ نے
 اُن سے بھی وس کے معنی پوچھے۔ جواب دیا

تب لا حول ولا قوت الا باللہ پر تھہ اُرسی
 پر تھو ک یہ کر۔ پھینک دیا کہ جب ایسا ہر اٹھنے
 ہی تھی کوئی رستے میں دال گیا ہی

تقل^{۸۸}

اکبر بادشاہ کے روبرو ایک روز میان
 تمان سلیم نے سورا اسل گایہ نفس پد گایا۔

جسد ا بار بار یہ بھا کھی

ہی کوئو برج میں ہٹو ہار و

چلت گیا لہ را کھی

شاہ نے اس کے معنے پوچھے۔ میان نے گرا

جسود ا گھری گھری یہ کہہ ہی۔ ہی کوئی

برج میں دوست ہار ا جو چلتے ہوئے گو پال

کو رکھے میان تو گائے سمجھائے چلے گئے

ہمارا آج دنیا کے آرام کے لئے اور چند روز کی
 زندگی کے واسطے اُس نے بھائی کو مروایا
 اور دین و دنیا کو گنوا لیا۔ اس میں اُسکے
 ماتہ کہا آیا جب بھائی بھائی سے یہ سلوک
 کرے تب دوسرے سے کوئی کہا تو قہر رکھے
 تلخی داس جی بولے کہ اس بات کا اخراج
 مت کرو ایسے اور بھی تھوڑا کہا ہی
 ہر ہک بد ہو مرگ بان تیں رُو دھو دیتا ہے
 ات ہت ان ہت ہوت ہی تلخی درون پائے

نقل ۸۷

ایک روز کسی حبشی نے راہ میں درپن
 پر آ پایا۔ ماتہ میں لے جوں اس نے اُس میں
 دنگھا تو اسے اپنے چہرے کا عکس نظر آیا

سچ کراہی کہ اناری کا سودا بارہ بات

نقل ۸۶

ایک زمیندار کے دو بیٹے۔ پر اُن دونوں میں
 ہمیشہ ان بناؤں رہتا ایک ایک کو نہ دیکھ
 سکتا۔ جب اُنکا باپ مر گیا تب وہ دونوں
 آپس میں لڑنے لگے۔ - مَدا ان بڑے بھائی نے
 چھوٹے کو زمیندار سے بے دخل کر مار کے نکال
 دیا تب وہ کسی اور بڑے زمیندار کو اپنے
 بڑے بھائی پر چڑھا لایا۔ اُس نے اُٹھ ہی کھڑی
 سواری اُسے مار لیا اور ساری زمیندار
 کو اپنے قبضے میں کیا۔ جو چڑھا لایا تھا وہ
 کچھ کھانے کو کر دیا۔ یہ ماجرا دیکھ کسی نے
 تلسی واس گسانٹیں کے آگے جا کے کہا کہ

چار اکہ چار پیسے کے پان سے تو میاں کا پیٹ
 نہ بھرے گا اس سے بہتر ہی کہ چار پیسے کی چار
 روٹی لے چلوں تو میاں پیٹ بھر کھا ئیگا :
 یہ من میں تھا ن چار پیسے کی چار روٹی لے
 رومال میں باندھ بغل میں دبا میاں کے سونہیں
 جاکر آ ہوا : منشی نے اسے دیکھتے ہی جوں
 اشارہ کر ہاتھ برہا یا توں اس نے رومال
 سے دو روٹی کھول اس کے ہاتھ دیں - وہ
 دیکھتے ہی ہکا بکا ہو لگا اس کی طرف دیکھنے
 اس کے طور پر بگرے دیکھ یہ ہو لا ہوندا می
 طرح دیدے پھاڑ پھاڑ دیکھ کسی کے میں
 نہیں کھائی دواور دھری میں : نہ سن
 وہ شرمندہ ہوا اپنے دلمیں کہنے لگا کہ کسی نے

نہ وہ جسم ہی رہا اب کہا دیکھو گے - ایتنا
کہہ چنپت ہوا

ثقل ۸۵

کسی شنشی کے پاس ایک باہرے کا سید
نڈ کر ہوا - ایک روز اُس کا خدمتگار حاضر
نہ تھا - اُس نے اُسے کہا کہ آج میرا آدمی
حاضر نہیں ہی تم میرے ساتھ دربار چلو -
کہا بہت خوب - اس نے اُسے چار پیسے دیکر
کہا کہ سارے دن دربار میں رہنا ہوگا
تم ان کے پان لپکے چار گلواری لکوا لاؤ جب
میں اشارہ کروں تب دو کھیلی دیجو - میں
آگے جاتا ہوں تم لیکر جلد آؤ یہ کہہ وہ تو
دربار میں جا بیٹھا اور اس نے اپنے دل میں

نے چار گھاؤ کھائے اور کوئی کہتا تھا پاؤں -
 غرض ہر ایک نے اپنے اپنے لڑنے اور زخم
 کھانے کا احوال بیان کیا ۔ ایک بوڑھا تھوڑا
 اُن کے پاس بیٹھا تھا بولا کہ میاں جو انی میں
 ہم بھی شیکروں لڑائیاں لڑے اور ہم نے بھی
 ہزاروں زخم کھائے ایسے کہ کہیں بدن پر
 تل دھرنے کی جگہ باقی نہیں رہی - ہمارے آگے
 اب کوئی کہا لڑیگا اور کہا زخم کھا بیگا ۔ اتنی
 بات کے سہتے ہی اُن میں سے ایک جوان
 حقا ہو کر بولا ہرے میاں کہہ رہے تو اُتارو
 دیکھیں تم نے کہاں کہاں گھاؤ کھائے ہیں ۔
 وہ ہنسکے بولا میاں گہرو نہ وہ زمانہ زمانہ وہ
 دن رہے نہ وہ جو انی رہی نہ وہ تیار رہی

اور لگا ملک بہ ملک پھر نہ۔ جس ملک
 میں گیا وہاں اُس نے ہر ملک کا آدمی دیکھا
 تو حیران ہوا۔ اندران کہتے مہینے میں پھر کر
 گرو کے پاس آیا اور تعجب کر پوچھا کہ
 مہاراج یہ کہا آشیرج ہی جو ایک ملک
 میں آدمی پیدا ہوے اور دوسرے میں جا کر
 بسے۔ گرو بولا کہ بابا تو جو اتنا اچنپا کرتا ہی
 سو کہا تو نے یہ دوتا نہیں سنا۔

کتک کاشی۔ کتک کاشمیر کتک خراسان گجرات
 ہر سرام یا جیو کی پرالبدھ لہنجات

نقل ۸۴

کسی مکان کے پیچ پانچ سات سپاہی بیٹھے
 آسمین دینگ مارتے تھے۔ کوئی کرتا تھا میں

یوں سمجھو قاضی نے کہا جو تم نے کہا سو سب
 سچ پر اب تم ہم سے کہا چاہتے ہو۔ یے بولے ہم
 نے اولاد پیش ہمارے مال اموال کے وارث
 ہونے سے مستی دیجوز۔ یہی ہم چاہتے ہیں : آخر
 مارے شرم کے قاضی نے اُن کی بات قبول کی
 اسلئے کہ کوئی اور نہ سنے

نقل ۸۳

ایک کھتری دنیا سے بیزار ہو گئے کسی مانک
 پنتھی فقیر کا جا کے چٹلا ہوا : کتنے ایک دن پیچھے
 ایک روز اُس نے گروسے کہا کہ معراج میرا
 جی چاہتا ہے جو آپ کی آگیا پاؤں تو پر تھوی
 پر دچھٹا کر آؤں۔ گرو نے کہا بہت اچھا : اتنی
 بات کہ سنتے ہی وہ دندوت کر پدا ہوا

نندولا لیجا کے سو نہیں کھڑے ہو دکھلا و جب
 وہ پہچان کے تمہیں پاس بلاوے تب
 مسم نہ الے لیجا کے سب احوال کہیو۔ اپنا احوال
 من کر وہ تمہیں بہتیرا دے راویگا پر تم نہ دریو
 اذر کہیو کہ جو تم ہماری بات نہ مانو تو چل کر میانجی سے
 پوچھ لو : غرض وہ دوزنوں جو ن پور گہ
 اذر اسی طرح کرنے لگے تب قاضی نے ان دوزنوں
 کو پاس بلا کر پوچھا کہ تم یہ کیا کرتے ہو۔ بولے
 نہ الے چلو تو اس کا احوال کہیں : قاضی
 انہیں نہ الے لینگیا پھر انہوں نے سب احوال کہ
 سنایا۔ قاضی نے دریافت کیا کہ کسی شخص
 نے انہیں بہکا یا ہی اس سے ان کی بات
 بن قبول کئے کسی طرح میرا پیچھا نہ چھوڑینگے۔

ملانے اُن دونوں کی بات سننے دہمیں
 چاراکہ یہ پیئے کے اندھے مت کے ہینے گاہے کے
 پورے میری قسمت سے اُن ملے ہش
 ان سے رپی کہوں نہیں لیتا۔ یہ سب
 ان نہ اُن سے کہا کہ ہزار رپی دو اور
 گدھ کو باندھاؤ۔ ایک برس کے بعد آکر
 لے جائیو۔ اس بات کے مستہ ہی دے جھت
 تو را دے گدھا باندھ گئے اور ایک برس بعد
 پھر اُن مرد جو د ہوئے۔ اُن کو دیکھتے ہی میاں بھی
 نہ کرا کہ دو دن پہلے آتے تو اُسے پاتے ا بتو وہ
 جا کے جو ن پور کا قاضی ہوا۔ اُنہوں نے پوچھا
 کہ اب ہم اُسے کہوں کر پاویں۔ میاں بھی نے کرا
 کہ تم اُس کے ماندھنے کی رسی اور دانا کھانے کا

نیکی بر باد گدہ لازم - میں نے ایک برس
 محنت مشقت کر لکھا پر گدہ سے آدمی
 بنایا اور تم نے یہ بات کہی - اب مجھے تم سے
 کچھ لینے پانے کی اُمید باقی نہ رہی میری اس
 کا کلمہ سن کر لر کے کا باپ تو میا نجی کو بہت
 سی تسلی دے کے چلا گیا پر ایک دھوپ
 اور دھوپ بن برے دو لٹمنہ جنہوں نے میا نجی
 کی زبانی یہ بات رستے میں کہہ کرے ہوئے کے سننی
 تھی کہ میں نے تمہارے لر کے کو برس دن
 میں لکھا پر گدہ سے آدمی کیا - دے
 دو نوں جو رو خصم آمو جو د ہوئے اور ہاتھ
 جو آر کر بولے کہ میا نجی صاحب جتنے رہے چاہئے
 لیجئے اور میرے بھی گدہ کو آدمی بنا دیجئے

کہ راجا صاحب تمہارے یہاں مل لفظ کے کہا
 معنی ہیں۔ وہ نہیں سمجھ کر راجا نے جواب
 دیا کہ مرزا صاحب جو لفظ بنگ کے معنی ہاں
 سوئی مل کے ہیں : اتنی بات کے سننے ہی وہ
 مغل بہت شر مندہ ہوا : خلاصہ اسکا یہ ہی
 کہ سنسکرت میں یے وونوں نام گو ہی کے ہیں

نقل ۸۲

کسی مکان پر کوئی ملا بیٹھا لر کے پرہاتا تھا کہ
 ایک لر کے کے باپ نے آکر اُسے الہنا دیا۔ میاں
 صاحب میرے بیٹے کو آپ نے کچھ نہ تر بیت
 کیا۔ دیکھو اب تک چھو کروں کے ساتھ وہ
 کوہلتا پھرتا ہی اور میرا کہا نہیں مانتا : اتنی بات
 کے سننے ہی میاں نجی خفا ہو کر بولا کہ ہاں صاحب

یہاں جا کر مُرید ہوا اور پیر کی خدمت میں
 آتھوں پھر حاضر رہنے لگا : خدا کا چاہا چھ مہینے کے
 عرصے میں اُس کا ایسا کام بکرا کہ کھانے
 پینے کو بھی کچھ پاس نہ رہا : ایک روز
 پیر نے اسے اُداس دیکھ کر کہا کہ بابا کیا
 تو نے یہ مثل بھی نہیں سنی جو اتنا فکر کرتا ہی -
 الہ داد کرتا کی باتیں کہا نکر نسا کہا نکرے
 ہاتھی مار گر دمیں دالے ادنا کے سر چھتر دھرے
 : ریتے بھرے بھرے دھلکا وے
 بھر کرے تو پھیر بھرے

نقل ۸۱

ایک روز اکبر بادشاہ کے روبرو کسی مُغل
 نے ازراہ ظرافت راجا تُوَرل مل سے پوچھا

نقل ۷۹

کسی دن تلسی داس گائیں کتنے ایک آدمیوں
 کے پیچ کہیں بیٹھ گہان چرچا کرتے تھے۔ اس میں
 اس راہ سے کسیکی برات آنکلی۔ اس کے
 بابے کی آواز سن سب کے من در چیتے ہوئے
 تب تلسی داس بنے۔ اُن کو ہنستا دیکھ
 وں میں سے کسی نے پوچھا۔ مہاراج آپ کہا
 دیکھ کر بنے۔ جواب دیا دُنیا کی بھول دیکھ کے۔
 بولا سو کیا۔ اوتر دیا

بھولے بھولے پھرت ہیں آج ہمارو بیباہ
 تلسی گائے بجائے کے دیت کا تھ میں پائے

نقل ۸۱

ایک براسو داگر کسی صاحب کمال فقیر کے

وہ بولا میں دے چکا ہوں۔ اس میں دونوں
 سے رد بدل ہونے لگی اور بہت سے لوگ جمع
 ہو گئے تب اس بانگہ نے کہا کہ میں نے ایک
 بھلے آدمی کے دیکھتے اسے رپیا دیا ہی نہ مانے
 چلکر پچھو ا دوں۔ لوگوں نے کہا اچھا تو کہتا ہی
 تو دوکان پر کہوں نہیں لیجاتا * لوگوں کے کہنے
 سننے سے حلوائی نے دوکان پر جا اس مٹھائی
 کھانے والے سے پوچھا کہ میاں صاحب آپ سچ
 کہتے! سنئے مجھے رپیا کب دیا ہی۔ وہ بولا
 اے! انہوں نے تو رپیا میرے دیکھتے دیا ہی
 پر کہیں میرا رپیا نہ بھول جائیو * یہ کہہ کر
 دونوں اسے احمق بنا مٹھائی کھا حے گئے اور
 وہ پیارا اور جھیکہ کر پٹھہ رہا

پانی سے زیادہ شہر میں کوئی پکا مال نہ بناوے۔
 اُسی وقت مناوی پھر گئی تھی سے جا رہے

تین من پانی سے زیادہ پکا مال نہیں بنتی۔

۶۸ نقل ۶۸

دو دلی کے ہانکے پرانے مال کے اُترانے کھانے والے

کسی مکان سے یہ منصوبہ کر کے اُٹھے کہ آج

بازار میں چکر میں کوڑی پنے صفت کنی

مٹھائی کھا یا چاہئے۔ اور آگے پیچھے ہو بازار میں

پہنچے۔ ایک تو جاتے ہی لاپی کی مٹھائی چلو

لگا حلوائی کی دوکان پر بیٹھے کھانے اور دوسرے

نے اُسی حلوائی سے آٹھ آنے کی مٹھائی اور

ادھیلی کے تگے لے اپنی راہ لی۔ حلوائی نے دُور

کر اُس کا دامن پکڑا اور کہا میرا پیا دُور

بیوہ سیدلے پہنچے : ایک روز کسی سقے کا بیٹل
 مہر می پکا حال اُس رتے کے پاس آن کر
 کھڑا ہوا - سقا کسی کے یہاں مشک دوانے
 گیا تھا - بیٹل نے رتے سے سر کھجلا یا اُس کے
 سینک کا جھٹکا جو لگا ایک بارگی سب کھٹتا لیان
 باج اُتھیں - مستے ہی شاہ نے فرمایا دیکھو کون
 ہی - لوگوں نے جھٹ خبر دی کہ پیر مرشد اور
 تو کوئی نہیں ایک بہشتی کا بیٹل ہی - حکم کیا
 کہ اُسے اُس کے مالک سمیت لے آؤ - لوگ
 فی الفور لے گئے : شاہ نے فرمایا کہ اسکی پٹکال
 کا پانی تو لو کہ کشتا ہے - تو لکرا عرض اکی
 کہ جہاں پناہ سارہ پانچ من ہی - پستے ہی
 بادشاہ نے حکم کیا کہ آج سے سارے تین من

کھسکانے اور اُسکے ساتھ کے لشکر کے لگے اُڑانے
 اسمیں کسی نے دیکھ کر ایک سے کہا کہ
 دیکھو کسی کسی کو رومی کوئی اُڑا رہا ہے۔
 دوسرے نے جواب دیا کہا تم نے یہ مثل نہیں
 سنی جو تعجب کرتے ہو کہ اندھی پیسے کتنا کھائے
 پانی کا مال کا رتہ جائے

نقل ۷۷

شاہ جہاں بادشاہ نے دیوان خاص سے لے قلعے
 کے صدر دروازے تک ایک رستہ بند ہوا دیا تھا
 اور اُس میں گھنٹا لیاں گنتھوا چھوڑا اُس کا بیچ
 بازار میں دلوادیا تھا۔ اُس واسطے کہ جو
 کوئی فریادی آوے سو اُس رستے کو کہینچے۔
 گھنٹا لیاں باچیں اور فریادی کی فریاد حضور میں

کا پرمان کہا ہی۔ جواب دیا کہ پر سدہ کو
 پرمان کچھ نہیں چاہیت۔ بولا سو کہا۔ اُس
 نے کہا کہ چو کا یا ہی کے مارگ سوں نکسیو ہی *
 اس بات کے سنتے ہی وہ پندت ہنکر رہ گیا

نقل ۶۶

ایک۔ سپا ہی بر ا جو اری تھا جب جیتتا تب
 مارے خوشی کے ایسا غافل ہو جاتا کہ کوئی
 اُس کے پہر نہ کے کپڑے بھی اُتار لیتا تو بھی اُسے
 معلوم نہ ہوتا اسی اُمید سے دس پانچ
 شہرے ہر وقت اُس کے ساتھ لگے رہتے اور
 جد قاپا پاتے تہ اُس کا مال اُراتے * اُنڈ
 روز وہ کسی غیر محفل میں جو اکھیلنے کو گیا
 اور لگا جیت جیت رہی اپنے آگے سے پیچھے

کہا ہے۔ اُس نے ہاتھ باندھ کر کھڑے ہوا جواب
 دیا کہ پیر مرشد آپ تو مل میں تو جتنے سب آدمی
 ہاں رہتے ہی ہو پیر مول میں نہیں کہہ سکتا
 کہوں کہ ایک رتی سمجھ نہیں ملتی جو رتی ہاتھ
 لکٹی تو وہ بھی کہہ دیتا! اس لطیفے کے سنتے
 ہی بادشاہ نے اُن سب کو پاؤں دے دیے کہ چھوڑ
 دیا کہ دلائی بکھانا سمجھا رہا تھا حق ہی شوق سے کھاؤ
 اور عرضی کو اپنے والے کو نکال دیا۔
 ایک مستہرا کا چوہ کہیں پھیل پر سوار یوریاں
 کھاتا چلا جاتا تھا کسی گانہ کہج پند تانے دیکھ کر
 طعن کسی راہ سے پوچھا کہ چوہ ہے جی نعم چوہ کے
 میں نہ بیٹھ پھیل پر بیٹھے یوریاں کھاتے جاتے ہو سو اس

کسی کا لے کوئی وے و ر میان دو آنے ریہ لیتے ہیں *
 عرضی کے پر ہتے ہی بادشاہ نے سارے شہر کے
 وٹالوں کو پکروا منگوا یا اور پوچھا کہ تم کس
 بات کی کوڑی کھاتے ہو - عرض کی جہاں پناہ
 بازار میں کوئی چیز آوے پہلے ہم اُس کا مول
 تول کر دیتے ہیں تب خریدار لیتے ہیں - اسی
 بات کی کماٹی کھاتے ہیں * شاہ نے فرمایا
 ہمارا مول تول کر دو تو تو خیر نہیں تو سب
 کو شہر سے نکال دو نگا * اتنی بات کے سنتے
 ہی اُن میں جو چودھری تھا سو بانٹ کا نٹالے
 آگے برآہ بٹھالو لگا اور اُدھر نکلی میں بانٹ
 ڈال تولنے - اس میں کچھ دیر ہوئی تو
 بادشاہ نے کہا کہتا کہوں نہیں گھڑی گھڑی تولتا

عشق کہا شی ہی کسی کا میل سے پو چھا چاہئے *
 تبھی سے وہ صاحب کمال کی تلاش میں تھا
 کہ ایک گائیں اسے ملا - ان نے دندوت
 مگر اُس سے پو چھا کہ مہاراج عشق کہا شی سمجھ
 دیا کر بتائے * اس کی بات سن اُس نے کہا
 بابا میں نے تو اپنے گردیو کے حکم سے یوں
 سنا ہی

عشق اُسی کی جھلک ہی جوں سورج کی دھوپ
 جہاں عشق تھاں آپ ہی قادر قادر روپ
 نقل ۶۴

ایک دن عالمگیر بادشاہ کو کسی نے عرضی دی
 کہ جہاں پناہ آپ کی بادشاہت میں دلال دن
 دھولے پیچ بازار کے رعیت کو لوٹتے ہیں - مال

اکی پو تلی جھولی سے نکال اتنا کہ اُسکے ہاتھ دی
 کہ بھینالے۔ اس بات کے سنتے ہی بادشاہ
 نے دانتوں میں اُنکلی دے کہا۔ شاہ صاحب تم
 نے کہا کہا۔ بولا بابا سچ کہا۔ پھر بادشاہ نے پوچھا
 کہ تمہارا سوال کہا تھا۔ جواب دیا بابا سوال
 جواب کچھ نہ تھا فقیر کو ایک بات کا امتحان
 کرنا منظور تھا سو کیا۔ تیرے شہر کے دروازے
 پر لکھا ہے کہ ہمت مردان مدد خدا سو فقیر
 کے گمان میں جھوٹہ آیا تھا سو نہیں کسی نے سچ
 لکھا ہے : اتنا کہ فقیر وہاں سے روانہ ہوا

نقل ۷۳

ایک کا پتہ نے گانے بجانے کی صحبت میں کسی
 گویے سے یہ شعر سنا :

رات اُلیچتے اُلیچتے اُسے چو بیس پہر گزرے
 تب سمندر نے آدمی کی صورت بن آن کے
 پوچھا کہ فقیر تو کہوں دریا کا پانی نکال نکال بہینگتا
 ہی - بو لا پانی اُلیچکے سوا سیر موتی لو نکا -
 جواب دیا تجھ سوا سیر موتی ملے تب تو پانی نہ
 اُلیچیکا - کہا نہیں - بو لا آنکہ موند میں تجھ موتی
 دیتا ہوں - اس نے آنکہ بند کی اُس نے بہت
 ہی ہرے ہرے سوا سیر کورے موتی لاسکے
 اتھ دے یہ لے دے عادی پہر اُسی دروازے
 میں آ بیٹھا - بادشاہ کو خبر ہوئی - شاہ نے وزیر
 کو بھیج اُسے حضور میں بلوایا اور تعظیم تواضع
 کر مند پر بٹھا یا : غرض جب شاہ زادی
 کو اُس کے سونہیں کہرا کیا تب فقیر نے موتی

رسم ہی کہ سو اسیران پیشدہ موتیوں سے
 شوہر دلہن کی گود بھرے : وزیر نے پھر جا فقیر
 سے بادشاہ کی کہی بات کہی - وہ بہت خوب
 کہہ پوریا بدھنا باندہ موتی لپٹے سمندر کی
 طرف گیا اور وزیر شاہ کے پاس آیا - اُس
 وقت شاہ نے فرمایا کہ جو وہ فقیر صاحب کمال
 ہوگا تو موتی لاویگا نہیں آپ ہی چلا جاویگا اور
 جو صاحب کرامات ہی تو اُسے پیشی دینے
 میں ہمیں کچھ تنگ نہیں کہونکہ دسکا مرتبہ
 ہم سے اعلیٰ ہی - وہ جسے چاہے بات کی
 بات میں بادشاہت بخش دے : قصہ
 وہ فقیر سمندر کے کنارے پہنچ کمر باندہ
 بدھنا ماتہ میں لے لگا پانی اُلیچنے جب دن

مطلوب ہی سو فرمائے بندہ لا حاضر کرے ۛ
 فقیر نے کہا میں بادشاہ کی بیٹی سے شادی کرونگا
 تو مجھے لا دے سو اے اس کے سمجھے اور
 کچھ نہیں چاہئے ۛ اس بات کے سنتے ہی وزیر
 لا جواب ہو پھر کر بادشاہ کے پاس پہنچا - شاہ
 نے کہا کہوں فقیر کو رخصت کر آیا - عرض کی
 جہاں پناہ جو فقیر نے بات کہی ہی تقصیر معاف
 غلام زبان پر نہیں لا سکتا - حضرت نے فرمایا
 کہ لکھ کر دے - اس نے اُن کے فرمانے سے
 اُس کا سوال لکھ کر گزرا نا - شاہ نے سوچ سمجھا
 کے کہا کہ کچھ مضائقہ نہیں اُس سے کہو سو
 سیران ہند ہے موٹی لے آتی شادی
 شاہزادی سے ہوگی - بادشاہوں کے یہاں یہ

کی : اتنا سمجھو۔ پھر پھر اذریہ راؤہ کر
 بڑیا بچھا اسی دروازے میں جا بیٹھا کہ اس
 شہر کے بادشاہ کی بیٹی کو میں بیاہوں گا۔ اس
 میں اُسے وہاں تین دن بنانا پانی کے
 گزرے۔ درمیان اس کے اُس نے نہ کسو سے
 بات کہی نہ کچھ کھایا بلکہ شہر کے لوگوں نے کھانے
 پلانے کا بہت قصد کیا پر اس نے انہیں کچھ جواب
 ہی نہ دیا : یہ خبر وہاں کے بادشاہ کو پہنچی۔
 شاہ نے وزیر کو بلا کر فرمایا کہ اسی وقت تو
 جا کے فقیر کو جو مانگے سودے کرکھلا پلا رخصت
 کر آ : شاہ کے فرماتے ہی وزیر نے فقیر سے جا کے
 کہا کہ شاہ صاحب حضور کا حکم سمجھو یوں ہی
 کہ جو فقیر کا سوال ہو سو پورا کر آ۔ جو آپ کو

وہاں سے نکل کر آیا ہوا

مقل ۷۲

ایک راسپا ہی لکھا پر ہار دنیاداری کے کارو

ہمارے خفا ہو کر فقیر ہو گیا اور لگا ملک ملک

پہر نے کسی شہر کے دروازے کی اوپر لی

چو کہت میں کچھ لکھا تھا سو لگا بانچہ - اس

میں اُس نے ایک کونے میں لکھا دیکھا کہ ہمت

مرداں مدد و خدا - اس عبارت کے پرہتے ہی

خفا ہو بولا کہ جس شہر کے دروازے پر یہ جھوٹہ

لکھا ہی اُس کے اندر نہ جانتے کیا کچھ ہو گا

یہ کہ شہر میں نجا آتا پھر اور کتنی ایک دور

جا کر آپ ہی آپ سوچا کہ میں نے بنا آزمائے

کسی کے لکے کون جھوٹہ کہا یہ بری ہے انصافی

چہرہ ہنگا سو سو رگ کارا جا ہو گا۔ اسی دن
 کے لئے میں بارہ برس کی عمر سے جوگ
 کھاتا تھا سو دن بھگوان نے آج دکھایا اور میرا
 منور رہا۔ پورا کیا : کو تو ال بولا تھے کہوں سولی دو نگا
 میں ہیں اس سولی پر چرہ ہو نگا کو تو ال کے سولی
 چرہ نے کسی خبر پا کر صوبے نے کہا تو نچرہ میں
 چرہ ہو نگا۔ صوبے کی خبر پا کر دیوان نے کہا میں
 چرہ ہو نگا : آخر اسی طرح بحثا بحثی کرتے وہاں
 کارا جا ہی سولی پر چرہ۔ مرا تب اس گائیں نے
 چیلے سے کہا کہوں میں تجھے نہ کہتا تھا کہ یہاں نہ رہ
 اب بھی رہیگا۔ بولا مہاراج میری وہی مثل
 ہی کہ بھولے بنئے بھیر کھائی پھیر کھائے تو رام
 دہائی : یہ کہو وہ اسی وقت گرو کے ساتھ

کرتے پکڑا گیا۔ راجا کے یہاں سے اُسے سولی
 دینے کا حکم ہوا۔ کو تو ال اُس چور کو سولی
 کے پاس لیجا کر کہا دیکھتا ہی کہ چور دہلا اور
 سولی موڑتی ہی۔ یہ خبر راجا سے جا کہی۔
 راجا نے فرمایا کہ کسی موڑتے کو پکڑ کر سولی دواور
 چور کو چھوڑ دو۔ راجا کا حکم ہوتے ہی کو تو ال
 اُس گائیس کے چیلے کو سب سے موٹا دیکھ
 پکڑ کر سولی کے پاس لے گیا اور چاہے کہ اُسے
 سولی پر چڑھاوے کہ اس میں خدا کا چاہا
 وہ گائیس بھی وہاں آ پہنچا اور اپنے چیلے کو
 سولی دیتے دیکھ بولا اؤ بابا کو تو ال تو اسے
 سولی نہ دے۔ اس کے بدل مجھے دے۔ کو تو ال
 نے پوچھا کیوں۔ گائیس نے کہا اس سولی پر جو

میں جا کے دیکھے تو سب جنس ایک ہی بھاؤ ہی
 وہ مارے خوشی کے گہی چینی اور میدالے آیا اور
 ملیدا بنا جلدی ہے گرو کے آگے لا رکھا : گرو نے
 پوچھا بابا آج کیا ہی جو تو نے چورما بنا یا - بولا
 سہاراج یہاں سب چیز ایک ہی بھاؤ ہی اس لئے
 میں نے ملیدا ہی کیا - یہ سن گنائیں نے چیلے سے
 پوچھا اس گانو کا نام کیا ہے - بولا ہر بھوم
 پور - کہا یہاں سے ابھی چلو نہیں بولا کیا جائے
 کس بلا میں پرے - چیلے نے جواب دیا میں تو
 اس شہر سے نجاؤنگا آپ کا جی چاہے تو تیرے جاتا
 کر آئے : ندان گنائیں اکیلا گیا اور چیلے وہاں
 رہا : برس ایک میں وہ کھاپی کر ایسا سوتا
 ہوا کہ پہچانا نہ جاتا تھا : ایک روز کوئی چور چوری

اُٹھا اُس کی سب مٹھائی کھا گیا اور لگا کچھ
 نقد مانگنے اور کہنے کہ میں نے تیرا محکم بجا دیا
 اس کا سچو تانہ سمجھ دے :۔ زندان دھمکا دھمکو کے
 اُس نے اُنک رُ پیا لے ہی کے چھوڑا تب کئی اُنک
 آدمیوں نے آ کے حلوائی سے پوچھا کہ میاں یہ
 کیا معاملہ تھا کہ تو یہی - بولا صاحب کہوں
 کہا اپنا سر پہ وہی مثل ہی جو کانوں سُتے تھے
 سو آنکھوں دیکھی کہ اُلٹا چور کتوالے داندے

نقل ۷۱

ایک گنا نہیں اپنے چیلے کو سنا تھے لے کسی شہر سے
 تیر تھے کرنے کو نکلا اور چلا چلا اُنک گانو میں
 پہنچا :۔ تب اُس نے چیلے کے ہاتھ بازار سے کچھ
 کھانے پینے کا سراجام منگوا یا :۔ چیلہ جو بازار

کوئی اُنکا آشنا بولا کہ بھائی صاحب یہ شاوی
یا لوتالوت - جواب دیا بندہ درگاہ جب کرتے ہیں
تب لوتالوت ہی کرتے ہیں - متمنے یہ مثل نہیں
سنی - کہا لینگے شیر شاہ کہا لینگے سلیم شاہ دنیا
میں سخی اور شوم کا نام ہی رہتا ہے

نقل ۷۱

تمہٹ برائے سال کے کھانے والے دلی کے بانگے
مشہور ہیں : ایک دن کوئی بانگہ کسی حلوائی
کی دوکان کے سونہیں جا کر اہوا اور لگا اُسکی
مٹھائی کی طرف آنکھ پھار پھار دیکھنے : وہ بولا
دیکھتے کہا ہو صاحب - اسنے ایک مٹھائی کی طرف
اشارہ کر کے پوچھا یہ کہا ہی : اُسنے کہا
کھا جا - اتنی بات کے سننے ہی یہ جھٹ تھاں

نہیں : غرض : متھائی کھاتے کھاتے اُن کے بدن
 میں کھجلا ہت ہوئی تب تقلیدیوں نے تو مارے
 لڑبھ کے نہ کھجلا یا پر اصل پو سستی یہ کہہ کھجلا نے
 لگے کہ اس ایک ایک گھسے پر ہزار ہزار رہی
 صدقے ہں : وزیر نے اُسی دن نہ کھجلائے والوں
 کو جواب دیا اور کھجلائیوں کا درما دونا کیا

نقل ۶۹

ایک کروڑ پتی برابریل تھا۔ اُس کے گھر میں
 کچھ شادی آئی تو اُس نے اپنے ماورچی و بکاولوں کو
 بلا کر کہا کہ ایک سیر کی سولہ روٹی پکاؤ اور
 دھکے آگے ایک رکھو۔ اس میں کھاوے سو
 کھاوے بیچے سو باندھ لے جاوے ہر گاہ کسی کو منع
 نہ کرو : بولے بہت خوب : یہ بات سن کر

شمار کئے گئے تب یو سستی خانے کے داروغہ نے وزیر
 سے جا کہا کہ خداوند جو اسے طرح سے درماٹا ملے جائیگا
 تو معلوم ہوتا ہے کہ کئی برس میں سارا شہر
 یو سستی ہو جائیگا۔ ایک ہی برس میں کئی
 ہزار جمع ہوئے ہیں : وزیر نے جا بادشاہ کو
 خبر پہنچائی۔ شاہ نے فرمایا کہ اسے تجویر کر کے
 دیکھو جو اصل یو سستی ہی دے رہے دو اور جو
 تقلید میاں دے نکال دو : یہ محکم ہوتے ہی
 وزیر نے گھر آئے سب کی دعوت کی اور بہت سا
 یوست پلا یا جب خوب نشے میں ہوئے تب انہیں
 کھانے کو مستھائی دی اور یہ کہا کہ جو کوئی
 کھانے کے وقت بدن میں ہاتھ نہ لگاویگا سو
 ہزار روپیہ پاویگا اور اپنا بدن کھجلا دے سو

نے ملکر کسی کے گھر سے عرضی دیا کہ پیر مرشد
 آپ کے عمل میں ہم بھوکے مرتے ہیں اور سب
 چھین کرتے ہیں۔ حضور سے کھانے رہنے کی جگہ ہو
 جائے تو ہمارا جان بچے عارضی کے پر دتے ہیں
 شاہ نے وزیر سے کہا کہ پوستیوں کے کھانے
 رہنے کا بند و بست ابھی کرو و تا کہ یہ بچارے
 کسی بات کا دکھ نہ پاویں عظیم ہوتے ہیں پوستی
 خانہ بنوا وزیر نے تمام شہر کے پوستیوں کو
 وہاں رہنے کو جگہ دے ان کا درماہ کر دیا :۱۶
 خبر من سارے شہر کے سست کم چور کا ہل بے
 محنت کے رہی لینے کے لالچ سے وہاں آئے آئے
 پوستیوں میں نام لکھا لکھا رہے لگے :۱۷
 غرض ایک سال کے عرصے میں کئی ہزار پوستی

گر چلا آیا : پٹوانے یہ مثل کہی دوست :

دید دُنیا کا دُسمدم کیجے

کسکی شادی و کس کا غم کیجے

پیراگی نے یہ

سادھو یا سنسار میں سبھی بتا و لوگ

کا کو کریں منا و نو کا کو کیجے سوگ

سُنیا سی نے یہ

آئے ہیں سو جا ئینگے راجا رنک فقیر

ایک سنگھاسن بٹھکر باندھے جات زنجیر

جوگی نے یہ

جوگی تھا سو اُتھ گیا آسن رہی بہوت

نقل ۶۸

شاہ جہاں بادشاہ کے یہاں کئی ایک پوستیوں

وہ

ہمیں لکھ ہمار لکھ ہم ہمار کے بیچ
 تلسی لکھ لکھ کہا لکھ رام نام بیچ
 اس دو ہنکو بن وہ مارے شرم کے لا جواب
 ہو چپ چاپ چلا گیا

نقل ۶۷

کسی شہر کے عامل کا باپ مر گیا۔ وہ اُس
 کے غم میں بہت دلگیر بیٹھا تھا۔ شہر کے سب
 آدمی کیا دُنیا دار کیا فقیر ہندو مسلمان ملکر
 اُس کے یہاں ماتم پڑسی گئے اور بیٹھ کر چلے
 آئے پر چار شخص اُس کی بیقرار می دیکھ اُن
 میں سے بیٹھ رہے۔ بیٹھوا پیراگی۔ سنیا سی۔
 اور جوگی اور ہر ایک اپنے اپنے طور کی مثل

ہر مہنگی جو سارے کنبے کو پرور دے شش گہری
 تھی - یہ بولا بھائی صبر کرو ہمیں تمہیں
 کالے دھن سے لہنا نہیں - اُس نے پوچھا
 تمہارا کیا نقصان ہوا - جواب دیا پورے
 بھی بکائی کی مانند کی پھوٹ گئی : اس بات کے
 سنتے ہی وہ غریب ہنس کر بولا کہ ہاں بھائی
 سچ کہتے ہو

مقل ۶۶

ایک روز تلسی داس گسائیں بنارس میں
 کسی مکان پر بیٹھے تھے کہ ایک روکھرا فقیر نے آ کے
 سوال کیا اکھ - اس کے جواب میں تلسی داس
 نے یہ دو ٹوکہ سنایا

کس کے حکم سے دس لاکھ روپیہ اؤر لڑکی دینے
کا اقرار کر آیا۔ بولا اسے حکم کیا چاہئے جو اس گھوڑے
پر چڑھیں سو اقرار ہی کر آویگا۔ اس بات کے
سننے ہی راجا نے خفا ہوا اسے نکال دیا اور برا
افسوس کیا۔ اس میں کوئی مصاحب بول اٹھا
کہ مہاراج آج آپ نے جو اتنا افسوس کیا سو کیا
یہ مثل نہیں سنی

کہ جس کا کام تسی کو چھا ہے

اؤر کرے تو تھینکا باجے

نقل ۶۵

ایک شخص کی بھینس سرگئی۔ وہ لگا روئے۔
اس میں اس کے ایک پروسی نے آکر پوچھا
کہ بھائی تم کہوں روئے ہو۔ بولا میری بھینس

کل دے جاؤ نگا تم خاطر جمع رکھو : اس بات
 کے مستے ہی خوش ہو اُس راجا نے اسے ایک
 بھاری خلعت اور بہت سے رُپی دے رخصت
 کیا اور لڑائی موقوف کی : دوسرے دن
 بھڑ رہی یہ راجا جب چرہ کھرا ہوا تب اُس
 راجا نے کہلا بھیجا کہ کل تو تمہارا وکیل تمہاری
 طرف سے دس لاکھ رُپی اور بیسی دینی قبول
 کر گیا ہے اب کہوں لڑنے کو تیار ہوئے ہو
 مستے ہی راجا نے فرمایا کہ دیکھو کون آدمی
 ہمارے طرف سے وٹاں جا کر یہ بات کہ آیا ہے
 دسے میرے پاس لاؤ : غرض تحقیق کر کے
 لوگ بکت خاں کو ہاتھوں ہاتھ راجا کے سونہیں
 لینگئے تب کسی مصاصی نے اُس سے پوچھا کہ تو

ذوئین دفع را جا سے اُس نے کہا اور را جانے
 یہی جواب دیا۔ ندان گھوڑا اُسے حریف کے
 غول میں لے ہی گیا تب بہت خاں نے کمر سے
 دُپٹا کھول پھرایا۔ اُسے اُس را جا کے لوگ
 لڑنے سے باز رہا اور اس کے پاس آئے۔
 کہا تو کیا پیغام لایا ہے۔ بولا مجھے گھوڑا
 اتار دو تو کچھ عرض کروں۔ اُنہوں نے اسے
 گھوڑے سے اتارا تو یہ بولا کہ تم کس لئے
 لرتے ہو جس طرح کی معاملت چاہو گے سو
 ہمارا را جا قبول کریگا۔ اُس نے کہا کہ دس
 لاکھ روپیہ دے اور اپنی بیٹی ہمارے بیٹے کو
 بیاہ دے یہی ہم چاہتے ہیں۔ وہ بولا یہ بات
 ہمارے را جا کو قبول ہی میں اس کا جواب

کی عورت جھنجھلا کر بولی کہ سن جو تو ایسے
 خاوند سے نمک حرامی کر اُس کا ساتھ چھوڑیگا
 تو میں بھی تیرا ساتھ نہ دوں گی : یہ سن شرما
 لا جواب ہوا جا کے پاس بھڑہا جا حاضر ہوا اور
 ہتھیار لگا گھوڑے پر سوار اُن کے ساتھ ہو لیا۔
 جس وقت میدان میں دوڑنوں دل تل کر لرنے
 کو تیار ہوئے اور لگا مارو بجھے اور گولی گولا بان
 دوڑنوں اور سے چلنے اور اس کا گھوڑا بھرکنے
 - تس وقت بکثرت خاں نے تو مارے در کے
 راجا سے عرض کی کہ مہاراج ہوں گرت ہوں
 پر راجا سمجھا کہ یہ کہتا ہی میں حریف کی
 فوج پی گروں - بولا ایسا کام بھی نکسیچو
 تم میرے ہاتھی کے ساتھ اپنا گھوڑا رکھو۔

گھوڑا اپنی پسند موافق لے لوکل تمہیں بھی ہمارے
 ساتھ لڑنے کو چلنا ہو گا : اس بات کے سنتے
 ہی اُسکی جان تو سوکھ گئی پر مارے شرم کے
 بہت خوب کہ گھوڑا اور ہتھیار پسند کر کسی
 بہانے سے وہ اپنے گھر آیا اور جو رو سے کہنے لگا
 کہ اس شہر سے ابھی بھاگ چلو نہیں تو راجا کے
 ساتھ کل مرنے کو جانا ہو گا : اُس کی جو رو
 حقل مند تھی بولی جو لڑائی میں جاتا ہی سو
 بے اجل نہیں مرتا۔ یہ کہ اُس نے چکی میں چنے
 دکر دکھائے اور کہا کہ دیکھ جی طرح
 اس میں دانے ثابت رہ گئے ایسے لڑائی
 میں بھی لوگ بچے رہتے ہیں۔ بولا جو پس گیا
 سو میں ہوں : اس کم ہمتی کو دیکھ اُس

ایک شخص غالب رہے۔ اُس نے پوچھا یہ کیا
 بات ہے مجھے سمجھا کے کہو۔ اُس نے اُنکا ماجرا
 کہہ سنایا تب اسکا آشنا بولا کہ اتم نے یہ
 مثل نہیں سنی جو اتنا تعجب کرتے ہو کہ
 جگ پھوٹا اور رزماری گئی

نقل ۶۴

کسی راجا کے یہاں بکت خاں نام کلاونت
 بہ سبب گانے بجانے کے بہت پیش ہوا۔ آٹھ پہر
 اُس کی مصاحبت میں رہے۔ ایک دن
 اُس راجا پر کوئی غنیم چڑھ آیا تو اُس نے بھی
 لڑنے کی تیاری کی اور اپنے رفیقوں کو ہتھیار
 گھوڑے بانٹے۔ اُس وقت بکت خاں سے راجا
 نے کہا کہ اتم بھی سلح خانے سے ہتھیار اور اسطبل سے

پھر بات سنکر دے چپ ہو رہا تھا اس نے
 لائی سے گئے چھین لئے اور اُسے جتیا کر نکال
 دیا۔ پھر کسان کہنے لگا کہ سنو بھائی ہر اہمن
 گر و تم بھائی۔ ہمارا تمہارا مال ایک ہی۔
 ماس بننے نے کہا بوجھ کے میرا کھیت اُجارا۔
 ہلا اسکا تمہیں انصاف کرو جو جہم ہم اسکا
 یہاں سے رہی لینگے تو کہا یہ اپنا سو د چھوڑ
 دیگا۔ اس بات کو بھی سن دے کچھ نہ بولے
 بد تو اُس نے اسے بھی دھو لیا کے گاندے چھین
 نکال دیا۔ غرض اس طرح سے اُس نے ہر ایک
 کو نکالا اور اپنا مال بچا یا۔ اس بات کو
 سن تعجب کر ایک شخص نے اپنے دوست
 سے کہا یہ کہا غضب ہی کہ چار آدمی پر

چار شخص اپنے گائو سے نکلے براہمن را جپوت
 بنیاں اور نائی اور کسی کسان کے کھیت پر جا
 گئے گئے اُکھا را اُکھا را پھانڈیاں باندھنے اور چوسنے۔
 اُس کھیت والے نے دیکھا اور اپنے جی میں بچارا
 کہ یے چار اور میں اکیلا جو کچھ کہتا ہوں تو یے
 مجھے بن تھو کے نہ ہینگے۔ اس سے کچھ حکمت
 کیا چاہئے؟ یہ بات دل میں تھان وہ اُن کے
 پاس جا رام رام کر بولا کہ سنو صاحب براہمن
 ہمارے گرو۔ را جپوت بھائی۔ بنیاں مرا جن۔
 تینوں آدمی کے کاندے کھانے کا کچھ مضائقہ
 نہیں۔ بھلا اس نائی نے کیا سمجھ کے میرے
 کھیت میں ہاتھ ڈالا اس کا مجھے کیا کرو؟

میں دیر کی جو ہوئی تو بنیاں اپنے من میں یہ
 سمجھا کہ کسی دین لین والے نے شاید میرے
 بھائی کو بیٹھا رکھا ہے۔ لگا روز نامہ کھاتے کی بہن
 دیکھنے۔ جب دیکھتے دیکھتے اُس میں کسی کا دینا
 پانا نہ تھرا تب گھر کے جنگل میں رہو نہ ہنے
 چلا۔ کتنی ایک دور جائے دیکھ تو ایک شیر
 لپٹا ہوا ہی اور اُس کے بھائی کا مار چام آگے
 پر آہی۔ یہ دیکھتے ہی بولا حسن تو اوت کے
 اوت نہ تھرا ہمارے کھاتے میں نام نہ روز نامے
 میں۔ تو نے میرے بھائی کو کس حساب سے مار
 کھا یا۔ وہ ہوں کر کے گھر کا تب بنیاں یہ کہہ روٹا
 پیتا۔ پھر آیا کہ ہاں اس حساب سے کھا یا
 ہوتا ہے ہی

ایسا دوس کہ جیسا آب زلال : یہ وہاں سے
 تھی پیالا اور پیسے ہی لے اپنے گھر آیا اور
 ایک پیالا میٹھے پانی کا بھر کر آشنا کے آگے لے
 گیا ۔ وہ دیکھ کر بولا کہ تم تو گھی لینے گئے تھے یہ
 کہا لے آئے ۔ جواب دیا کہ تین ٹیچوڑ میں
 یہ تھرا ہی ۔ اُسے یہی بہتر ہی کہوں کہ
 شاعر لوگ بھی مشب سے مشب بہ کو
 اعلیٰ جانتے ہیں

نقل ۶۲

ایک بنیاں اپنے بیٹے کو بیا بنے برات لئے شہر
 سے پر شہر کو جاتا تھا ۔ راہ میں ایک جنگل ملا ۔
 اُس میں کہیں دائیں بائیں اس کا بھائی جھارا
 پھرنے گیا ۔ اتفاقاً اُسے وہاں شیر کھا گیا ۔ اس

کیا پرہ لا گھی بن مین کس طرح کھاؤ نگا : کہا مین
 ابھی لے آتا ہوں ذرا صبر کرو : اتنا کہ دو
 پیسے اور پیالے وہ سڑوی کی دوکان پر گیا
 اور اُن نے پیالا اور دو پیسے اُس کے آگے
 رکھ کے کہا کہ اچھ، سے اچھا گھی مجھے دے -
 وہ بولا ایسا گھی دوں کہ جیسا سفید چرب :
 اس بات کے سنتے ہی یہ پیالا اور پیسے لے
 چرب والے کی دوکان پر گیا اور اس نے
 پیالا اور پیسے دے اُسے کہا کہ بھلے سے بھلا
 چرب مجھے دے - وہ بولا کہ ایسا صاف دوں
 کہ جیسا برف : یہ سن وہ وٹانے سے پیالا اور
 پیسے لے برف والے کے پاس گیا اور بولا کہ
 ہتر سے بہتر برف میرے تئیں دے - اُس نے کہا کہ

وہی ہی جو کسی نے کہا ہے -
 راگی باگی پارکھی ناری اور نیاو
 ان پانچوں کے گروہی پر اُپجی انگ سبھاو

نقل ۶۱

ایک طالب العلم برائے تخیل تھا۔ اُس نے کسی
 دن ایک آشنا کی دعوت کی۔ کھانا تو جو
 اُس کے یہاں انت پکاتا تھا سوئی پکا پر دو اندے
 کھانے کے وقت برے تکلف سے اُس نے دسترخوان
 ہی لارکھے اور کہا کہ سَنو صاحب ان اندوں
 سے ایک جوڑا مرغ کا ہوتا اور جوڑے
 سے ہزاروں بچے پیدا ہوتے۔ یہ آپ کی خاطر
 مئی جو مشین نے اپنا اتنا نقصان کیا ہے اُسکا
 آشنا ہی ایک ہی شخص تھا بڑا لا کہ یہ تو آپ نے

گا احوال سنئے کہ راہ میں گدھے پر سو اڑ چلا
 جاتا تھا اور تماشہ گیر بھی دو چار سو چاروں
 طرف سے لعنت ملاصت کرتے جاتے تھے اور
 سو نہیں سے اُس کی جُور و آئی - اُن نے اُسے
 پاس بلا کر سب کے دیکھتے کہا کہ تو گھر جا کر نہانے
 گا پانی جلد گرم کر رکھ تھوڑا شہر پہرنا باقی
 ہی ابھی پہر کر اُن موزیوں کے ماتھ سے
 چھوٹ چلا آتا ہوں : اتنی بات کہ سنئے ہی
 راجانے اُن لوگوں سے کہا جنہوں نے کہا تھا
 کہ دھرم اور نار - ہم نے اس نیاؤ کا بھید نہا - کہو
 اب تو سمجھ - اُنہوں نے عرض کی کہ پر تھی
 ماتھ - آپ کا نیاؤ آپ ہی سے بنے دوسرے
 کی کیا سارے جو اس میں دم مارے - یہ

کے کہا کہ تھم ان چاروں کے پیچھے ہر گارے لگا
 دو کہ یے جا کے کہا کرتے ہیں اسکی خبر لاویں
 انہوں نے سوئی کیا تیسرے دن جب
 ہر گارے خبر لے حضور میں آ حاضر ہوئے تب
 راجا نے دیکھ کر فرمایا کہ اُنکے سماچار لائے۔
 جواب دیا ہاں پر تھی ناتھ لائے۔ ارشاد
 کیا کہو۔ وہے دندوت کر مات جو آرہو لے کہ
 دھرما و تار جسے آپ نے یہ کہہ چھوڑ دیا تھا
 کہ تمہارے لائق یہ کام نہیں تھا۔ وہ تو جاتے ہی
 زہر کھا کر گیا اور جسے گالیاں دے چھوڑا پاتا تھا
 وہ شہر چھوڑ کر چلا گیا اور جو مار کھا کے چھوٹا
 ہی سو دس دن سے گھر کے باہر نہیں نکلا اور
 مہاراج جس کی ناک اور کان کاٹے گئے تھے

ایک ساتھ چوڑی کے صعا ملے میں پکڑے گئے
 راجانے اُن میں سے ایک کو پاس بلا لیا کہ
 چوڑی دیا کہ تمہارے لائق یہ کام نہ تھا اور
 دوسرے کو پانچ چار گالیاں دے نکال دیا۔
 تیسرے کو دس بیس دھول جو تیاں لگوا
 دھکے دلو اور نکلو اور چوڑی کی ناک اور
 کان کٹوا کا لامینہ کروا گدھے پر چڑھا اور شہر بدر
 کروایا۔ یہ عدالت دیکھ کر ایک درباری
 ایک ایک کا منہ دیکھنے لگا۔ اُس وقت
 راجانے اُن سے پوچھا کہ تمہارے دل میں
 کیا ہے سو کہو۔ اُنہوں نے ماتھ جوڑ کر کہا کہ
 دھرم و تار آپ نے نیا و تو سمجھ ہی کے کیا
 ہو گا ہر اس کا پیڑ کچھ ہم پر نہ گھلا۔ راجانے ہنس

جھٹتا رہا۔ اُس کے پاس آیا اور آدھیں
 کر بولا کہ ناتھ جی۔ آپ نے چار آدمیوں
 کے چار سو الوں کا ایک ہی جواب دیا۔ اس کا
 جواب سب نے اُس نے اس سے بھی کہا کہ ہاں
 بابا سچ کہتا ہے۔ بولا کہ مہاراج میں دن
 جیتا نہیں ہوں کہ سمجھ بھی رہا دوں گے۔ بدون
 سمجھائے آپ کا سمجھانہ چھوڑو نگا۔ اس
 بات کے سنتے ہی اُس جو گئی نے کہا کہ بابا جو
 کوئی جیتا ہوتا ہے وہ دوسرے کو بھی ویسا
 سمجھتا ہے۔ اُن کے کہنے سے میرا کہا بگڑا۔
 فقیر تو جیسے کا تھا۔ بیٹھا ہی

نقل ۶۱

ایک روز راجا پیر بکر ماجیت کے یہاں چار شخص

کہنے نہیں گئے۔ کچھ مار آئے ہو جو اس بن میں
 ہم سوانگ بنا کر آن بیٹھے ہو۔ بولا ماں بابا سچ
 کہتا ہی ہے دوسرے نے کہا تو تو کل شہر اب
 پینے شہر کی گلیوں میں گرتا پرتا پھرتا تھا۔ آج
 کس لئے یہاں مکر کر آن بیٹھا ہی۔ جواب دیا ماں بابا
 سچ کہتا ہی ہے تیسرے نے کہا۔ تم نے اس راہ میں
 بہت قافلے غارت کئے ہیں۔ کہو اب کسکسی
 تاک پر بیٹھے ہو۔ بولا ماں بابا سچ کہتا ہی
 بعد چوتھے نے کہا ناتھ جی آپ بھگوان کے خاص
 بندوں سے ہو کچھ میرے حال پر رحم کرو۔
 اُسے بھی یہی جواب دیا۔ ماں بابا سچ کہتا
 ہی ہے غرض یہ کہ شکر وے چاروں چلے گئے
 تب ایک اور مسافر جوالگ وہیں بیٹھا

گئی آنگھ لگشی ہی تو آدھی رات گئی اندھیری
 میں اکیلی رہے ہتھیار یار کے پاس نہ ہرک چلی
 جاتی ہی اور چور چکار بھوت پلٹ سے نہیں
 درتی * یہ بات سن شاہ نے خوش ہو پیربل
 کو انعام دیا اور فرمایا تو سچ کہتا ہی

نقل ۹۵

کوئی جو گئی کسی جنگل میں سر راہ ایک پیر
 کے نیچے بے بھوت لگائے دھوئی چلائے سپیلی سینگلی
 تدر پرنے باگھنہر بچھائے ننک دھرنگا آسن
 مارے اپنے بھگوان کی یاد میں مگن بیٹھا بھجن
 کرتا تھا کہ چار مسافروں راہ سے آئے اور
 اسی درخت کے نیچے جا بیٹھے انہیں سے پہلے ایک نے
 اس جو گئی سے کہا کہ آج کیا ہی جو موسم ہو آ

حضرت نے فرمایا کہ ابے میں نے چار شخص
 بلوائے تھے تو ایک کو لایا اور تین کہاں
 ہیں۔ عرض کی جہاں پناہ۔ اس میں چاروں کی
 مفات ہیں۔ ارشاد کیا بیان کر۔ بولا کہ جس
 وقت یہ اپنی سرال میں رہتی ہی مارے
 شرم کے اچھی طرح گلا کھول کر بولتی بھی نہیں
 اور جس بریاں کہیں شادی میں گالیاں
 لگاتی ہی تو باپ بھائی شوہر سر اور برادری
 کے لوگ بیٹھے سنا کرتے ہیں پر یہ کسی کی
 شرم نہیں کرتی اور جب اپنے شوہر کے
 پاس بیٹھتی ہی تو رات کو اکیلی گھر کے
 گوتھے میں بھی نہیں جاتی اور کہتی ہی سمجھے جاتے
 در لگتا ہی پھر جس وقت کسی سے اس

وہ رَم کے کہو تب اس نے اُنکے جواب میں یہ
سور تھا کہ سنایا

گن تیں گروڈ ہوت نہیں سنپت نہ سہاے تیں
یو نوں چند اودوت دُتیا کی سر بر نہیں
یہ سن دے تینوں چپکے ہو رہے

نقل ۵۸

ایک روز اکبر بادشاہ نے پیر بل کے کہا کہ
تو مجھ چار شخص لادے - سور پیر - گایر -
صاحب بصرم - اڈر بے بصرم - پیر بل
دوسرے دن بھور ہی ایک رند می کو ساتھ
اپنے حضور میں لے گیا : شاہ نے پوچھا لایا -
بولا خداوند حاضر ہی - یہ کہ پیر بل نے اُس
رند می کو بادشاہ کے سونہیں لیجا کہہ کیا

اسکا سبب کہو۔ اُنہوں نے سب ماجرا کہہ
 دینا یا۔ جانتے ہی اُن میں سے ایک شخص
 بولا کہ بھائی تمہاری وہی مثل ہی کہ سوت
 نہ کہا جس کو لی سے لٹھا لٹھی

نقل ۵۷

کسی مکان میں پندرہ سال ہو گا راؤر سپا ہی
 نے تینوں بیٹھ بحث رہے تھے ایک کہتا تھا کہ
 منش گن سے برا کہلاتا ہی اور دوسرا
 کہتا تھا کہ نہیں دھن سے اور تیسرا کہتا تھا کہ نہ
 دو گاروں سے آدمی برا کہلاتا ہی اس
 میں کوئی کبیشور ویاں جو جا بگلا۔ اُنہوں نے
 اسے ثالث مان کے کہا کہ مہاراج اس مقدمے
 میں جو تمہارے نزدیک سچ ہو سواپنے

راہ میں ایک پچاس سا تھ بیگھے اچھی زمین
 کا قطع دیکھ کر اُن میں سے ایک نے کہا کہ بھائی
 یہ جگہ اگر ہمارے تمہارے ہاتھ لگے تو کہا کرو۔
 بولا میں تو اپنے حصے کی زمین میں پھلوں کا
 لگاؤں۔ کہو تم اپنی جگہ میں کہا کرو گے۔ کہا
 میں اپنی گائیں بھینسیں چراؤنگا۔ اس نے کہا
 بھلا مانو یا برا میں تو اپنے باغیچے کے پاس نہ چرانے
 دوں گا۔ وہ بولا تمہارا کچھ اجارا نہیں ہی
 میں اپنی زمین میں جو چاہوں گا سو کرونگا۔ غرض
 اسی طرح ہڈا ہڈی کر کے لگے ہاتھ پائی کرنے
 اس میں کئی ایک راہ گیر جو ان کو جھگڑتے
 دیکھ جمع ہو گئے تھے۔ انہوں نے پیچ بھاؤ کر کے
 ان سے پوچھا کہ تم کہو آپس میں لڑتے ہو

نہ ابر کمر لیو ہی اور حضور کے داروغہ نے تو
 گرانے کو فکر معقول ہی کیوں ہو۔ اُس لطیفے کے
 مستی ہی شاہ نے داروغہ کو تنبیہ کی اور
 انہیں اُس کے حوض دو گھوڑے دے دیے۔

ثقل ۵۵

سورج مل کے وقت میں کسی مسلمان نے
 ازراۃ تہسخر ایک جات سے کہا بے جات
 بے جات تیرے سر پر کھات۔ اُس نے کہا اے
 میاں بے میاں تیرے سر پر کو لھو۔ یہ بولا تک
 نہ ملی۔ اُس نے جواب دیا کہ تک نہ ملی تو کہا
 بھیڑا رہے ہو جہن تو مر یگو۔

ثقل ۵۶

دوڑ میں دار اپنے گانوں سے کہیں کو چلے جاتے تھے۔

ترکی دیا ایسا کہ جس کے خائے مانند گھرے کے
 تھے۔ یے لے نا خوش ہوا اپنے گھر آئے۔ کتنے دنوں کے
 بعد ایک روز بادشاہ نے اسے کہا کہ کل تم بھی
 صیرے ساتھ فجر شکار کو چلیو۔ یے بہت خوب کھکر
 رخصت ہوا اپنے مکان پر آئے۔ اور دوسرے
 دن چار کھری رات رے سوار ہو دو دنوں
 بادشاہ کی دیہواری پر جا حاضر ہوئے۔ ایک
 بھائی اسی ترکی کے گلے میں بالو کا بھرا گھرا
 باندھ سوار ہو گیا تھا۔ جوں حضرت برآمد
 ہوئے توں ہی انھوں نے برہ کے سلام کیا۔ شاہ
 نے دیکھتے ہی پیس دیا اور فرمایا کہ ابے فجر ہی
 فجر یہ کہا سوانگ بنا لائے ہو۔ بولے بلیا
 لیوں اُلل پر نے کے دوسوں دووا اور بوجھ

نہ دیا۔ پھر شاہ نے کہا بیربل وے تینوں بلائیں۔
 بولا ہاں جہاں پناہ سلامت : اتنی بات کے
 مستے ہی شاہ نے لیلی پیلی آنکھیں کر کہا یا تو
 اسکا بیان کر نہیں تو ابھی مار ڈالتا ہوں۔
 تو نے کہا سمجھ کے میری بات کا جواب دیا۔ بولا :
 ایک سمندر بنج کرے اور نت اُتے۔ چوڑی جائیں
 بالک ہی سے نہ لگا دے وے تینوں بلائیں
 اس بات کے مستے ہی خوش ہو بادشاہ نے بیربل کو
 ہلال کر دیا

منقول ۵۴

کسی دن اکبر بادشاہ نے لاہور کا گانا سن
 راجہ کے ایک گھوڑا دلوایا۔ اسطبل کے داروغہ نے
 مت کہتی کر کے بھلا گھوڑا ندے ایک بہت ہو رہا

روٹی ہوں : اتنا سن روٹی لی دے آگے
 رہے تو دیکھا کہ کوئی رندی رو رو چکی پیس
 رہی ہی - اسی طرح اُس سے بھی پوچھا -
 اُن نے کہا میرا خصم چور پکڑ گیا ہی اُسے تیں
 دن ہوئے نجانوں جیتا ہی یا مارا گیا - اس
 دیکھ سے روٹی ہوں : یہ سن وہاں سے بھی
 چل نکلتے پھر دیکھا کہ ایک عورت نو جوان
 کھرکی میں بیٹھی داتر میں مار مار روٹی ہی -
 اُس سے پوچھا تو کہوں روٹی ہی - اُن نے کہا
 میرا شوہر کم سن ہی : اس بات کے مستے ہی
 بادشاہ اُداس ہو گھر آئے اور دوسرے دن
 دیوان خاص میں بیٹھ پیر بل کسی طرف مخاطب
 ہو بولے وہ تینوں بلائیں : پیر بل نے کچھ جواب

آؤ پتنگ نسنک جل جلت نہ مو روانگ
پہلے تو دیپد جلے پاچھے جلے پتنگ

ثقل ۳۵

اکبر بادشاہ کا یہ معمول تھا کہ ہمیشہ فقیر کا ہونیکہ لے
رات کو شہر کی گلی گلی کوچے کوچے میں پھرتے
اور جس غریب کنگال دکھی کو دیکھتے اُسکا
دکھ دور کرتے : ایگدن جوں نگلے توں دیکھتے
کہا میں کہ کوئی سو دا گر بچی دروازے کے اوپر
گو کہ میں کھری روڑو بسور رہی ہی - میں بولے
ماٹنی تکر اہیجیو - وہ روٹی دینے آئی - انہوں نے
اُس سے بوجھا تو کیوں روٹی ہی جواب دیا
میرا خاوند بارہ برس سے جہاز لے سو دا گری کو
نگلا ہی اُسکی کچھ خبر نہیں پائی اس دکھ سے

نہ دیتا پیر

نقل ۵۲

کوئی شخص کسی پر عاشق تھا پر مارتے حجاب
کے اپنا عشق اُس کے آگے اظہار نہ کرتا اور

جس نے عاشق تھا وہ بھی جان بوجھ کر شرم

سے لچھ نہ کہتا: ایک روز وہ دو نوں کسی

مکان پر رات کو بیٹھے تھے کہ ایک پروانہ شمع

پر آجلا۔ اُس کو جلتا دیکھ عاشق نے کہنا

سے یہ دوتا پڑھا

آہ دئی کیسی بنی انچاہت کو آسنگ

دپک کے ہاں نوین نہیں جل جل مرے پتنگ

اس کے جواب میں معشوق نے بھی یہ دوتا

کہہ دیا

پڑھنے ٹٹ آتا اور یہ بات کہتا کہ پیر مٹر شد۔ جو
 مغلّام کو آپ کے تصدّق سے اس فن میں کچھ
 مناسبت ہو جائیگی تو یہ بن مول کا مغلّام آپ
 کے قدم مبارک چھو کر کہیں بجائیگا اور ہمیشہ
 خدمت میں رہیگا۔ غرض اسی دم بازی سے
 کئی ایک برس کے عرصے میں تمام کتاب
 پرہ سن کے وہاں سے اپسا گیا کہ جیسے گدھے کے
 سر سے سینگ گئے پھر نظر بھی نہ آیا۔ ایک روز
 حکیم جی نے اُس کے کسی دوست سے کہا کہ
 تمہارے آشنا نے ہم سے کہا قول کیا تھا اور
 اب دکھائی بھی نہیں دیتا۔ وہ بولا حکیم صاحب
 کہا آپ نے یہ مثل نہیں سنی جو ایسی بات
 زبان پر لاتے ہو۔ کام سرا دکھ پیرا چھا چھ

حق بات کہنے میں کچھ عیب نہیں - آپ کی وہی
 مثل ہی کہ دامادے بھنداری کا پینت پھولے :
 اس مثل کے مہنتے ہی شرمندہ ہو اُس نے
 اسے اُسی وقت رُپی گن دے

نقل ۱۰۶

کسی مکان پر کئی ایک تجارت پیشہ بٹھے آپس
 میں اپنی اپنی کمائی کا احوال بیاں کر رہے تھے
 کہ ایک عاشق تن بھولا بھٹکا وٹاں جا نکلا اور
 اُن کی باتیں سن آہ کر یہ شعر پڑھا
 جو آئے اس جہاں میں سو کچھ کچھ کما چلے
 ایک بے سلیقہ ہمیش کہ دل بھی گنوا چلے
 نقل ۱۰۷

ایک گونگیرہ کسی حکیم کے یہاں حکمت کی کتاب

اُس کے منیب نے راہ کا احوال سن خوش ہو
 اُسے ایک دوشالا انعام دے کر کہا کہ شاہان
 تم نے خوب دانتائی کی ہے اس وقت وہی مناسب تھا
 یہ مثل ہم بھی ہمیشہ بزرگوں کی زبانی سنتے
 آئے ہیں کہ جو دھن جاتا جائے تو آدھا دیجے بابت

تقل ۴۹

کسی امر کے یہاں کوئی بھلا آدمی کئی ایک
 مہینے سے آمد و رفت کرتا تھا۔ ایک روز اُس
 نے اس کے حال پر مہربان ہو کر پانچ سو روپے
 اپنے دیوان سے دلوائے۔ اُس نے نت کہتی
 اور اپنی بد ذاتی سے تال مٹال کر کے کئی ایک
 دن لگائے تب دیکھ پا اس بچارے نے سر
 مجلس کر کے دیوان جی صاحب - بھلا مانئے یا برا۔

یہ دو ہاٹن اُس کی پہنچلی نے کلہرے کی طرف
سے جواب دیا

لات سہی سو جگہ سہی اُلٹے سے کہہ ار

ان ہو تھن کے کار نے سر پر دھرے انگار

نقل ۴۸

ایک سوداگر کا گماشتہ کہیں سے روز کر

لو اے چلا آتا تھا۔ راہ میں کسی سراے

کے بیچ اتراکہ وہاں داکا آیا۔ تب اس نے وہاں

کے رہنے والوں سے کہا کہ بھائیو جو تم لرتے بھر گے

ان رپیوں کو دیکھتوں کے ہاتھ سے بچاؤ تو

آدھے پاؤ غرض اُن لوگوں نے جوں توں

کر رہی بچاے اور آدھے پائے باقی رہے سو

لے وہ اپنے خاوند کے پاس پہنچا۔ اُس وقت

کہ یہ راہ بُری نکلی - آج چوٹا گیا ہی کل کو سانپ
جائیگا تو میں گائے کو جیتا رہو ننگا

نقل ۴۷

ایک کہترانی نو جوان خوبصورت مچست و چالاک
سنت رت میں اپنی بہنیلکی کے یہاں گئی اور
کچھ اور اُدھر کی من لکن باتیں کر رہی تھی کہ
پاسی ہوئی اور پانی مانگا - اُسکی اُس
منہ بولی بہن نے کورے گلہ رے میں بھر کر لادیا -
جوں اُس نے منہ لگا کر پیا توں گلہ رے ہونٹھوں سے
لگ رہا : یہ کھل کھلا کر ہنسی اور اس دوے کو
پرہنے لگی

رے ماتی کے کو لہرا تو ہ داروں پٹکائے
ہو تھے رکھے ہیں پٹو کوں تو کہوں چو سے جائے

ایک بنیاں اپنے گھر میں رات کو نیند میں غافل
 پر اسوتا تھا کہ ایک چوہا اُسکے پیٹ پر ہو کر ادھر سے
 اُدھر چلا گیا۔ وہ نیند سے چونک پر ااور لگا چیخ مار
 مار رونے اور یہ کہنے کہ مائے جان گئی مائے جان گئی اُسکے
 رونے کی آواز سنکے سب گھر کے لوگ گھبراے اور
 لگے پوچھنے کہ تجھے کیا دکھ ہے۔ جو اتنا روتا ہی بولا
 اس گھر میں رہ نہیں سکتا۔ کہا کہوں۔ جواب دیا۔
 ایک چوہا میری چھاتی پر ہو کر اسطرف سے اسطرف
 چلا گیا۔ لوگوں نے کہا چلا گیا چلا گیا۔ اُسکے واسطے
 اتنا روتا کہا تھا۔ بولا کسی نے سچ کہا ہی کہ جاتن
 لگے سونسی تن جانے دو جا کہا جانے رے بھائی
 میں اُسکے جانے پر نہیں روتا۔ روتا اس واسطے ہوں

اس پر سے کوئی کو دے تو ہزار رہی دوس *
 یہ سن ایک چوہ نے پوچھا کہ مہاراج - جو
 یاہی تیں کو دے گا وہ ہزار رہی دے دیوگے -
 کہا ہاں * اتنی بات کے سنتے ہی وہ چوہے اپنے
 گھر جا ایک برہیا سؤ برس کی جاں بلب ہو
 رہی تھی اُسے لے آیا - اُسے دیکھ کر راجا نے کہا
 اُسے کبوں لائے ہو - بولا یہی گمشتی پر سوں
 کو دینگی ہزار رہی دے دیو * راجا نے کہا برہیا
 کی شرط نہیں - جواب دیا - مہاراج آپ کوں
 پو رہی باری تیں کہا کام - تمہیں ایک ہتیا لینی
 ہی سؤ لیواؤر سو کوں ہزار رہی دے دیو * اس
 ظرافت و حاضر جوابی سے خوش ہند راجا نے اُسے
 رہی دے دیو دینے وہ لے اپنے گھر گیا

کو آن کھڑے ہوئے اور اُن میں سے ایک
 تھوڑے نے نہتہ سے کہا کہ میاں تو اس سے
 دیر تانہیں اُس کے ہاتھ میں تلواریں ہیں : بولا
 کہ حضرت سلامت پڑ اپنے جی میں کچھ اور نہ
 سمجھے میرے گھر بتوئے میں دوزاریں دھرے
 ہیں - گھر سے زاریں لے چوک میں جا دیر
 زاریں کی تلوار خرید آتے آنے با آئے کودے
 سواری با آریروالا ابھی سرکات دالتا ہوں :
 اس بات کو سن سب تماش بین ہنس پڑے
 اور اُن دونوں کو ملا چلے گئے

نقل ۲۵

راجا جوائی جیشنگہ نے مستہرامین عبد النبی
 خاں کی مسجد کے مینار کی بندھائی دیکھ کر کہا کہ

ہو لا بھائی صاحب - اس میں بھی آم کے آم
 گتھلی کے دام ہوتے ہیں اور کتنا نفع ہو گا -
 اس کے بھائی نے کہا میں کچھ نہیں سمجھا سمجھا
 کے کہو - جو اب دیا مع نفع دام اٹھاتا ہوں اور
 پچتا ہی سو برس بھر اچھی طرح کھاتا ہوں *
 یہ سن وہ چپ کا ہی چلا گیا

انقل ۴۴

عید کے دن دو دھارے بچے ایک ہتھیار بند اور
 دوسرا نہتھا - ملکر کسی امر کے یہاں دھڑلک
 منہورا ساتھ لوائے سمجھنے کو گئے اور جب
 وہاں سے گئے بجائے رجھائے انعام لے پھر
 آئے تب آپس میں بخرا بانٹا کرنے کے وقت
 جھگڑنے لگے * کہنی ایک راہ گیر تھا شاید دیکھنے

اُس نے سبب پوچھا - اُنہوں نے جو راجا کا حکم تھا
سو کہ سنایا : تب اُس نے اتنا راجا کو لکھ
بھیجا :

درد مند دروازے تھارتھے بہیتر ہیں بیتر وا
رسکی بتیاں ہم جانت ہیں وے باندھت ہیں ہوا
اس بات کے پترتھے ہی ہنکر راجا نے سو
رپی دلو ا بھیجے - وہ لے اسیس وے خوشی
سے اپنے گھر گیا

نقل ۳۳

ایک بنیاں ہمیشہ ہند سال بھر اکرتا - کسی
دن اُس کے برے بھائی نے آکے اُس سے کہا
کہ بھیا تجھے اس میں کہا نفع ہوتا ہو گا - کچھ
اور روزگار کہوں نہیں کرتا جو زیادہ فائدہ ہو

بد یار تھیوں کو ہل ہل کر پرہتے دیکھ کسو پندت
سے سوال کیا :

جھکت جھکت بد یار تھی کہا بوڑھے کہا بار
میں تھر پوچھوں سے سکھے یا کو کون بچار

جواب دیا :

آگے سدا گئیہی اپنے بیٹھ کر ار

رتن لین کوں جھکت پیش جھکت دیکھ اپار

نقل ۴۲

کسی دن سوائی چینگہ ایک مکان میں بیٹھ

براہمن کہلاتے تھے اور دربانوں کو یہ حکم تھا کہ

سوائے براہمن کے اندر اور کوئی نہ آنے پاوے

اسمیں ایک بھات دروازے پر گیا اور اُس نے

چاہا کہ بھیت جاؤں پر تو رہی داروں نے بجانے دیا

۱. اور اسنے دوسرا سوئی لا دیا: پھر چہرہ مار دوسرے
 سوئی کو چھوٹا دیکھ۔ بولا کہ یہ میں نہ لوں گا۔ اسی
 کے برابر کا لا دے۔ اسنے کہا یوں تو نہیں پر جو
 تو یہ سوئی سمجھ دے تو میں اسکے برابر کا وہیں سے
 دیکھ۔ لاؤں: مارے لالچ کے اسنے سوئی دیا۔
 وہ لے غوطہ مار بیٹھ رہا۔ ایک پہر کے پیچھے اسنے۔
 گھبرا کے بے چکا راتب اُسنے آکر خفا ہو کر کہا کہ
 تو برا بے وقوف ہی جو سمجھے چکا رہا ہی۔ کہا تیں
 نے یہ کہا و ت نہیں مہنی: جو کچھ خدا کرے
 سو ہو۔ لیٹنا ایک نہ دینا دو: پھر حسن چہرہ مار
 ہراس ہو اپنے گھر گیا
 ۲. نقل
 پنا رس میں ایک چوہے نے کسی مکان پر کتنے ایک

تھی۔ کام پر نے سے ایک ایک کی مدد کرتا :
 ایک روز کسی چریہار نے کو سے کو پکڑا تب
 کچھو سے نے چریہار سے کہا کہ تجھے اس کے لیجانے
 سے بازار میں کیا ملیگا۔ بولا دو پیسے۔ کہا جو تو
 اسے چھوڑ دے تو میں تجھے ایک سو تہی دوں۔ کہا
 اچھا : اس نے غوطہ مار کے سو تہی لا دیا پر اس نے
 کو سے کو نہ چھوڑا۔ تد کچھو سے نے کہا کہ میں نے
 سو تہی تو تجھے لا دیا۔ اب اسے کہوں نہیں چھوڑتا :
 بولا ایک سو تہی اور لا دے تو چھوڑ دوں نہیں تو
 نہیں چھوڑوں گا۔ اس نے کہا اچھا تو اسے چھوڑ دے
 میں لا دیتا ہوں : یہ بولا میں پھر کی بات کا کیسے
 اعتبار کروں۔ کہا اس نے میں جھوٹے نہیں بولتا۔
 اس بات کے سنے ہی اس نے کو سے کو چھوڑ دیا

بخیل - سخی تو اچھے اچھے جوانوں کو برے برے
 درما کر کے نوکر رکھتا اور بخیل چھوٹے چھوٹے
 لوگوں کو کم مہینے پر چاکر رکھتا : ایک روز اُنکے
 باپ نے دن دنوں کو کسی غنیمت سے لرنے کو
 بھیجا - جنگ میں سخی کی جیت ہوئی اور بخیل
 کی ہار : اس بات کے سنتے ہی اُنکے باپ نے
 کسی اپنے مصاحب سے پوچھا کہ اسکا کیا سبب
 جو ایک ہارا اور ایک جیتا - اُس نے جواب دیا
 کہ پیر مرشد - آپ نے یہ مثل نہیں سنی
 جو مارے تلو سنگرام
 تو کیوں خرچیں تازی کو دام

نقل ۴۱

ایک کچھوے اور کوئے سے بری دوستی

خدا کی راہ پر دو ٹنگا: اتنا کہتے ہی بھیر ملی - تد
 وہ لنگری بھیر کا کان پکڑ کسی کو دینے لے چلا -
 اس میں سو نہیں سے ایک اور بہرا آیا - اس
 نے دس سے کہا کہ یہ بھیر تو لے: وہ ہو لا خدا
 کی قسم میں نے اس کی تانگ نہیں تواری - غرض
 یہی کہتے کہتے دونوں قاضی کے یہاں گئے - قاضی
 بھی بہرا تھا اور اپنے گھر میں کسی سے خفا ہو بیٹھا
 تھا - انہیں دور سے آتے دیکھ اُن نے اپنے جی میں
 جانا کہ شاید اُسی کا پیغام لے آتے ہں: یہ
 یہ سمجھ اتنا کہ اپنے گھر بھیر بھاگ گیا کہ اُس
 بد ذات کی بات میں کبھی نہ سنو ٹگا

نقل ۳۹

کسی اُمر کے دو بیٹے تھے - ایک سخی دوسرا

سمجھ سے پوچھتا ہی : * کہا آپ کا خادم ہوں - بولا
 جاتجھ اسکے سمجھنے کی لیاقت نہیں - اس
 نے کہا بس معلوم ہوا کہ آپ علم غیب کی
 کتاب دیکھتے ہیں کہ جس سے بے ملاقات آپ
 نے میری لیاقت دریافت کی : * اس بات کو
 سن وہ شر مندہ ہوا بولا - اخلق کی کتاب
 ہی - تب اس نے ہنسر یہ کہا کہ آپ اسی
 سے ایسے صاحب اخلق ہیں اور اپنی راہ لی

تقل ۳۸

ایک بہر اگدریا جنگل میں اپنی بھیڑیں چراگا
 تھا - قضا کارا سکی ایک بھلی بھیڑ کھوئی گئی -
 تب اس نے ایک لنگری بھیڑ کی طرف دیکھ
 کر کہا کہ جو وہ بھیڑ ملے تو اسے میں کسی کو

جہاں نہ جا کو گن لہی تہاں نہ تا کو تھاؤں
 دوز ہی بیٹھہ کرا کرے دیگمنبر کے گاؤں
 اس کے جواب میں اُستاد نے بھی یہ دوتا کہ
 سنایا

جہاں نہ جا کو گن لہی تہاں نہ دکھ سکھ بات
 ہن میں تہج مکتان کوں پھرت گنج کرات
 نقل ۳۷

کوئی مردِ آدمی کسی طالبِ العلم کی زبانی
 ایک عالم کے علم کی تعریف سنکر مشتاق
 ہو اُس کے گھر ملاقات کو گیا : وہ اپنے دروازے
 پر بیٹھا کتاب مطالعہ کرتا تھا - یہ سلام کراؤں کے
 سونہیں مادیب بیٹھہ بولا حضرت سلامت - یہ
 کونسی کتاب ہے - جواب دیا - تو کون ہی جو

ظرافت پیر بل کو کہا : پیر بل دیکھ "تور میں
 مور جات ہی - سمجھ کے دو نہیں و سی بولی
 میں پیر بل نے بھی جواب دیا - جہاں پناہ تور
 "ہاقت جات ہی مور پتھت جات ہی :
 منگر باد شاہ چپ ہی ہو رہے

نقل ۳۶

ایک کیشور اپنے شاگرد کو ساتھ لے کر
 شہر میں روزگار کے لئے گیا اور وہاں کے عہدہ
 لوگوں سے ملاقات کر کے کئی برس وہیں جگہ
 رہا - پر کچھ اُسے فائدہ نہ ہوا کہ وہاں کے
 لوگ اپنی جہالت سے اس کے گن کو نہ سمجھے
 شب اس کے شاگرد نے یہ دوتا اس کے سونہیں
 پڑھا :

مٹہر ادا دے نئے اُسے پوچھا کہ میاں ان سب
 کے جانوروں کا تو وصف دیکھا اور سنا اب تم
 اپنے جانور کا بیان کرو کہ پہچان کر سکو کہ وہ کون سا ہے *
 ہاتھ باندھ کھڑا ہو بولا پیر مرشد کسی کا
 اُترنا لیا ہے کسی کا لڑنا کسی کا بولنا کسی کا دونا۔
 پر اس کا غرّا ہی لیا ہی اس حاضر جو ابی
 سے خوش ہو دارا شکوہ نے انعام سب کے
 ہاتھ اُس کو بھی دیا

ثقل ۳۵

کسی روز اکبر بادشاہ اور پیر بل ایک باغ
 کے برج پر بیٹھے کہیتوں کا سبزا دیکھ رہے تھے
 اس میں بادشاہ نے ایک موز کو ارہر کے
 کہیت میں جاتے دیکھ پوز بی زبان میں ازراہ

جانور شکاری اترنے لڑنے بولنے والا ہی لیکر
 کل فجر حضور میں حاضر ہوئے۔ اس خوش
 خبری کے سنتے ہی جتنے شہر میں شوقین تھے
 اپنے اپنے پرندوں کو اترائے لڑائے ہلائے دوڑائے
 تیار کر برے تشف سے لے گئے اور کوئی تماش
 بین تماشا دیکھنے کے لالچ سے ایک کوئے کو
 پنجرے میں بند کر کئی ایک محبہ خلاف اسپر
 وال اُنکے پیچھے لئے چلا گیا۔ وہاں سب کے جانور
 کھلے اور دکھلائے گئے۔ ہر کسی نے اپنے جانور
 کی تعریف کی اور انعام پایا۔ جب اسکی
 ثوابت آئی تو یہ اپنے دل میں گہرا یا غرض
 لوگوں نے اُسکے ہاتھ سے پنجرے خلاف اتار
 کو اُٹھرا دے کو دکھایا۔ دیکھتے ہی ہنسر

گھائے سے آدمی روتا ہی - تو جو ہنسی اوار
 روئی اس کا کہا سبب - عرض کی جہاں پہنا
 پھولوں کی سیج پر پھر پھر سوئے کی سزا خدا کے
 ہاں نہو یہاں ہیں ہوئی - اس بات کو تو اسوج
 کے میں ہنسی اوار آپ کو خدا کے یہاں اس
 سیج پر نت سوئے کی تہ جانوں کہا سزا ہو گئی -
 پھر اندیشہ کر کے روئی کہتے ہیں کہ ابراہیم
 ابراہیم اس بات کے مستی ہی بادشاہت چھوڑ
 فقیر کی لے جنگل کو چلا گیا

نقل ۳۴

شاہ جہاں بادشاہ کے شہزادہ دارا شکوہ گو
 پوریاؤں سے بہت شوق تھا - ایک روز فرمایا
 شہر میں منادی پھیر دو کہ جس کے یہاں جو

توں آرام پا کے بیہوش ہو گئی اور پھر لوں کے
 اندر پٹھ بے معلوم ہو گئی - پھر ایک شیخ
 بادشاہ نے بھی اُسی پر آرام فرمایا - گھری
 دو ایک بعد اُس نے جو کروت لی شاہ گھرا
 کر اُٹھ کھڑے ہوئے اور بولے کہ دیکھو اس
 پلنگ میں کیا بلا ہے ؟ ایک کے کہتے دس دوا
 آئے اور انہوں نے باندی کو نکال باہر کیا -
 دیکھ کر حضرت نے فرمایا کہ اس مردار کے
 میزے روہرو سو تا زیاٹے مارو - بات کے
 کہتے ہی لوگوں نے سو کورے گنکر پندرہ
 لکے - اُس نے پچاس ہنس ہنکر اور
 پچاس رو رو کر کھائے ۔ یہ تماشا دیکھ
 بادشاہ نے اُسے پاس بلا کے پوچھا کہ سن تو مار

دیا۔ اسمیں کسی بھلے آدمی نے آکر اُن سے
 کہا کہ اب تمہارے بیٹے نے خانہ چنگی سے ہاتھ
 اُٹھایا اور توبہ کی : انہوں نے اس کی بات
 مان اُسے چہرہ سنگا یا۔ ایک دن وہ باتوں ہیں
 باتوں نہیں کسی پر خفا ہوا تہ اُس کے باپ نے
 کامیاں یہ وہی مثل ہی رسی جلگئی پر بل
 نہ گیا

نقل ۳۳

سستے ہش ابر الہیم ادا ہم کی سیج سوا من
 بھولوں سے سنوارا گیا جاتی تھی۔ ایک روز باندی
 نے سیج تیار کر کے اپنے جی میں بچا رکھا کہ اس
 بھڑنے پر سونے سے کٹا آرام جی کو ہوتا ہو گا
 یہ سوچا دھر اُدھر دیکھ وہ جوں اُس پر لپٹی

سا دھو جن رستا بھلا د اگ نہ لاگے کوئے

نقل ۳۲

کسی تاجر کا لڑکا برّا خانہ جنگ ہوا جب وہ
خانہ جنگی کر کے پکڑا جائے تب اُس کا باپ
رہی دیکر چہرہ لالے ایک روز و سکے باپ
سے کسی اُس کے بھائی نے سمجھا کر کہا کہ جو
متم اسی طرح بیٹے کی مامی پی کے رستہ دانہ
بھر و گے تو اید دن سب دولت کھو بہو کھ
مرو گے : اُس نے پوچھا میں کہا کروں جواب
دیا اب خانہ جنگی کر کے قید پرے تو نہ چہرہ او
پھر آپ ہی سیدھا ہو جائیگا - کہا بہت اچھا :
غرض وہ خانہ جنگی کر قید میں پرّا اور اس
نے نہ چہرہ آیا - پانچ چار برس وہیں رہے

ایک جو گئی دکھائی دیا۔ اُس نے اسے دندوت
 کر کے پوچھا۔ ماتھہ جی آتے ہو کہا اسے اور جاؤ گے
 کہاں؟ جو اب دیا۔ بابا ہنگلاج جو الامکھی ہر دوار
 گر چھوٹ کر کے تو آتا ہوں اور کاشی ہو گنگا
 گوداوری کا میل کر سینت بندھ رہا میں شور
 کو جاؤنگا؟ بیٹے نے کہا سہارا ج ایک بات پوچھوں
 جو خفا نہ ہو۔ ہو لا بابا ایک نہیں دو۔ کہا سہارا ج
 ہم گرہستی ہیں جو دیس دیس پھر رہے تو کچھ
 دوش نہیں آپ فقیر ہو بہتک بہتک کہوں بہرم
 گنوا تے ہو۔ ایک تھوڑا بیٹہ مگر کس لئے اپنے بھگوان
 کا دھباں نہیں کرتے۔ کہا بابا تو نے یہ کہاوت
 نہیں سنی؟
 ہوتا پانی نہ ملا بندھا گندا ہیلے ہوئے

کے ساتھ ہی وے آن حاضر ہوئے۔ دیکھتے ہی
 حقا ہو حضرت نے کہا کہوں نے تم نے ہاتھی کہوں
 چھوڑ دیا۔ اُنہوں نے ہاتھ باندھے۔ عرض کی قبلہ
 عالم۔ مغلہم کو جو ہنر آتا تھا سو برس روز میں
 سب سکھلا دیا۔ ہر ایک تنہو را اُسکے ہاتھ دیا۔
 اُس لئے کہ شہر بادشاہی ہی اس میں جا کر
 کماوے اور کچھ وسمیں سے آپ کھا ہمیں
 رکھلاوے۔ اس لطیفے کے سنتے ہی خوش ہو
 بادشاہ نے اُنکا قصور معاف کیا اور ہاتھی کے
 عوض ایک گانو دیا۔

نقل ۳۱

کوئی بٹیاں بتو ہی بات بھول کے ایک بن میں
 جا نکلا۔ وے ویاں اور تو کوئی نہ نظر آیا پر

گستاخا تھا ہی اور ک طرح کہا تا ہی : عرض
 رات کے وقت سو رہا بچھا بچھا تا ہی کے پاس
 جا بیٹھے اور اُس کا کھانا دیکھ کر نہایت حیران ہو
 فکر مند ہو آپس میں کہنے لگے - کہ بھائی صاحب
 بادشاہ نے یہ ہمارے پیچھے کوئی برسی بلا لگادی -
 نہ اسے پیچ سکیں نہ کسی کو دے سکیں جو یہ
 چند روز یہاں رہا تو اس کے کھانے کے آگے ہمارا گانا
 بجا مناسب خاک میں مل جائیگا : اتنا کہ کچھ دلمیں
 سمجھ دے وہ لک تبورا اُس کے گلے میں دال
 چھوڑ دیا اُن نے شہر میں جادو م کی اور شہریوں نے
 جابادشاہ کے یہاں فریاد : شاہ نے فرمایا دیکھو
 ک کا تا ہی ہی کسی نے آ عرض کی کہ جہاں
 پناہ لا آ کیو رکا - حکم کیا کہ اُنہیں بلواؤ - کہنے

بہت سے لوگ وہاں جمع ہوئے اور ہاتھوں میں
 کہنیا دیکھ کر حیران - کسی کی عقل کچھ کام نہ کرتی
 تھی :۔ ہندوان ایک نے اُن میں سے کہا کہ بھائی
 لال بھگت آوے تو یہ لڑکا بچے - نہیں تو اس کا
 بچنا دشوار :۔ یہ سن کر کوئی اُس کا مالک لال بھگت
 کو بلا ہی لایا اور آتے ہی دونوں نے دیکھ کر فرمایا :۔
 بوجھ لال بھگت اور جو بوجھ کو
 چھان بلیندہ اور کروا سے اوپر کر کے لے

نقل ۳۱

لارکپور ایک دن اکبر بادشاہ کے روپر و خوب
 گماے - شاہ نے ریحہ کرنا تھی دیا یہ لے آئے :۔
 ہر س ایک کے بعد اُن دونوں بھائیوں کے جی
 میں آیا کہ آج ہاتھی کی خوراک چکر دیکھیں کہ

کو دریافت کر پلنگ کے تلے پانیتی لوٹ رہا - پھر
 ایک کے بعد اُمرائے کسی اپنے چاکر سے پوچھا
 کہ اے وہ بلا گئی - اس میں کلا و نت نے جواب
 دیا کہ بلیا لیوں یہ بلا تو قد من لگی ہی بن کھانا
 کھائے کب جات ہی : اس لطیفے کو سمجھ
 خوش ہوا اُس نے اسے اپنے ساتھ کھانا کھلا کچھ
 دے رخصت کیا

نقل ۲۹

کسی گاؤں میں ایک لڑکا چھ دام کی کوری
 لے بہرہونجے کی دوکان پر چیتا لیتے گیا - اُس نے
 چیتا کوری لے تول دیا - اس نے کہنے کو کھینچی
 میں کر دو نوں ماتہ برہا لیتے تو لیا پر ماتہ
 نکال سکا - تبرو نے لگا - اُسکا روٹا سن

اُس دُورے کے ار تھ کو تو سمجھو :

گھٹ گھٹ میں سورت وہی لال جو نہیں وویگ

جیتے بھوتی آر سی کھنڈ کھنڈ مکھ ایک

نقل ۲۸

ایک اُمر ابراخیل تھا کہ کبھی بھوتے ہاتھ سے

کتا بھی اُس نے نہ مارا تھا اور کھانے کھلانے کا تو

کیا ذکر : ایک روز کوئی کلا و نت بھولا بھٹکا

اُسکے پیہاں جا پہنچا اور اُسے برا آدمی جان "نبورا" ملا

خوب گایا اور اُن نے بھی ریحہ کرداد دی - ہارے

اتنے میں بکا ول نے آغرض کی کہ خداوند خاصا تیار

ہاں : بولا کہ سپرے سر میں درد ہی ابھی رہے

ایک نیند اپنکر کھاؤنگا - یہ بہانہ کر منہ دھک سو

رہا اور کلا و نت بھی اُسکے مکر کرنے کے مقصد

گیا۔ جہاں پناہ دیکھئے یہ عورت کس ہے۔ حجابی
 سے ادھر دیکھتی ہی۔ شاہ نے شہزادے کی بد
 طبیعتی دیکھ فرمایا۔ بابا جان باپ بھائی کے روبرو
 حجاب کیا چاہئے؟ یہ سن شہزادہ شرما کر
 چوپ ہو رہا تھا

نقل ۲۷

کسی تیرتھ کے نزدیک ایک مٹہہ میں کتنے ایک
 فقیر زامات نیماوت نانک پتھی داد و پستھی
 سنیا سی بیٹھے آپس میں مت کا بیا د کر رہے تھے۔
 کوئی کسی کی بات نہ مانتا تھا اپنے اپنے پتھے کی
 چڑرائی برائی کرتے تھے۔ نڈان جھگرتے
 جھگرتے تو بچے کھپر پھوٹنے کی نوبت پہنچی۔ اس
 میں ایک ابد ہوت، بولا سا دھڑکبوں لڑھکتے ہوئے

گہا کہوں - جو اب دیا - ایسی شتابی میں
ایک روز میری جان جاتی رہی اور چلا گیا

نقل ۲۶

شاہ جہاں بادشاہ دارا شکوہ شاہزادے
کو بہت چاہتے تھے - ایک روز انباری دارا تھی
پر سو اوارا دارا شکوہ خواصی میں چلے جاتے
تھے - اس میں شاہزادے نے ایک طرف دیکھا
جو کوئی سا ہو کار بھی سولہ سترہ برس کی
جگہ چاند سا مکھڑا کا جل سی لگائے پان
کھائے نکلے - سکھ سے سنگار کئے جوانی کا مد پیئے
دوڑوں ہاتھ کو آ کر کے دوڑوں بازوؤں پر دئے
بے حجاب گھلے بندوں کھری دیکھتی ہی ہو سکی
بے باکی دیکھ شاہزادے نے ریجھ کر باپ سے

مغلّام سو اے افیم او ر کسی نشے سے آشنا
 نہیں : یہ بات سن بہت خوش ہو افیم کسی
 دیا نکال اُن نے آپ کھا اُسے دے کر کہا -
 کہ میاں آج ہمارا جی چاہتا ہی سیٹھے چانول جلدی
 سے پکا دو تو کھا ئیں - بہت خوب کر کے پکانے لگا :
 اسمیں پینک جو لگی تو دو پہر گزر گئی - آقائے
 پکار کے کہا کہ ارے بھائی چانول پکے یا نہیں -
 ہوا کہ خداوند پک چکے ہیں پردم دینا باقی ہی -
 کہا جلدی لاؤ : قصہ کو تہ بہزار خرابی فجر سے
 پکاتے پکاتے شام کو تیار کر لے گیا - دیکھ کر
 آقائے کراشا ہاش کہا جلدی پکا لیا ہی :
 اتنی بات کے سنتے ہی وہ ہاتھ جو آر کر بولا کہ
 قبلہ فدوی سے آپ کسی نو کری نہو سکے گی -

کہا سمجھ کے میرے حکم کو نہ مانا سچ کہو نہیں
 تو بیطرح پیش آؤنگا : وں میں سے ہر کسی
 نے ماتہ باندھ باندھ کر کہا کہ جہاں پناہ خواہ
 مارئے خواہ چھوڑئے غلام کے چیمیں یہ بات آئی
 کہ جہاں ننا نوئیں گھرے دودھ کے ہونگے وٹاں
 ایک گھر اپانی کا کہا معلوم ہو گا : یہ بات
 سب کی زبانی سنکر بادشاہ نے پیر بل سے
 کہا جو کانوں سنتے تھے سو آنکھوں دیکھا کہ
 سو سیا نے ایک ست

نقل ۲۵

ایک شخص برافیمی تھا - اُس کے یہاں کوئی
 خدمت گار نیا نو کر ہوا - اُن نے اُس سے پوچھا
 کہ میاں تو کچھ نشہ تو نہیں پیتا - بولا پیر مرشد

جو سو بیانی نے ایک ست : شاہ نے کہا کہ یہ بہ مثل
 ہی تو مشہور ہی جو سر سر عقل گر گر بد یا :
 پھر بیر بل نے عرض کی کہ جہاں پناہ مزاج میں آوے
 تو اس بات کو آزما لیجئے۔ فرمایا بہت اچھا : اتنی
 بات کے سنتے ہی بیر بل نے شہر میں سے سو عقلمند
 بلا بھیجے اور دوپہر رات کے وقت بادشاہ کے حضور
 انہیں ایک خالی حوض بتا کر کہا۔ حضور کا حکم ہی
 کہ اسی وقت ہر ایک آدمی ایک ایک گہرا ادودہ کا
 بھر کر اس حوض میں لا دالے : حکم بادشاہی کو سنتے
 ہی ہر ایک نے اپنے جی میں یہ بات سمجھ کر کہ جہاں
 تینا نوٹیں گہرے ادودہ کے ہو نگے تہاں میرا ایک
 گہرا پانی کا کہا معلوم ہو گا پانی ہی لا دالا۔ بیر بل نے
 شاہ کو دکھایا شاہ نے اُن سب سے کہا۔ تم نے

تھوڑی ہی - بولے تو نے کیسے جانا - عرض کی
 کہ جہاں پناہ سمجھ پانخانے کی حاجت ہوئی ہی
 اس بات کے سنتے ہی سب بیگمات اور
 سرپلیان کھل کھلا اُٹھیں - تب شاہ نے حقا
 ہو یہ کہ اُسے اُتھو اُتھو دیا کہ اُس شخص نے سچ کہا
 تھا اُس ملک کے لوگ لائق بادشاہوں کی
 مجلس کے نہیں

ثقل ۲۴

ایک دن اکبر بادشاہ نے پیر بل سے کوئی بات کہ
 کے آسکا جواب پوچھا : پیر بل نے وہ جواب
 دیا کہ جو بادشاہ کے دل میں تھہرا تھا - منکر
 شاہ نے کہا کہ یہی بات میرے بھی جیمیں آئی
 ہے : پیر بل بولا کہ پیر مرشد یہ وہی بات ہے

رات پچھلی باقی رہ گئی تھی۔ اُس وقت شاہ
 نے وہ بات یاد کر کے پہلے پچھم والی رند ہی سے
 پوچھا کہ رات کتنی ہو گئی ہے؟ وہ بولی جہاں
 پناہ رات تھوڑی ہی ہے۔ کہا تو نے کس طرح جانا۔
 عرض کی کہ تھکے موتی تھندے لگتے ہیں؟ پھر
 دکھن والی سے پوچھا کہ شب کتنی ہو گئی۔ جواب
 دیا کہ عنقریب ہی کہ فجر ہو۔ فرمایا تو نے کہونکہ
 دریافت کیا۔ بولی پان سیتھا لگتا ہی ہے؟
 بعد اُتر والی سے پوچھا۔ جو رین کس قدر ہو گئی
 کہانیت تھوڑی ہی ہے۔ ارشاد فرمایا تین نے
 کس دھب سے معلوم کیا۔ بولی حضرت سلامت
 چراغ کی جوت مندر ہوئی ہے؟ پچھنے پور بنی سے
 پوچھا کہ اُس کتنی رہی ہو گئی۔ اُتر دیا نہایت

اُسکی پیٹھ پر ہاتھ رکھ چاہے کہ کچھ کہے و وہ ہیں
 اُس نے پھر کراٹھک ایسی دلتی ماری کہ
 پھر بچارا آہ کر بیٹھ گیا اور ہنسکر ہوا کہ کہوں
 ہو جو جگہ مرئی ایسا ہو و سکا لڑکا و یسا ہو ابی
 چاہے - ایتنا کہ چلا آیا

نقل ۲۳

ایک بادشاہ نے کسی سے کہیں یہ بات مٹھی
 تھی کہ پورا رب کے لوگ برے بد لحاظ و بے تمیز
 ہوتے ہیں : اُس بات کے امتحان کرنے کو
 بادشاہ نے چار طرف سے چار رندیاں منگو
 کر لیت کر و اپنی خدمت میں رکھیں : کئی برس
 کے بعد ایک رن بادشاہ محل سرا میں سر
 اشام سے بیٹھے ناچ دیکھتے تھے اور چار گھری

گونئی پوسٹی جنٹل میں بیٹھا پیالے میں پوسٹ
 گھول رہا تھا۔ ایتنا قاف کسی جہاز جھوڑے ایک
 خرگوش جو نکل دوارا تو اس کے دھکے سے
 اس کا پیالا لڑھک پڑا * یہ خفا ہو بولا کہ تجھ
 سے کہا کہیں بھلا تیرے مرتبی ہی سے جا کر کہہ دے *
 اتنا کہ کوئی سو نٹا بغل میں دبا شہر میں
 جاہر ایک چوپاے کو دیکھتا چلا۔ اندان ایک
 گدھینکو جو اس کے رنگ سے مشابہ پایا تو گدھے
 والے سے جا کر کہا کہ تیرے اس جانور کے
 پیٹے میں پوسٹ کا پیالا بھرا ہوا لڑھا دیا *
 اس نے کہا کہ جس کے پیٹے نے لڑھا دیا ہی وہی
 سے جا کے کہو۔ * سن وہ گدھے کے پاس جا

ثقل ۲۱

دو کا پتہ عقل مند لکھ رہے کسی مکان پر
 بیٹھے بحثے تھے۔ ایک کہتا تھا کہ آدمی اُٹم برن
 میں پیدا ہونے سے پنڈت چتر ہوتا ہی اور دوسرا
 کہتا تھا کہ اچھی سنگت سے۔ اُنکا بحثنا دیکھ کسی
 مردے آدمی نے کہا کہ اس بحثے سے تو تمہارا
 قضیہ نہ سٹپکا۔ بہتر ہی کہ اس معاملے میں
 کسی کو منصف مانو۔ یہ بات اُن دونوں کو
 پسند آئی اور سورا اس جی کے پاس جا کر
 ہر ایک نے اپنا دعوا اظہار کیا۔ سوتے ہی سورا
 اس نے اُنکے جواب میں یہ دو کا پتہ
 سوات بوند سیپی مکت کدلی بھیڑ کپور
 گارے کے مکہ بش بھیڑ سنگت سو بھا سورا

دیر ہو لا حساب سن لو - اُس نے کہا ابھی دیتے
 دیر بھی نہیں ہوئی حساب کیا : غرض دونوں
 کے تکرار ہونے لگی اور سو بچا سس آدمی
 گھر آئے : اُن میں سے ایک نے رُپئی والے سے
 کہا کہ میاں کہوں جھگرتا ہی حساب کس لئے
 نہیں سن لیتا : ہار مان اُس نے کہا اچھا کہہ
 وہ ہو لا جس وقت آپ نے غوطہ مارا میں سینہ
 ہانا دوا پ گئے پانچ رُپئی دے تمہارے گھر
 غیر بھینجی اور نکلے تب بھی اور پانچ رُپئی خوشی
 کی خیرات میں روئے : اور پانچ سو میں نے
 اٹھنے گھر بھینجے ہیں و نکا کچھ اندیشہ ہو تو مجھ سے
 تم تک لکھو اور : یہ دیکھنا دل میں کی بات
 سن وہ بچا را ہو لا بھلا صاحب بھر پائے

اڑھائی کوڑس : یہ سن کوئی دوسرا بول اٹھا
 کہ وہ پوستی ہو گا کوئی قاصد ہو گا - پوستی
 نے پیا پوستی تو کوئدے کے اسپار یا اُس پار
 اور جو پیچ میں جگہ پاوے تو وہیں مقام کرے

نقل ۲۰

دو آشنائیل کر سیر کو نکلے اور چلے چلے دیا
 کنارے پر پہنچے تب ایک نے دوسرے سے
 کہا کہ بھائی تم یہاں کھڑے رہو تو میں جلدی سے
 ایک غوطہ لگا لوں - اُس نے کہا بھرت بہتر یہ سن
 وہ بیس روپی اسے سپرد کر کپڑے کنارے
 پر رکھ جو پانی میں بیٹھا توں اُس نے چالاک
 سے وے روپی کسی کے ہاتھ اپنے گھر بھیج
 دئے : اُس نے نکل کپڑے پہن روپی مانگے

ثقل ۱۸

کسی برے آدمی کے پاس ایک خوش
 سخرا آ بیٹھا تھا اور اُنکے یہاں کہیں سے گر آیا
 اُس نے ظرافت سے کہا کہ خداوند میں نے
 عمر بھر میں تین دفعہ گر کھا یا ہی - بولا بیان
 کر - کرا ایک تو چھٹی کے دن جنم گھونٹی میں
 کھایا تھا اور ایک کان چھدایا تھا شب اور ایک
 آج کھاؤنگا : اُن نے کہا جو میں ندوں - بولا
 دؤہی دفعہ کھا یا اسی

ثقل ۱۹

پانچ چار پوستی کسی مکان پر بیٹھے زتل مارتے
 تھے - کہ اُن میں سے ایک کا پیالہ جوں ملکر تیار
 ہوا - بولا پوستی نے پیا پوستی نو دن چلا

بات کہتے ہو

سب سے دیا اٹوپ ہی دیا کرو سب کو

گھر میں دھرا نپا ئے جو کر دیا نہوے

نقل ۱۷

کوئی شخصے ورا اندھا کہیں کو چلا جاتا تھا کہ ایک

اندھے کوئے میں گر پڑا اور لگا پکارنے کہ چلیو

دوڑو لوگوں میں کوئے میں گر پڑا : لوگ

رحم کھا دوڑ کے وٹاں گئے اور کوئے کے من

گھتے پر کھڑے ہو اُس کے نکالنے کا تردد کرنے

لگے : کچھ دیر جو ہوئی تو وہ بہتر سے خفا ہو بولا

کہ جلدی نکالتے ہو تو نکالو نہیں تو میں کدھر ہی

کو چلا جاتا ہوں سمجھے پھر نپا و گے

آگے ہت بیٹھو ۛ نو لا کہوں - کہا اُس نے خالی
 ہی - پتھر اُس نے جواب دیا - کہا تمہارے
 کے سے ہت بیٹھیں گے جیسے سائیس نے بیٹھا دیا ہی
 تیسے بیٹھے چلے جاتے ہیں

نقل ۱۶

ایک بنیاں جو بت لا تا سو انت کا انت غریب
 ہو کہ پیاسوں کو بانت دیتا اور آپ نہنگ
 لا لا ہور ہتا ۛ ایک دن اُس کے برے بھائی
 نے پانچ چار پر دسیوں کو بیٹھائے اُس سے
 کہا کہ بھائی جی ہم مہا جن ہیں - ہمیں پونجی رکھ
 بیو مار کیا چاہئے - اس طرح بیٹھوڑ تھکانے دیا کریں
 تو ہماری مہا جنی کہو نکر رہے ۛ جواب دیا بھائی
 صاحب کہا تم نے یہ دوتا بھی نہیں سنا جو ایسی

آرزو کرتے کرتے ایک بیٹی ہوئی۔ اُن نے نپت
 لار پیار سے اُس کا نام فضیحتی رکھا۔ قضا کا روہ
 دو تین برس کی ہو کر مر گئی۔ اُس کے غم سے وہ
 تین شام صبح نام لے لے رو یا کرے۔ ایک دن سو
 ماے میری فضیحتی ماے میری فضیحتی کر کے رو رہی
 تھی۔ کہ اس میں اُس کا خاوند آیا اور سمجھانے
 لگا کہ سن نیک بخت ہماری تمہاری حیات باقی اور
 بخدا کا فضل چاہئے تو ایک فضیحتی کو کہا رو تھی ہی
 میری فضیحتی ہو رہی تھی
 نقل ۱۵
 ایک کا پتہ کم سو ار گھوڑے پر بیٹھا بازار میں
 چلا جاتا تھا۔ کسی شاہ سواری نے اُسے دیکھ کر
 سے بھی پیچھے ہٹا بیٹھا دیکھ کے کہا کہ بھیا جی

اُتفاقاُ ایک روز یہ ادھر سے جاتے تھے اور
 ادھر سے شکار کئے بادشاہ گھوڑے پر سوار
 چلے آتے تھے : پہ دور سے دیکھتے ہی ایک اونچے
 پر کے درخت پر جا چڑھے اور انہوں نے بھی گھوڑا
 مارا اُسی پیر کے نیچے لاکھرا کیا اور انہیں پہچان
 کر کہا - کہہ دو میں نے جو تم سے کہا تھا کہ میرے
 ملک میں نہ رہنا - جو اب دیا بدلیا لیوں - ہم سب
 ملک میں پھر آئے جہاں دیکھو وہاں آپ ہی کو
 ملک دیکھو یا تیس ہارمان اب آسمان کی راہ
 لٹی ہی : اس لطیفے سے خوش ہو بادشاہ
 نے اُنکی تقصیر معاف کی اور نوکری بحال

تقل ۱۴

کسی کُنہجران کے چالیس برس کی عمر میں بری

بادشاہ اُن سے چہل کرتے : اس سے وہ بھی
 گستاخ ہو رہے تھے : ایک دن بادشاہ نے اُن
 میں سے کسی کو کہا گاؤ - وہ بولا نہیں
 جہاں پناہ پیل - پھر حضرت نے فرمایا ابے کچھ
 بول - جواب دیا بھول پیس رہی - پھر
 شاہ نے کہا کپا حرام زادہ ہی - اُس نے کہا
 حرام زادہ ہو تو کوڑی نہ لوں : اتنی بات
 کے سنتے ہی بادشاہ نے خفا ہو کر اُنہیں کہا کہ
 میرے مُلک میں رہے تو بیطرح پیش آؤنگا
 اور قلعے سے نکلوا دیا : یہ مارے در کے دن
 کو تو دو کوشی چو کوشی شہر کے باہر گانوں میں
 نکل جاتے اور رات کو آتے - اسی بھانتِ شام
 کو آؤتے اور دو گھری کے تر کے چلے جاتے

ہکلا یا : اُس نے اُس کے جواب میں یہ دوا

پرہ سنا یا

کنک کنک تین سو گنی مارکتا اور کھائے

وہ کھائے پورا ات ہی یہ پائے پورا ہے

ثقل ۱۲

مٹھرا کے چوڑے برے تھے باز ہوتے ہیں - ایک درن

کوئی چوڑے بازار سے مارو بیشکن خرید لایا یہ دیکھ کر

اُس کی جوڑو نے پوچھا کہا بھر تا کروں - یہ بولا

موتیں کہا چوک پری - اُس نے جواب دیا

لوگ تمہیں جو یسی کہتے ہیں : یہ سن چوڑے

جواب ہوا

ثقل ۱۳

لازکیور نام و وکلا و نت اکبر کے یہاں تھے - اکثر

پیارا بکرا یاد آیا کہ جب نہ تب اُس کی بھی
 اسی طرح دَارِ بھی بہلتی تھی۔ اِس لئے میں
 روتا ہوں : یہ سُن سب کہل کھلا اُٹھے اور
 واغظِ شرمندہ ہو دم کھا رہا

ثقل ۱۱

کوئی برا دو لٹمند تھا پر اُس کے فرزند نہ تھا۔ اُس
 نے لر کے کسی خاطر بہتیرے تردد کئے اور رپی خرچے
 لیکن نہ ہوا۔ تب اُس نے ہار مان ایک غریب کے
 لر کے کو گود لیا اور اپنے مال اموال کا مالک
 کیا : کتنے ایک دن بعد وہ مر گیا۔ یہ اُس مال کو
 پاتے ہی لگا اندھا دھند لٹانے اور کچال چلنے۔
 اِس کی یہ چال دیکھ کسی نے ایک سے
 پوچھا کہ اِس کا کیا سبب جو یہ دولت پاتے ہی

لیا اور کہا کہوں با با فقیر کو کچھ جواب نہ ملا۔
 اُن میں سے ایک نے کہا سائیں روپیا تو لیا اب کہا
 کہتے ہوئے بولا با با یہ تو منیخ مار کے لیا ہی ابھی فقیر
 کا سوال باقی ہی

نقل ۱۱

ایک واعظ کسی گانو میں کتنے ایک آدمیوں کو
 وعظ کرتا تھا۔ اس میں کوئی گنوار بھی وہاں آ
 بیٹھا اور لگا اُس کا منہ دیکھ دیکھ بیٹھار ہو رونے لگا۔
 اس کو روتا دیکھ سب نے جانا کہ یہ کوئی برا
 مومن دل ہی جو اتنا روتا ہی ہے ایک نے اس سے
 پوچھا کہ بھائی سچ کہہ تو جو اتنا روتا ہی تیرے دل
 میں کہا آیا ہی ہے واعظ کو انگلی سے بتا بولا کہ ان
 میاں کی داری ہی ہلتی دیکھ مجھ اپنا صوا ہوا

ہی جو تو رہا ہے لینگو ۛ ۛ یہ سن وہ شرمندہ
ہو چپ چاپ اُتھ کر چلا گیا

ثقل ۹

کئی ایک امیر زادے کسی جگہ ایک مینخ گار
اُس پر رُپیا رکھ تیر اندازی کرتے تھے اور
شرط یہ تھی کہ جو اس رُپی کو اُترادے
سو لے ۛ اتفاقاً کسی آزاد نے جاوہیں اُن
سے سوال کیا کہ بابا کبھہ مولانا کا سودا
کرو۔ اُن میں سے ایک نے ہنکر کہا شاہ
صاحب - نشانہ مارو اور رُپیا لو ۛ فقیر نے
جھٹ اُسکے ہاتھ سے تیر کمان لے یا معبود کر کے
ایک تیر اتکل پیچو مارا کہ وہ رُپیا اُتر گیا ۛ
وہ بولے واہ واہ - ان نے دُور کر رُپیا تو اُتھا

ثقل^۸

کسی تھا کر دوارے میں کسی ایک عطائی چٹن
 سے پتھے گائے رے تھے اور بہت سے لوگ
 کھڑے تہتے تھے : اس میں ایک دھیتھ پیرا گئی
 آیا اور ان کے ماتھ سے تنبور الے سب کے پیچ
 میں پتھ لگا پیرا ہو گائے - اُس کا کھتر اگ
 تن سب ادا اس ہوئے پر کوئی کچھ نہ بولا
 ندان ایک چوئے کھتر اٹھتا تھا - اُس نے
 کہا بابا جو بس کرو بس کرو بہت گائے - پیرا گئی
 نے کھجلا کے جو اب دیا مہارا ج - میں تو اپنے
 تھا کر کوڑ جھاتا ہوں اور کوئی ریحھا تو کہا اور
 نہ ریحھا تو کہا : چوئے بولا سارے سو کوں تو
 اڑھائے ہی نہ سکیو کہا تھا کر مو ہو سوں کو رہے

نقل ۶

دؤ کلاؤ نٹ د کھن سے کما ئی گئے دلی کو چلے آتے
 تھے کہ راہ میں دؤ آروں نے آئے لیا اور لگے
 ہر چھیاں بھالے اُٹھائے اُٹھائے مار مار دال
 دال پکارنے سے اُس وقت یہ دؤ نوں بھی جھٹ
 گاری سے اُتر چٹ پر تل کے تھو پر جا پٹھے اور
 لگے اُن سے پوچھنے کہ بدیا لوں مار مار دال دال
 ہی کر جانو ہی کی کہو چو پر ہو کھیلے ہو : اُن
 میں سے ایک بولا کہ کہوں - ! نہوں نے کہا کہ
 کہوں جگ ہو مار یو جات ہی : اس لطیف سے
 وے بہت خوش ہوئے اور انہیں نہ لوٹ ہنسکر
 چلے گئے

تو ہر ایک کے گھر سے اُسے بلا ہٹ ہوئی۔ تب
 اُس کے کسی آشنا نے پوچھا کہ کہو دوست۔ آج
 تم اکیلے کیا کرو گے اور کس طرح گھر گھر فاتحہ
 پڑھو گے؟ بولا بھائی مجھے فاتحہ پڑھنے سے کہا کام۔
 مردہ دوزخ جائے یا بہشت مجھے اپنے حلوے
 ماندے سے کام ہی

نقل ۶

کسی نے ایک گھائی سے پوچھا کہ مہاراج۔
 آدمی جگمیں پشہا ہو کر دکھ سے کیونکر چھوٹے
 سو دیا کر مجھ سے کہو۔ تب اُس نے اسکو
 جواب تو نہ دیا پر یہ دوتا پڑھا
 بھگت مان بھگتے بنے گھائی سور کہ دوزے
 گھائی بھگتے گھائی سوں سور کہ بھگتے روے

(۴)

گھوڑا کیا : کرا پٹا اس بات کا کچھ

مضائق نہیں لیکن ہشیار رہنا خوب ہی

نقل ۴

ایک بنیاں کہیں گیا تھا دو تین دن بعد وہاں سے

آیا تو اُس نے اپنے گھر کا دروازہ بند پایا : پکارا

گوارا کھڑ لیو - بہتر سے اُس کی جوڑو نے جواب

دیا کہ کھڑ لوں ہوں بابا - اُس نے سنکر کہا ای

ہ اند کیا بکشی ہی - وہ بولی میری آنکھ ڈر کہم

ہی - کہا آنکھ کی تو سچ ہی مہیا

نقل ۵

پتھانوں کی کسی بستی میں ایک ملا تھا - جو کچھ

فاتحہ درود گا اُن کے کام ہوتا اُس کو ملا لیتے اور

اپنا کام کروا لیتے : اس میں شب برات جو آئی

چپ ہو رہا

ثقل ۳

کوئی را جیوت بہت ا فیم کھاتا تھا۔ ا تفاقا
 اے سفر در پیش ہوا اور کسی منزل
 میں جا کر اُترا۔ وہاں کے لوگوں نے آکر اس سے کہا
 کہ تھا گھر صاحب یہاں چوری بہت ہوتی ہی
 آپ چو کسی کے رہینگے : یہ بات سنکر رات
 تو اس نے جاگ کر کاتی پر یہ بات جھینس
 رکھی کہ چوری بہت ہوتی ہی : فجر ہوتے ہی
 گھوڑے کی پیٹھ لگا۔ ایک شہر کے بیچ چلا
 جاتا تھا کہ ایک ایکسی پینک سے چو نک کر چکا را
 ارے رچھرا ارے رچھرا گھوڑا کہاں۔ وہ بولا
 ہمارا ج۔ گھوڑے پی تو پیٹھے ہی جاتے ہو اور

نہ گئے پایا کہ اُس نے اپنے جوگ سے اُس کا
مطلب دریافت کر کے کہا

دو ما

سکھ دکھ پرثون سنگ ہی مینٹ سکے نہیں کوئے
جیسے چھایا دینہ کی ٹیاری نیک نہوے
یہ معقول جواب پاوہ بچارا صبر کر اپنے گھر آیا :

ثقل ۲

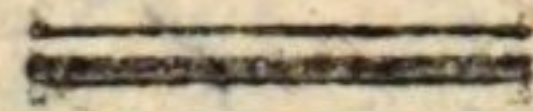
ایک اندھا پیراگی کاشی کے بیچ منکر نکا گھاٹ
پر بیٹھا گھن میں دہی پیرے کھا رہا تھا کہ دیکھ کر
کسی پندت نے پوچھا سورواس جی یہ
کیا کرتے ہو۔ بولا صراہا ج دہی پیرے کھاتا ہوں
کہا گھن میں۔ جواب دیا۔ بابا میرے گرو کی دیا
سے سدا ہی گھن ہی : یہ حسن پندت ہنکر



بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ



ثقل ۱



ایک سا ہو گا ریو ترون کا رجا زمانے کے شیخ پاچ میں
آپنی دولت سب کہو بیٹھا اور لگا نپٹ دکھ
پانے اور فاقے کرا کے کہیچنے بندان اُس کے جی
میں یہ خیال گذرا کہ جو میں کسی مہا پرس یا سیدہ
کے پاس جاؤں تو یہ دکھ متے کہو نکہ سنا ہی
سادہ کے درشن سے پیادہ جاتی ہی اتنا بھار
چلا چلا ایک جو گئی کے پاس گیا یہ اُسے کچھ

साहूकान	ساہوکار	A great merchant.
पोतडोंका	پوتہ دہکا	Happiness or prosper-
वज्जा	وہ جا	ity' from one's birth
महापुरुष	مہا پُرش	A religious man.
साध	سا دہ	Adj. 1, virtuous.
		2. n. s. m. a religious man.
दनन	درسن	Seeing, interview.
व्याध	ویا دہ	Pain, anguish, dis-
		ease.
प्रतिदिन	پرت دن	Every day, always
देह	دیہ	The body.
छाया	چہا یا	Shad e, shadow.
न्यानी	نیاری	Fem. of نیار apart,
separate, just.		
सन्नकुल	معقول	Reasonable, proper,

STORY 2d.

बैनागी

بَیْناگی

1, adj Austere, re-

cuse. 2, A Fugueer who practises austerities

काशी

کاشی

The name of Bena-

[res.]

गहन

گہن

An eclipse.

दही

دہی

Coagulated milk.

पेड़ा

پیرا

A kind of round

sweetmeat made with curds.

सुनदास †

سور داس

A blind man.

गुरु

گرو

A spiritual guide,

pastor, teacher.

दया

دیا

Pity, mercy.

† It means literally the *slave of a Hero*; it was the name of a celebrated singer who was blind, and hence applied to every blind man.

सदा

سدا

Always.

३

۳

STORY 3d.

अफीम

افيم

Corrup. of

افیون

or Suns.

अफेण N.S. F. opium.

दनपेशहोना

درپیش ہونا

To happen, to be-

come necessary.

मनज़िल

منزل

A stage, halting

[place

उत्तरना

اُترنا

To come down, to

alight, to stop at a place.

ठाकुर

ٹھاکر

1. An idol. 2. A lord,

[master.

यौकसी

چؤ کسی

Attention, diligence

घोड़ेकी पीठ

گھوڑے کی

To mount on horse-

लगना

پیٹھ لگانا

back.

पीनक

پینک

Intoxication

and

drowsiness from opium.

झांकना

چو نکنا

To start, to start
[from sleep

रामयेना

رام چیرا

(properly रामयेना

the slave of God,) A name generally given
to slaves by the Hindoos.

४

STORY 4th.

बनियां

بنيان

A shopkeeper, grain
[merchant.

किवाड़ा

کوارا

A valve, folding door.

नांड

راند

A widow.

बकना

بکنا

To prate, to chatter.

मैया

میا

Mother.

५

STORY 5th.

पठान

پٹان

A tribe of the Moo-
[sulmans.

मुहना

ملا A school - master, a

[doctor.

फातिहा

فاتحة

Prayers offered up in

the name of the saints, &c.

दनूद

درود

Benediction, bless-

[ing.

शबिबनात

شب برات

The 14th day of the month Shuzban, on wh^{ic}h the Moosulmans make the offerings in the names of deceased relations.

बुलाहट

بلا ہٹ

Veb. N. F. calling.

आशना

آشنا

Acquaintance, friend.

देनख

دوزخ

Hell.

बहिश्त

بهشت

Heaven.

हलुवा

حلوا

A kind of sweet-

meat made of flour, ghee, and sugar.

मांडा

ماندا

A kind of bread.

6 STORY 6th. 6

ज्ञानी گمانی Intelligent, judicious. [ous.]

जग जग The world.

दोहा دوہا A couplet.

भुगतमान भुगत مان Fit to enjoy.

भुगतना भुगतنا To suffer, to receive the punishment of a crime.

मूर्ख मूर्ख Ignorant.

7 STORY 7th.

कलावंत कला و نٹ A kind of singers,

कमाई करना कमाई کرنا To earn.

दौड़े दؤڑے Highwaymen who rob on horse-back.

बनछी بر چھی A spear, a javelin.

भाला

بہالا A long spear.

हट

جیت

Quickly.

घट

چٹ

पत्तल

پر تل

The baggage carried

on a bullock or Tattoo— a pack

horse.

बलैया लैं

بلیا لوں

The 1st person Sing.

of बलैया लैं To draw the hands over the head of another, in token of taking all their misfortunes upon himself.

मौपड़

چو پر

The name of a

game played with long dice.

जुग

جگ

A pair. Two men

standing on the same square in the game of

Choupur.

लतीफः

لطیف

Jest, joke, witti-

[cism.

८

^ STORY 8 h

ठाकुनद्वाना تھا کر دوارا A temple of Idols.

चताई

اتائی

One who sings &

dances gratis.

यैन

چین

Ease, rest.

छीठ

دھیتھ

Impudent, forward.

तंबूना

تنبورا

A sort of fiddle.

बेसुना होना

بیسر ا ہونا

To be out of time,

बटनाग

کہتر اگ

Singing discordant-

[ly.

उदास

اُداس

Dejected, sorrow-

[ful,

यौवे

چوہے

A Bramin. The de-

scendants of those acquainted with the four vedus.

बिजलाना

کھجلا نا

To get angry.

निहाना

رچھانا

To please.

साना

سارا

Wife's brother, bro-

ther in law.

कूट

Ignorant.

९

STORY 9th.

अमीननादः

Son of a nobleman.

मेघ

A pin, peg. [fix.

गाड़ना

To drive, to set, to

तीनचंदानी

तिरान्दाजी

To shoot arrows.

कनना

करना

शर्त

1st, Condition. 2d.

[wager.

उड़ाना

To cause to fly.

इत्तिफाकन

By chance, accor-

[dingly.

आनाद

A kind of Fuqeer.

मौला

Lord, master.

सौदा

Trade, traffic.

निशानः

انسان

A but, mark.

यामन्नबूद्

يا معبود

O God!

[ture.

चटकलपय्य

اتكل پيو

At random, at a ven-

सांई

سائيس

1. Lord, master. 2.

[Fuqeer.

१०

STORY 10th.

बाइज

واعظ

A preacher, pastor.

गंवाज

گنوار

An inhabitant of a

[village.

मोमदिल

مؤم دل

Soft hearted.

डाढी

دارهي

Beard,

जिलजिलाना

اکھل گھلانا

To laugh heartily.

दम्यानहना

دم کھارہنا

To remain silent.

११

STORY 11th.

फननंद

فرزند

A son.

तनहुद ترود Anxious consideration.

हानमानना هارماننا To give up (in des-
[pair.]

गादलेना گودلینا To adopt, or take a
[son by choice.

अंधाधुंध اندھا دھند } To expend extrava-
लुटाना لٹानا } gantly, carelessly.

कुयाल کچال Bad practice, mis-
[behaviour

बुकलाना بکلا نا To act, or talk fool-
[ishly.]

कनक کنک 1. Gold 2. The
plant *Dahura*, which if eaten, intoxicates.

सैगुनी सौ گنی Hundred fold.

मादिकता मादکتا Intoxication.

अधिकाना اذیکانا To increase, or aug-

बैराना بوراننا To be mad. [ment

१२

12

STORY. 12th.

ठट्टे बाल

تھٹے باز

A jester, joker.

मानू बैंगन

مارو بیگن

The egg plant of ma-

[roo (large.)

कहा

کیا

What ? for

भजता

بھرتا

1. A husband, 2.

Vegetables boiled or fried, and broken & pressed

[in the hand.

मेरे

موتیں

For (मुहसे) from

[me, by me.

यूकपड़ना

چوک پرنا

To blunder, err, mis-

[take.

जोयसी

جوے سی

The wit of the sto-

rey consists in a pun on the word جوے an as-

trologer, or as tronomer. جوے a wife and the par-

ticle of similitude, in the manner of a wife.

१३ STORY 13th.

युहलकनना चपल करना To jest, to look mer-

गुस्ताख़ गस्ताख़ Impudent &c. [ry.

गात्रो गा 1. The imp. of गा

to sing, &c. 2. A cow.

बैल बिल A bull, an ox.

भांति भातति Manner, mode, kind,

नित नित Always. [sort.

तड़का तरका Morning, dawn of

[day]

बड़ बर The Bengal fig tree.

घोड़ा मानना गोरामारना (Met.) to gallop off.

पेड़ पीर Tree.

वे वी A voc. particle used

[contemptuously.

बलैयालेउ बलियालीउ A mode of salutation

expressive of perfect devotion.

हातमानना ہاتھ مارنا To give up. [vice.]

बहाल بحال Reinstated (as in ser-

१४ STORY 14th.

कुंजड़न کنجران The fem. of کنجران a

woman who sells vegetables;

निपट نپت Excessive, very.

लाड़ لار Lovingness, the play-
[fulness of a child.

प्यार پیار Ditto.

फज़ीहती فضیحتی Disgrace, infam-
[y,

कज़ाक़ान قضا کار By chance.

हयात حیات Life,

फ़ज़ल فضل Virtue, excellence.

बहुतेनी بہتیر ی Much.

15 STORY 15th.

१५

कायथ

کا پتھ Name of a tribe of
[Hindoos.

शाहसवार

شاہسوار A good Horseman.

मैंडकी

مینگ کی A frog ; also the rump
[of a horse

भैयाजी

بھیا جی A brother, generally

applied to a cast of the Hindoos employed as
[writers.

आसन

آسن A seat.

१६

16 STORY 6th.

बहुना

بھنا Answers to the idio-

matic expression, to make, to profit, as

اج میں I made nothing today.
آج میں نے کچھ نہیں بنایا

निहंगलाइला

نہنگ لالا A careless person.

पड़ोसी

پڑوسی A neighbour.

पूंजी

پونجی Stock, treasure.

बौहान

پيوان Profession, calling,
[transaction,

बेठान ठिकाने

بے تھور تھکانے Inconsiderately.

महाजनी

مہاجنی The business of a

muhajun. 2. Interest.

दिया

دیا 1. He gave. 2. A lamp.

अनूप

انوپ Incomparable.

धरना

دھرنا To place.

जौ

جو If.

कन

کەر The hand.

१७

STORY 17th.

गुस्सः वन

غصہ وں Adj. passionate.

अंधा कुचा

اندھا کوا A dry well.

मन घटा

من گہٹا The circle round a

well.

१८

18 STORY 18th.

पुशमस्यना خوش مسخره A pleasant jester.

गुड़

کر Treacle, molasses,

कनाफत

ظرافت Wit, elegance, jocular

[larity.

छठी

چشمی Sixth ; a religious ce-

remony performed on the sixth day after child

[birth.

जनमघूटी

جنم گھوٹی A medicine given to

[new-born infants.

कानछिदाना

کان چھدانا To cause to pierce,

[or perforate the ear.

१९

19 STORY 19th.

पोखी

پوختی One who intoxi-

cates himself with the infusion of poppy.

बटलमानना زتل مارنا To chatter, to talk
[foolishly.

कासिद् قاصد An hurkaru, messen-
[ger.

२०

20 STORY 20th.

सैत्र سیر Travelling, amuse-

गेतः غوط Diving. [ment.

पैठना یتونا To enter.

हानमानना هارماننا To give up a dis-
[pute when helpless.

जैनात خیرات Alms.

तमसुक تمسک A note of hand,
[a bond

धांधलपना داندل پنا Subterfuge, wran-
[gling, trick.

भरपाना بهر پانا To receive the full
amount; it is said to express disappointment, as
I am paid. میں نے بهر پایا

२१

21 STORY 21st.

कायथ کایث A tribe.
लियापड़ा لکھا پڑھا Learned.
बहसूना بحثنا To dispute, argue.
उत्तम اتم Adj. Excellent.
बन برن One of the four
tribes among Hindoos.
यतुन چتر Wise, intelligent.
संगत سنگت Companionship
कजियःमिटना قضیه مینا To make up a dis-
[pute.
मुन्नामलः معامله Business, affair.
मुनसिफमानना منصف ماننا Agreeing to justice

or determination of a judge or arbitrator.

दञ्जवा

دعوا

Claim, pretension,

[plaint.

इज्जतकटना

اظہار کرنا

To explain, make e-

[vident, express.

खातबूंद

سوات بوئد

A drop which falls

while the moon is in the Mansion Swatee, if in-

[to shell, pearls are formed.

शीपी

شیپی

A shell.

मुक्त

مکت

A pearl.

कदली

کدلی

A plaintain.

भयौ

بہو

The same as ۱

कपूर

کیور

Frankincense.

कात्रा

کارا

A black snake.

मुज

مکھ

The face.

विष

بکھ

Poison.

[on.

सोभा

سوہا

Ornament, decorati-

हून

سور Blind.

२२

२२- STORY 22d.

पोस्त

پوست The infusion of pop-
[py heads.

घोलनहना

گھول رہنا To continue mixing
[or dilating liquors.

हाडहूड

جھاڑ جھوڑ Jungle, bramble.

खनगोश

خرگوش A hare.

धक्का

धक्का A shove, a push.

लुढ़कपड़ना

لڑھک پرنا To roll, to slip.

मुनबी

مربی A guardian, protec-
[tor, patron.

कूंडी

کوندی An instrument or

vessel in which snuff, bhung, &c are ground.

सोटा

سوٹا The same as

the dim. of سوٹ a club, mace, pestle.

बगल

The arm-pit.

चौपाया

Any four-footed animal.

सुशाबह

Like, resembling.

दुसती

The kick of a four-footed animal.

२३

२३

STORY 23d.

बदलिहाज

Disrespect, met.

[shameless.

बेतमीन

Want of sense, or

[discretion.

इम्तिहान

Examination, trial.

ननबियत

تربیت

To cause to educate

करवाना

کروانا

or instruct.

महलसना

محل سرا

A place appropriated

for women, a seraglio.

सन्निशाम

سَـرِ شام

The commence-
ment of the evening.

नथ

نَـثَـ

An ornament in the
(nose of a woman.

अनक़रीब

عَنقَرِیْب

Near.

सीठालगना

سیتھا لگنا

To be insipid, or
(tasteless.

त्रैन

رَیْن

Night.

इनशाद

اِنْشَاد

To say.

फ़रमाना

فَرْمَانَا

ढब

دَہَب

Manner, way,

मंदहोना

مَند ہونا

To become lessened
(or abated,

पुत्रबनी

پُتر بنی

A woman of the

Eastern part of the country.

निस

نِـس

Night.

ऊतर

اُتَر

Answer,

पायछानेकी
हाजत
गमात

پا ئیٹھا نیکی
حاجت
یکمات

Vide Horne Tooke's
catalogus cacatus.!

Women of rank,

(ladies, queens,

सहेलियां

سہیلیاں

Female companions,

(hand-maids,

पिलपिला

کھل کھلا

To burst out in

उठना

اُٹھنا

laughter.

२४

२४

STORY 24th.

सौसियाने
एकमत

سو سیانے
ایک مت

A hundred wise
men will be of one

(opinion, a prov. and a very poor one.

सिनसिनचक्र

سرسر عقل

A prov. in opposition

to the above meaning, many men of many minds.

गुनगुनबिद्या

گر گر بدیا

May be understood

by the following verse of Pope.

" One science only will one genius fit,
So vast is art, so narrow human wit !"

आन्मालेना	آزما لینا	To try, to essay.
हैज	حوض	A fountain or
निन्यानवे	ننّا نوے	Ninety-nine. [bath.]
वेतनह पेशाना	نیطرح پیشہ آنا	Idiom. To treat ill.
जवाह	خواہ	Either, whether,
from	خواستین	to wish.

अफीमी	افیمی	An eater of opium, [a drunkard,
नशःपीना	نشہ پینا	To drink to tipple.
डिबिया	دبیا	A little box.
मीठेयांवल	میٹھ چانول	Sweet rice.
आका	آقا	A master.
दमदेना	دم دینا	Idiomat. when meat or rice is nearly boiled, and the fire is lessen-

ed under the pot, a small quantity of charcoal
is put on the cover and the meat left to sim-
mer, or *دم دینا*, 'or as tea in a pot, to draw.

किबल: *قبه* Has various mean-
ings, it here means O father !

फिदवी *فدوی* Devoted, servant.

अंबानीदान *انباری دار* An elephant with
the *Ambaree* or canopy.

प्यवासी *خو اسی* The place where
one sits behind a great man upon an elephant

मुयडा *مکھڑا* The face.

काजल *کاجل* Collyrium.

मिस्सी *مسی* A powder with
which they tinge the teeth, a black colour.

नयसिण *نک سی* From top to toe

lit. from the nail of the toe, to the lock of the hair on the crown of the head.

सिंगा न करना *سنگا کرنا* To adorn.

मद *مد* Wine, spirit.

किवाड़ *کوار* A folding door.

बानू *بازو* The fold of a door.

बेहिजाब *بہ حجاب* Exposed, without [purda.

पुलेबंद *کھلے بند* In dish abille, naked.

बेबाकी *بہیا کی* Fearlessness.

बदतीनती *بد طینتی* Viciousness.

तीरथ *تیرتھ* Pilgrimage.

मठ *مٹھ* A temple. [fuqueers.

नामावत *ناماوت* System of a tribe of

नीमावत *نیماوت* The system of the

	followers of Neemanund, a Faqueer.
नानकपंथी	نانک پنٿی The followers of Nanuk, a faqueer.
दादूपंथी	داؤو پنٿی The religion of Da- doo a Faqueer
सन्यासी	سنیاسی Another tribe who pray to Muhadevu.
मत	مٺ System, &c.
बिवाद	بیاد Quarrel.
पंथ	پنٿه System, way.
मौड़ाई	چؤرائی Extensive, boasting.
बड़ाई	برائی Greatness,
निदान	نڊان At length,
तुंबा	تونبا A hollowed gourd in which beggars carry their water.
प्यम्पत्र	کھپر An earthen cup used by Jogees.

नौबत पहुँचना नौबत पहुँचना To happen, to arrive,

अबधूत अबधूत A tribe of Faqueers who have no wordly cares and think only of God.

अर्थ अर्थ Meaning,

घट्टा घट्टा The body, a water pot.

मूर्त मूर्त A statue, an idol,

बिबेक बिबेक Discretion,

आरसी आरसी A mirror, looking glass,

पण्ड पण्ड A bit.

२८ २८ STORY 28th.

बजील बजील A miser,

हूँहाथसे हूँहाथसे } Not to strike a dog
कुत्ता न मारना } with the hand which

has touched food; to express excessive avarice,

भूलाभटका هو لا بهتكا Missing the road,

दाददेना وا دا دينا To praise,

बाने باره At length, one time

बकाबल بكاول Head cook,

प्यासा खासा Food,

बहाना بھانا Trick, deceit,

मकसद مقصد Wish, intent,

पांयती پانتي The foot of the bed,

लोटरहना لوت رہنا To lie sleepless,

बला بلا Evil, misfortune,

बिन بھिन Without,

२९

29 STORY 29th.

छदाम छदाम A species of coin,
four of which make a pisa.

भडभूजा بهر بهو'جا A man who par-

मवेना

چینا

ches grain

Parched grain, eaten

[by the natives]

पंभा

کھنبا

A pillar.

घपमो

کھچی

An armfull.

लाल बृहकड

لال بچہ کمر

The king of Go-

[tham, or king of the fools,

दुशवार

دشوار

Difficult.

खान

چھان

Chupper, thatch.

बलैंडा

بلینڈا

A ridge pole of a

[house.

STORY 31st

३०

STORY 30th,

पुत्राक

خوراک

Food.

रानिव

راتب

Daily allowance of

food (particularly to animals).

मूछा

موندھا

A footstool.

बला

Evil, misfortune, calamity.

ढोलक

A little drum.

धूम

Tumult, bustle.

शहरी

An inhabitant of a city.

किबलएआलम

Father, king.

कसूर

Fault, defect, omission.

इवज

Instead.

३१

STORY 31st.

बटोही

A traveller.

बन

Wood, forest.

दंडवत

Obeisance from

a staff or stick & manner, to fall down [like a stick.

नाथ ماتھ A master, husband,

हिंगलाज ہنگ لاج A Temple of Devec.

ज्वालामुखी جوالا مکھی A Volcano.

हनिद्वार ہر دوار A leify on the banks

of Gunga, from ہر god. دوار a door and lit, the

[door of God, or God's gate.

कुनक्षेत्र کرچھتر The place where the

battle of the Pandva and Kuruvu was fought

[between the Sutledge & Kurnal.

गंगागोदावरी گنگا گوداوری A place.

मेला میلا A fair.

सेतबंध سیت بندہ } The place where

नामेश्वर نامیشور } Ram built a bridge

and on which was placed the image of Muha-

deo; the name of Muhadeo.

गृहस्ती گرہستی A farmer, a peasant.

दोष دو ش Blame, a crime, fault,

भटकना	بهنگنا	To go about foolishly.
भ्रमगंवाना	بهرم گنوانا	To lose character.
कहावत	کهاوت	A proverb, saying.
निरमला	نر ملا	Pure, clear, (as water.)
गंधीला	گندھیلا	Stinking, offensive.
साधूजन	سادهو جن	A good man.
त्रमना	ترمنا	To wander, travel.
दागलगना	داغ لگنا	To receive a bad name.

ताजिर्	تاجر	A merchant.
घानेजंग	خانه جنگ	A breeder of dis- [turbances (vul. a <i>kicker up</i> of rows.
घानेजंगी	خانه جنگی	Civil war, bickering.
मामीपीना	مامی پینا	To shew partiality.
डांडभरना	داند بهرنا	To fine, punish.
सोधाहोना	سیدھا ہونا	To become upright.

हाथ उठाना

تھمنا To refrain.

तौबः करना

توبہ کرنا To promise to sin

[no more.]

बल

بل A coil, twist.

३३

۳۳

STORY

33

सेज

سیج

A bed.

संवारना

سوارنا

To adorn, arrange.

बांदी

بانڈی

A female dam.

करवट लेना

کروت لینا

To turn in bed.

मृगदात्र

مردار

A term of reproach,

a dead body.

ताज़ियानः

تازیانه

A whip, a scourge.

कोड़ा

کودرا

Ditto.

बेदनेग

پیدریغ

Pitiless.

तमाशा

تماشا

A shew, spectacle.

३४

STORY, 34

शैक

شوق

Inclination.

मनादीफेनना मनादीफेनना

To proclaim.

शैकीन

شوقین

Desirous, lascivious.

तकलुफ

تکلف

Ceremony, extra-

[vagance,

लालय

لا لچ

Greediness.

पिंजना

پنجرا

A cage.

गिलाफ

غلاف

The cover of any

[thing.

वस्फ

وصف

Quality.

गर्ना

غرا

Impudence.

हाजिनजवाबी

حاضر جوابی

Ready at reply, wise.

इनन्नाम

انعام

Present, gift.

३५

STORY 35.

बुज

A Bastion.

येत

A field,

सबजः

Freshness, greenness,

मेन

A peacock,

चनहन

A sort of grain,

जनाफत

Wit, humour, beau-

[ty.

तेन

Grain, and also

(thine) तीरा

मेन

A peacock, and

[also मेन my.

फाटतजात

पहात जात

From पहात to be

है

torn, split.

पैठतजात

पैठत जात

Entering.

है

है

३६ STORY 36

कवीश्वर क़िषोर The prince of poets.

जिह्वालत ज़वालत Ignorance.

गुन ग़न Honor, art, &c.

ताकौ ताक़ा for तसका

ठांव ठाव Place,

दीगंबर दीग़नर Naked

मुक्ता मुक्ता A pearl.

पहनत पहनत Swimming

गुंज गुंज A flower (the seed.

[of)

कितात क़रात Name of a race of
[mountaineers.

३७ STORY 37.

तालिबुलइल्म طالب العلم A learner, a student.

आलिम عالم A learned man

मुश्ताक़ होना مُشْتَقٍ هُوَ To be desirous, &c.

मुतालअक़ना مُطَالَعَةٌ کرنا To contemplate,
[consider, read.

मुअदबवैठना مُؤَدَّبٌ يَتَهَنَّا To sit in a respect-
[ful manner.

आदिम خادم A servant.

लियाक़त لياقة Fitness.

इल्मिगैब علم غیب The knowledge
of past, present and future events.

अयलक़ اخلاق Disposition, the good
[properties of mankind.

साहिब صاحب } A man of good dis-
अयलक़ اخلاق } position.

३८ ۳۸ STORY 38.

बहना بُرّا Deaf.

गड़िया گر ریا A shepherd.

भेड़ بھیر Sheep.

सैंहीं سو نہیں Face to face, oppo-
[site.]

टांग تنگ The foot.

पैगाम پیغام A message.

३९ STORY 39.

सजी سخی A liberal man.

बजील بخیل A miser.

दरमाहः در ماہ Monthly pay.

महीना مہینا Ditto.

गनीम غنیم An enemy, a plun-
[derer.]

जीत جیت Victory.

हार ہار Defeat.

मुसाहिब مصاحب Companion.

संग्राम جنگِ اَم Battle, war.
 तान्डी تازی Arabian (Horse.)

۴۰ STORY 40.

कछुआ کچھوآ A Tortoise, turtle.

कौवा کوا A crow.

रेक रेकी ایک ایک کی Assisting each other
 मदद करता مدد کرنا mutually.

मिडीमान چریहार A fowler.

मेती موتی A pearl.

निनास निरास Hopeless,

۴१ STORY 41.

विद्यार्थी بدیارتھی A learner.

हुकत हुकत جھکت جھکت Bowing, bowing.

कहा क्या What?

बूढ़ा بوڑھا An old man.

बान	بار	A child.
तेहि	توہ	To you.
हेसये	ہے	O friend !
याकौ	یا کو	for اس
कौन	کون	Of this,
बिमान	بچار	What ?
		Consideration, reflection.
समद	سہ	The sea.
अगम्य	اگمپ	Bottomless, unferda-
		ble.
कनान	کرار	The side, shore.
गतन	رتن	Pearls.
हुकत	جھکت	Bending down.
हिहकत	جھجھکت	Starting.
अपान	اپार	Shoreless.

४२

STORY

42

भाट

بھات

Name of a tribe

(Poets, Bards)

डिवलीदान

دینو تریدار

Porter.

ठाढे

تھارھ

Standing.

वेदुआ

پیدوا

A reader of the

Beds.

रस

رِس

(Rhet) a word ex-

pressive of the passions, which a composition is

calculated to excite. Taste.

बतियां

بتیان

Words.

जानत

جانت

Knowing.

बांधत

باندھت

Binding.

हुवा

ہوا

Air.

बसीस

اسیس

Blessing.

४३

STORY

भंडसाल

بند سال

The grain which is

preserved for a year or more for sale and monopoly.

चामकेचाम

آم کے آم گتھلی

or. proverb, 2. 11, 79.

गुठलीकेदाम

آم کے دام

४४

STORY

ठाड़ी

دھاری

A musician, singer.

हथियानबंद

ہتھیار بند

Armed.

निहत्था

ہتھا

Unarmed.

मुजना

مجرنا

Obedience, respect;

with the verb. *kurna*, to visit.

बयना

بخرا

A share, portion.

बांटा

بانتا

Share, portion.

राहगीन

راہ گیر

A traveller.

ठठाल

تھٹھول

A jester.

बटुआ

بتوآ

A small bag, a purse.

मौक

چوک

A market, square of

[a City

बाड़िया

باریا

The Knife grinder,

mentioned in the Antijacobin !!

मसूनीबाड़

مسواری بار

To sharpen.

यिनवाना

چروانا

४५

STORY 45.

मसजिद

مسجد

A Temple, place of

[prostration.

मीनार

مینار

A turret, obelisk

[lit. place of light.

जांबखव

جان بلب

At death's door. lit.

the life on the lips.

गुमटी	گمٹھی	A Tower, bastion.
बानी	باری	A young girl.
हत्या	ہتیا	Blood.
मेकै	موکوی	For <i>moojhko</i> , to me.

४६ STORY 46.

झांकपडना	چونک پرنا	To start, &c.
घीय	چینخ	A scream, screech.
घिराना	گھرانا	To be surrounded,
जातन	جائن	For <i>jiske</i> ,
सेईतन	سوئی تن	That body,
तन	تن	Body,
दूजा	دو جا	Another, for <i>doosra</i> .

४७ STORY 47th,

अतनानी	گھترانی	The wife of a- <i>khutree</i> .
--------	---------	------------------------------------

युस्तयालाक چست چالاگ Sagacious, active,
 बसंत ऋतु بهشت رت The spring season,
 बहनेली بهنيلی An adopted sister,
 मनलगन من لگن Agreeable &c.
 मुंहबोली مينه بوللی An intimate sister
 (or friend,)

कोना کونا New, unhandled (ap-
 plied to earthen vessels,)

कुल्हड़ा کله دره An earthen vessel to
 drink out of,

होठ هوت The lip,

वे و A vocative particle
 expressive of contempt,

माटी ماتي Earth.

कुल्हना کوله نا A small vessel to
 drink out of.

डारुन دارون From darna, to

पटकाना The spring To dash on the
ground.

लात A kick,
सही From سہی to sup-
port, endure,

मूँकी A blow with the
fists,

कुदान A pole-axe,
बंगान Embers, sparks re-
maining in the ashes.

४८ STORY 47th,

गुमाश्तः An agent, factor,

चौकड़ Ready money, cash,

डाका An attack of rob-
bers,

सङ्भिङ्के

From रना and रना

to meet as two armies,

डकैत

A robber,

मुनीम

A master,

दुशाला

A shawl,

धन

Wealth.

४९

STORY, 49

आमदचोतफ्त آمد و رفت Coming & going,

नटण्टी

Artifice, waggish-
ness, shrewdness.

टालमटाल

To evade, prevari-
cate.

कतना

करना

सनिमजलिस

Assembly.

भंडानी

A treasurer.

५०

50

STORY

50.

तिजातपेश: تجارت پیشہ Following the trade
of merchants.

आशिकतन

عاشق تن A lover.

आहकटना

آه کرنا To sigh.

जहान

جهان The world.

कमाना

کمانا To earn, to save.

बेसलीकः

بے سلیقہ Unknowing, not
dextrous.

गंवाना

دن گنوانا To trifle
to spend the day in trifling.

५१

51

STORY

51.

गोंगोना

گو نگیرا A self-interested
person

नित

نیت Always.

दमबाजी	و صبا ز می	Deceit.
सुनना	سرنه	To conclude.
बीसना	بیسرا	Forgotten.
छाछ	چھا چھ	Buttermilk.
अहीन	اھیر	Herdsman.

५२	62	STORY	52.
शमत्र	شمع	A candle.	
पत्रवानः	پروانه	A moth.	
किनायः	کنایہ	An allusion, meta- phor.	
दई	دئی	God.	
अनयाहत	انچاہت	Undesired.	
कौ	کو	Genitive sign, of.	
संग	سنگ	Along with.	
दीपक	دیپک	A lamp.	
भावे	بھانویں	Intention.	

पतंग	پتنگ	A moth.
निसंक	نسنگ	Fearless.
मोड़ना	موڑنا	To twist.
पाछे	پاچھے	Behind.

५३ STORY 53.

भेष	بیشک	Form, or appearance.
कंगाल	کنگال	A poor man.
गौघ	گوکھ	Portico.
बिहूना	بسورنا	To weep without noise.
यक्री	چکی	A mill.
खिड़की	کھڑکی	A window.
डाँढैमान	دارہیں مار	To weep with noise.
माननेना	मार रونا	
शौहन	شوہر	A husband.
बिह्लाना	بلا نا	To weep with grief.

लीलीपीली } To be angry.
 चापकटना } آنکہ کرنا

समंदर The sea. سمندر

बनज Trade. بنج

नेह Affection. نہ

निहालकटना To enrich. نہال کرنا

۵۴ STORY. 54.

नटपटी Rascallity, roguish-
 ness. نٹکھٹی

ज्यायः Testicle. حایہ

घड़ा A water pot. گھڑا

बनामदहोना To come forth. برآمد ہونا

उललपड़ना To upset. اُلل پرنا

कियाँहो Had done, for کیا تھا

५५

66 STORY, 55.

तमसपुन

تسخر

Joking.

कोल्हू

کولہو

A mortar.

तुक

تک

Rhyme.

बोहनि

بوجھن

Loads.

५६

67 STORY, 56.

बीघा

بیگا

A measure of land.

कृतः

قطعہ

A space.

फुलवानी

پھلوارمی

A flower-garden.

इजाना

اجارا

A farm,

हुदातुदीकरना

To threaten mutually.

हाथापाई

ہاتھ پائی
کرنا

To beat mutually.

करना

बीयबियाव

بیچ بچاؤ

Arbitration.

माजरा	ماجرأ	Circumstance.
रूत	سوت	Cotton thread.
कपास	کپاس	Raw cotton.
कोली	کولی	A weaver.
लठालठी	لٹھا لٹھی	Mutual beating.

बहसना	بھشنا	To dispute, or argue.
मनुष	منکھ	Man.
गुन	گن	Virtue.
धन	دھन	Wealth.
कवीश्वर	کبیشور	Prince of poets.
सालिस	ثالت	An arbitrator, (3d).
मानना	ماننا	To agree to.
मुकद्दमः	مقدم	Affair.
धर्म	دھर्म	Faith.
सेनठा	سورتھا	A certain metre.

न	اتھیں	From.
गनुचै	گرواؤ	Dignified.
हेत	ہوت	Is.
संपत्	سنت	Wealth.
सहाय	سہاے	Assistance.
पून्चै	پو نیو	14th day of the moon.
मंद	چندر	The moon.
उदोत	أدوت	Splendor.
दुतिया	دوتیا	2d Lunar day, also, 2d day of the moon's decrease.
सत्रवत्र	سرو	Equal.

५८ 6^ STORY 58.

सुत्रवीत्र	سوریر	Buhadur.
कायत्र	کایر	Coward.
सिफात	صفات	Qualities. [in-law,
सुसनाल	سراں	House of the father.

गलाज्वालके	गला के	To talk aloud.
बोलना	बोलना	
बित्रियां	ब्रियां	Time.
गालियांगाना	गालियां गाना	To sing indecent songs at marriages.
ससुर	ससुर	Father-in-law.
बित्रादनी	ब्रिदनी	Family connections.
लोग	लोग	People.
कोठा	कोठा	A small room.
निधडक	निधडक	Fearless.
भूत	भूत	A spectre.
पलीत	पलीत	A ghost.

भभूत	भभूत	Ashes.
धूनी	धूनी	A fire lighted by a fakeer,

- सेली سلی A fakeer's necklace.
- सींगी سینگی A horn.
- मुद्रा مدرّا An Ear-ring worn by
jogees.
- बाघंबन باغمبر A garment of tyger
skin.
- नंगधडंगा ننگ وهرنگا Naked.
- आसनमानना آسن مارنا To sit.
- मगन مگن Pleased.
- भजनकरना بهجن کرنا To call God to me-
mory.
- जोगी جوگی A certain cast of
devotees.
- जूआयेलना جو آکھینا To play at dice.
- सुवांगबनाना سو انگ بنانا To disguise or imi-
tate.

काफिलः

قافله A caravan of travellers.

गातकना नारत करना To plunder.

ताकपनबैठना ताक पर बैठना To expect, or lie in wait.

नाथजी

اے ناٹھ جی Oh nath ! (Lord.)

आदेस

آدیس A salutation of the jogees.

बहकाना

بھکانا To lead astray, to deceive.

पीछानछोड़ना پیچھانہ چھوڑना To follow up.

६०

५० STORY 60.

मुआमलः

معامله Business.

धौल

دھول A blow on the head.

धक्का

دھکا A push,

धर्मावतान

دھرماءاتان A respectful saluta-

tion, personification of faith,

न्याव

نیاو Justice, decision.

समायात्र

سماچار Information.

दृथीनाथ

پر تھی ناتھ Lord of the world,

दंडवत्

دندوت Prostration.

मूढ़ी

مؤذی An oppressor.

भेद

بهید A secret.

सामर्थ्य

سامرتھ Ability, power.

दमसाधना

دم مارنا To speak or meddle with.

गागी

راگی A singer,

बागी

باگی A horseman.

पात्रज्यो

پارکھی A discriminator,

नात्री

ناری A pulse feeler,

गुरु

گور A preceptor,

उपजना

آپجنا To be born.

अंगसुभाव

انگ سہاؤ Natural disposition.

६१

५१ STORY, 61.

दञ्जवत

دعوت Invitation,

दस्तनखवान

دستر خوان Table cloth,

मोदी

مؤدی A shop-keeper,

अनब

چرب Fat.

दूकान

دوکان A shop,

बनफ

برف Ice,

आबिलूलाल

آب زلال Pure water,

नियोड

نیوآ A squeeze, or filter,

मुशबह

مشبه A simile,

मुशबहविहि

مشبه به That from which
the simile is drawn,

अन्नला

اعلى Greater,

६२

५२ STORY, 62.

बनात

ہرات Marriage train,

हाडे फिरना ہمارے ٹھکانے To go to the ne-
cessary,

देन लेन دین لین Barter,

रोजनामہ روزنامہ Day book,

व्यता कता Waste book,

बही भी Ledger,

देना पाना دینا पाना Traffic, profit and
loss,

हाड हार A bone,

याम चाम Skin, leather,

ऊत के ऊत ओत के ओत A term of abuse used
by bunneahs,

महाने मारने Mine,

हंकार हुंकार To make a noise
through the nose,

घुनकना गहर कना To look at angrily,
to frown,

ठीक

ठीक Exact,

६३

STORY, 63.

नाई

नाई A barber.

किसान

किसान A husbandman.

गन्ने

गन्ने Sugar canes,

फांदी

पहान्दी A sheaf of 100

sugar canes.

सूसना

سوسنا To suck.

ठोकना

ठोकना To beat.

नामनाम

نام نام Sahib salaam.

गांडा

گاندہ Sugar cane.

हाथ डालना

ہاتھ ڈالنا To meddle with, to

put ones finger in the pic.

डुतियाना

ڈٹيانا To bang with a

slipper.

उजाड़ना

اُجارتنا To destroy.

सूद Interest of money.

धौलियाना دھوليانا To bang with the hand,

जुगफूटना جگ پھوٹنا A term in chess and also signifying a difference between friends.

नर्दमानीर्गई نردماری گئی A die, a term in chess—the game is lost.

पेशहेना پیش ہونا To be advanced.

सिलहप्याना سيلہ خانہ Arsenal.

दलना دلना To grind coarsely,

पिसना پسنا To grind fine.

दल دل Army,

तुलना تالنا To draw up in array,

मानूबजना مار و بجانا To sound a kettle-drum,

भड़केना

بھڑکنا

To start,

हैं

ہوں

I. am

गिरनुहैं

گرت ہوں

I am falling,

दुपट्टाकिताना

دوپٹا پھرانا

To wave a flag of

truce,

छाजना

چھا جانا

To fit, or become,

ठेंगा बाजना

ٹھینکا با جانا

To spoil.

६५

STORY, 65.

कुनबा

کنبا

Tribe,

धन

دھن

Wealth.

लहना

لہنا

To get.

६६

STORY, 66,

मातमपुत्रसी

ماتم پوتری

Condolence,

बेनबा

بے بنوا

Without any thing

साधो

سادی

A virtuous man.

या

یا

This, same as is

اس

संसार

سَنَسَار

World.

बटाऊ

بٹا او

A traveller.

काकौ

کا کو

Whose, the same as

کس کا

मनावना

منا و نون

To appease.

सोग

سوگ

Grief.

नंक

ننگ

Poor man.

सिंहासन

سنگھاسن

A throne.

६७

STORY 67.

गुसाईं

گوسا ئیں

A fuqeer.

बनारस

بنارس

A city.

नूयड

نوکھر

A sort of devotee.

बलज

الکھ

Form of salutation.

लजना

لکھنا

To behold.

हमान

ہمار

Mine.

भजना

بجنا

To call to mind.

नीय

نیچ

Base, low.

ला जवाब

لا جواب

Answerless.

६८

۶۸

STORY, 68.

कमयेन

کسیچور

A skulker.

कोहिल

کاهل

Lazy.

नकलीदी

تقلید می

False, pretended.

पुजलाहट

کھجلاہٹ

Itching.

लोभ

لو بہ

Avarice, desire.

घिसा

گھسا

Rubbing, scratching.

६९

۶۹

STORY, 69.

कड़ोड़पती

کروڑ پتی

A man with a crore,
or Neemoo mullick.

बकावल

بکا ول

Head coek. [waste.

लूटालूट

لوٹا لوٹ

Excessive plunder or

बंद से दरगाह । بندہ درگاہ I.

To call to mind.

तुलना

तुलना

Base, low.

७०

STORY 70.

Answerless.

बांका

बांका A bragging beau.

आंख फाड़ फाड़ } To look with all
देखना } ones eyes.

प्याजा

प्याजा Name of a sweet-

meat, and also imp. of k, hana,

थाल

थाल A large plate.

मिह्नतान:

मिह्नतान: Hire.

धमकाना

धमकाना To cow, or threaten.

डांडना

डांडना To gripe, or punish.

७१

STORY 71.

सेला

सेला A disciple.

तीर्थ

तीर्थ A place of pilgrim-

mage.

Excessive plunder or

भाव	Price.	मल्लो
मलोदो	A kind of food.	मल्लो
यत्रमा	A ditto.	यत्रमा
यात्रा	Departure.	यात्रा
सूली	An impating stake or gallows.	सूली
स्वर्ग	Paradise.	स्वर्ग
जोगकमाना	To perform a vow.	जोगकमाना
मनोत्रय	Intention.	मनोत्रय
बहसावहसी	Disputation.	बहसावहसी
नामदुहई	An oath of the hindoos.	नामदुहई

७२	STORY, 72.	७२
ऊपनली	Uppermost.	ऊपनली
मैचट	Door frame.	मैचट
बांयना	To read.	बांयना

हिम्मत

Price Intention.

मर्दां

Plural of mard (murderer)

मदद

Assistance.

सुदा

God.

बोत्रिया

A mat.

अनवीधे

Unpierced.

दुलहन

Bride.

गोदभरना

To fill the lap of the bride, (a ceremony at hindoo marriages.)

बधना

A water drinking

vessel.

साहिबकमाल

A saint.

भंग

Modesty, shame.

मरतबः

Rank.

अबला

Dignified, greater.

उलीयना

To throw up water.

कोने

New. کوزے

पोटली

A small bundle. پوٹلی

होली

A bag. होली

भैना

Voc of a sister. بہن

दांतेमें

To be astonished. दांतों में

उंगली देना

To be astonished. अंगुली दिना

७३

STORY, 73.

गवैया

A singer. गवैया

गुरुदेव

Preceptor. गुरुदेव

हलक

Glittering. हलक

धूप

Sunshine. धूप

कादिन

Name of God. कादिन

नादिन

Ditto. नादिन

रूप

Form. रूप

A kind of bread.

A seat of bishnars.

STORY. 74.

दलाल A Broker.

दिनधौले Day light.

कौड़ीपाना To subsist upon.

ग्रैधनी Head of each tribe.

बांट Weight.

कांटा Scales.

निकतो Ditto.

रती A weight used by jewellers, also fate, destiny.

पानदेना To favor or exalt,
(by giving paun.)

STORY, 75.

पूरी A kind of bread.

कान्हकुडा A seat of brahman.

मन्त्रन	تعن	Reproach.
प्रमान	پرمان	Proof, guidance.
आहियतु	چاہیت	It is necessary,
मार्ग	مارگ	A road,

७६

STORY 76,

ज्वारी	جوارى	A gamester,
शुहदा	مشهدا	A prodigal,
काबू	قابو	Opportunity,
घिसकाना	کھسکانا	To draw back,
लुकंदरा	لقندرا	A rake,
अंधी	اندهى	A blind woman,
पीसना	پیسنا	To grind,
पापी	پاپی	A sinner,
अकारण	اکارتہ	Useless,

७७

STORY 77,

सदनदनवानः صدر دروازه Outward gate,

घंटालियां گھنٹا لیاں Small bells,

गुंथवाना گنٹھوانا To string,

खेन چور End of a thing,

सक्का سقا Water carrier,

पप्पाल पकवाल A bullock water bag,

मश्क مشک A mans, ditto.

७८

STORY 78.

नदबदल رد بدل A dispute,

पुछवादेना پچھوا دینا To cause enquiry,

७९

STORY 79,

दुमिता دو چتا Of two minds,

फूलना

پھولना To be pleased,

फिरना

فیرنا For walks,

moves,

काठ

کاٹہ A Pr. of stocks,

पाय

پا The foot,

८०

STORY 80,

कनता

कर्ता A performer, god,

कनता

कर्ता Ditto ditto,

छत्रधने

چتر دھنے A compound, signify-

ing making a king by exalting the chatta over

his head,

नीता

نیتا Empty,

हुलकाना

ہولکانا To overturn.

८१

STORY 81,

मल

مل Dung, also a proper

name & a hero,

वेग نیک A lord, also dung,

८२ STORY, 82,

उलहना الہنا A complaint,

यास یاس Hopelessness,

हियेकाअंधा ہیہکا اندھا A fool,

मलकाहीना مست کا ہینا A fool,

गांठकापूना گانٹھ کا پورا A rich man,

झांदना چھانڈنا To tether,

नदोला نڈولا An earthen vessel,

बहकाना بھکانا To mislead,

८३ STORY, 83,

पृथ्वी پرتھوی } To travel round the
प्रदक्षना پر دکھانا } world,

कित کیت Whether.

या This,
पत्रालब्ध परा लब्ध Destiny.

८४ STORY, 84.

डोंगमात्रना To boast.

तिल A small grain.

गबनू A youth.

ग्रंपतहोना To flee.

८५ STORY, 85.

गिलौत्री A pawn made ready
for eating.

पीली Ditto. ditto.

भैंडी Bad.

दीदेफाड़ना To look with at-
tention.

देखेसैके What do you see?

धत्रीसैं	دھری سیش	Are placed or kept.
अनाड़ी	اناری	An ignorant person.
बागहवाट	بارہ بات	Gone to the doys,

८६

STORY 86.

अनवनाव	ان پناو	Disagreement.
बधिक	بدھک	A huntsman-
बध्वा	بدھیو	Killed.
मृग	مرگ	A deer.
बान	بان	An arrow.
ते	तिस	With.
रुधनौ	زدهو	Blood.
दियौ	دیو	Gave.
अति	ات	Much, many.
हित	هت	Affection.
अनहित	ان هت	Enemy.
होतहैं	هوت هیش	It is.

दुःखदिन درمدين An evil day,
 पाय پاي Finding, or receiving.

८७ ८७ STORY 87.

दरपन درپن A mirror,

८८ ८८ STORY 88.

बिसनपद بسن پد A hymen to god.

८९ ८९ STORY 89.

कवि कब A poet,

राजसभा राज सभा A kings court,

मौनगहना मौन गहना To remain silent,

साह साह Innocent person,

९० ९० STORY 90,

जूती मटकाते } जोती चटकाते } To come on foot,
 आना } आना }

जलेब	جلیب Equipage,
लदलेना	لر لیتنا To load, to mount,
डुत्रियालेना	ڈڑیا لیتنا To lead in hand,

९१

STORY, 91,

पत्रशहर	پر شہر A foreign city,
आरुत	آرہت Sale by commission,
तिजागत	تجارت Trade,
टक्कनका	تکڑکا Equality,
साम्हनाकनना	سامھنا کرنا To compare,
कजाकान	قضا کار By chance,
मुआमलः	معاملہ Business,
बिलटना	بلتना To become bad,
दिवालानिकलना	دوالانکلا To be a bankrupt,
दैन	دین Debt,
महाजन	مہاجن A merchant,
महफिल	مہفل An assembly,

संपत्त	سمنپت	Wealth,
चदन	دین	Debt,
धना	کھنا	Much,
बैत्री	بئتری	An enemy.
बास	باس	Habitation,
नूयडा	روکھرا	A small tree,
बिनास	بئاس	Destruction,
सारु	سار	A merchant,
आखीपूंजी	آؤ چھی پو ٹجی	Having small pos- sessions,
जसमेंपाय	خسمن کھاے	Ruining masters, a Proverb,

६२

STORY. 92

उड़ानापुड़ाना	اُڑانا پُڑانا	To throw away,
बुर्ग	برگ	Ancestors,
पैसे	پسے	Cash,

हवेली	خویلی	A house,
तोडा	توڑا	A bag of 1000 Rs.
तवा. जुन्न	تواضع	Invitation,
ऐब	عیب	Vice, blemish,
बेकदर	بیقدر	Valueless,
तबाह होना	تباہ ہونا	To be ruined,
तल्लिगवां	تخت رواں	A litter,
हार्यो हाथ	ہاتھوں ہاتھ	With speed,
आदाब बजाना	آداب بجانا	To pay respect,
नीमपुदा	نیم خدا	A King.
महलसरा	محل سرا	The seraglio,
ज्यासजवास	خاص خواص	A royal female ser- vant,

आंजलना	آنکھ کھلنا	To awake,
जसेटना	کھسوتنا	To tear the hair,
बोटी	بوتی	A morsel of flesh,

६३ STORY 93

टालमटाल ताल मताल Fraud, deceit,

६४ STORY 94

कंगाल A poor man,

छलवाई حلوائی A confectioner,

पुंयः خوانچه A small tray,

मुंहामुंह منبر Full to the brim,

दीसतानहीं دیستانہیں Unable to see,

घनजाना گهر جانا To be reduced to po-

verty.

६५ STORY 95

मध्यभाग مدیہ بھاگ Center,

सेल سیل A spear,

९६ STORY 96

घोला A pill of opium,

धुस Chaff,

कड़वी A stubble of a sort of grain

तांता In a string,

भिड़ना To strike against,

९७ STORY 97

पदानथ Valuables,

सुघड़नन A wise, or virtuous man,

दिसावनां Climates.

९८ STORY 98

ढंढेनिया A Drummer,

ठंडीना A Drum, دَوْدَنَدُونَا

९९

99 STORY 99

जिजाब

مُضَاب Dying the hair,

हुर्नी

مُجْهَرِي A wrinkle,

कलप

مُكَلَب Dying the hair.

१००

100 STORY 100

अदावत

عَدَاوَت Enmity.

भौयाल

بُهُونِيَال An Earthquake.

भावित

بَهِاوَت Contemplating.

देउगौ

دِينُو'गुओ I will give.

दृष्ट

دَرْشَت The World,

इच्छा

اِچْछा Desire,

द्वै

دَوِي Two,

ग्रहन

گَرهَن An eclipse,

جُगत

عنوان

Address,

جنگل جانا

جنگل جانا

To perform a neces-

sary act,

پیمان

پرمان

Proof,



सन १८६७

राजा बीर विक्रमाजीत के बीर

और अश्वत्थ फूल अश्वत्थ फूलार्ड मिंटो

गवर्नर जनरल बहादुर के राज में और

प्रदावन्दिनि अमृत कपतान जान उलियम टेलर

साहिब और लिपटन अबनाहाम लाकट

साहिब के हुकम से श्रीलक्ष्मीजी लाल कवि

ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीय आगने

वाले ने एक सौ नव नवनि नेप्पु में

बनाय जमन कन छपवाई

कालेज के नौ सिष्य साहिबों

के पढ़ने को

०३२१ नम

नमि कि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि नमि नमि नमि नमि

नमि नमि नमि

Franz Steckeler
Buchbinderei
Höchstädt / Do.

2

La
New
hind
et

Lallūlāla, 1763-1825

Letaifi hindi, or the new Cyclopaedia Hindoostanica of wit containing a choice collection of humorous stories, in the persian and nagree characters, interspersed with Appropriate Proverbs, Anti-billions, Jests, Brilliant Bon Mots, and Rallying, Repartees, in the Reketu & Brij Bhasha Dialects , To which is added a vocabulary of the principal words, in

Calcutta 1810

A.or. 2810

urn:nbn:de:bvb:12-bsb10250397-9